॥ श्री शान्तिनाथाय नमः ॥

सोलह

श्री शान्तिनाथ विधान

रचयिता

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

कृति	:	सोलह श्री शान्तिनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम
प्रसंग	:	पावन वर्षायोग 2022
आवृत्ति	:	1100
लागत मूल्य	:	55/-
प्राप्ति स्थान	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना सम्पर्क–9425128817 सिद्धक्षेत्र पवाजी जिला ललितपुर 8299785226
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

स्व. श्री ताराचंद जी जैन (बाबूजी)
पूर्व अध्यक्ष कुण्डलपुर की स्मृति में
श्रीमती शीला बाई जैन
इ. श्री सुधीश (पप्पू कोयला वाले) श्रीमती आभा
जैन की विवाह (२२ मई)की २९वीं वर्षगाँठ पर
इ. आभास–श्रीमती साक्षी, आयुष जैन (C.A.)
आभा इंटर प्राइजेज कटनी (म.प्र.)

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

हर कार्य में चाहे पारमार्थिक हो या सांसारिक सबसे पहले शान्तिकर्म के रूप में श्री शान्तिनाथ विधान करने की परम्परा है उसके करने पर ही मन में कार्य के प्रति एक शान्ति की अनुभूति होती है और सारे कार्य शान्ति के साथ पूर्ण होते हैं।

जब भी सोलह दिवसीय शुक्लपक्ष का अवसर आता है सहसा मन में सोलह दिवसीय श्री शान्तिनाथ विधान करने का भाव आ ही जाता है। ऐसे में रोजाना एक-एक विधान करके भक्ति करने के लिए **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** के द्वारा रचित सोलह प्रकार के श्री शान्तिनाथ विधानों का संकलन करके **''श्री सोलह शान्तिनाथ विधान''** नामक कृति तैयार की है जो कि भक्तों को मन-वचन-काय रूप सांसारिक शान्ति के साथ आत्मशान्ति दिलाने में सहायक होगी।

इस कृति में जिन लोगों ने जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा. ब्र. संजय, मुरैना-

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पाव पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँएकोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

नित्य नियम पूजन प्रारम्भ

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप॥५॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥८॥
तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किए, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥२०॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय ॥२२॥

मंगलपाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥२३॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव॥२४॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय॥२५॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म॥२६॥
या विधि मंगल करन तें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥२७॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू
लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं
पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥२॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु , प्रथमं मंगलं मतः॥३॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलम्॥४॥
अर्हं-मित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥५॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनकल्याणक महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिन इष्ट(नाथ) महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिननाम महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी विरचित तत्त्वार्थसूत्र एवं सकल जिनागमेभ्यो अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भक्तामर स्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे मुनिराज महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा-प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥१॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।

स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥२॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥३॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥४॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य यमेक येव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥५॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीशम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः॥
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः॥
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः॥
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः॥
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।

श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः॥
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः॥

(इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय शुद्ध बोधाः।
दिव्यावधिज्ञान बल प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१॥
कोष्ठस्थ धान्योप-ममेक बीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥२॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥३॥
प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धाः दशसर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग निमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥४॥
जंघानल श्रेणी फलांबु तंतु, प्रसून बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽगण स्वैर विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥५॥
अणिम्नि दक्षा कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो वपु र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥
सकाम रूपित्व वशित्व मैश्यं, प्राकाम्य मन्तर्द्धि मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर परा क्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥८॥
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषाः दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतो ऽप्य मृतं स्रवंतः।
अक्षीण संवास महान साश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजेंएकरें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाकेएकर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।

जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचेएकरें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ कोएकरें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रीआदिनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चाएकरें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (मालती)

जब-जब शान्ति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शान्ति विधान रचाए, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारण-ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, मुनिसुव्रत उद्धार करो॥

ॐ ह्रः मुनि श्रीसुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सिद्धभक्ति (प्राकृत गाथा)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बन्धोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडायरा सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्य...।-४

(जोगीरासा)

जिनशासन की परम्परा में, चौबीसी की धारा।
धर्मध्वजा को फहराती हैं, देती धर्म सहारा॥
वृषभनाथ से महावीर तक, चौबीसों हम पूजें।
फिर भी शान्तिनाथ स्वामी के, जय-जयकारे गूँजें॥ ओम्
हर प्राणी सुखशान्ति तलाशें, दुख से हैं घबराए।
सारी दुनियाँ घूम चुके पर, कहीं शान्ति ना पाए॥
शान्तिनाथ के सुनके अतिशय, हम भी बने पुजारी।
हे! करुणाकर करुणा करदो, दे दो मोक्ष सवारी॥ओम्
दुनियाँ के उपसर्ग शान्त, हों भय संकट ना आएँ।
रोग-शोक दुख वियोग न हों, ऋद्धि-सिद्धि सब पाएँ॥
विश्वशान्ति की करें भावना, अपने कर्म नशाएँ।
'विद्या' के 'सुव्रत' को स्वामी, मंगल शान्ति दिलाएँ॥ओम्
तेरी शान्ति मेरी शान्ति, सबकी शान्ति होवे।
शान्ति शान्ति होए जगत में, घर-घर शान्ति होवे॥
शान्ति शान्ति होए हृदय में, धार्मिक शान्ति होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, आतम शान्ति होवे॥ओम्
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्

===

श्री शान्तिनाथ विधान

जय बोलिए

शान्ति के दाता,
शान्ति के प्रदाता,
शान्ति के विधाता,
शान्ति के विख्याता,
शान्ति के जिनालय,
शान्ति के समुन्दर,
शान्ति के सिद्धालय,
शान्ति के परमहंस,
शान्ति के सुखालय,
परमपूज्य

श्री शान्तिनाथ भगवान की जय

श्री शान्तिनाथ पूजन-१

स्थापना (शंभु)

हे! शान्ति प्रदाता शान्तिप्रभु, चैतन्य शान्ति के अधिवासी।
हो जीव मात्र के इष्ट तुम्हीं हम, विश्व शान्ति के अभिलाषी।
सुख शान्ति शीघ्र तुम सम पाएँ, सो शान्तिप्रभु को पूज रहे।
प्रभु हृदय वेदिका पर तिष्ठो, भक्तों के नमोऽस्तु गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक सर्वोपद्रव शान्तिकारक त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

है जन्म सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नव यौवन में।
है मरण दुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ इस जीवन में॥
दुख मातम रोग अशान्ति हरो, जल जैसी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय जलं...।

है भव भोगों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग माया में।
रिश्तों-नातों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ इस काया में।
धन पद गृह युद्ध अशान्ति हरो, चन्दन सी शान्ति करो आहा
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय चन्दनं...।

है स्वर्ग सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ सिंहासन में।
चौरासी लाख योनियों में, है शान्ति कहाँ भव भटकन में।
जग भागमभाग अशान्ति हरो, अक्षत सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय अक्षतान् ...।

है घर गृहस्थी में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ सुर कन्या में।
है स्त्री सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ विष कन्या में॥
स्त्री पुरुषों की अशान्ति हरो, पुष्पों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ रां रीं रूं रौं रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय पुष्पाणि...।

है भूख प्यास में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ विष अमृत में।
छप्पन भोगों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ रस व्यंजन में॥
रस भोजन भोग अशान्ति हरो, नैवेद्य सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय नैवेद्यं...।

है अंधकार में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ उजयारों में।
बिजली बल्बों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नभ तारों में॥
दैनिक जीवन की अशान्ति हरो, दीपक सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय दीपं...।

है दौड़ धूप में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ कर्मों में।
है राग-द्वेष में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नो-कर्मों में॥
परिषह उपसर्ग अशान्ति हरो, धूपों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय धूपं...।

खोने-पाने में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ घर भरने में।
निंदा ईर्ष्या में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ कुछ करने में॥
भय वैर विरोध अशान्ति हरो, फल जैसी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय फलं...।

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।

[अगले पेज पर पंचकल्याणक के अर्घ्य चढ़ाकर पूजन करें]

श्री शान्तिनाथ पूजन-२

स्थापना (दोहा)

शान्तिप्रभु के पद-कमल, भक्त हृदय के प्राण।
द्रव्य भाव से भक्ति कर, हम तो करें प्रणाम॥

(मालती या लोलतरंग जैसा)

जब-जब याद तुम्हारी आई, तब-तब मन्दिर को हम दौड़े।
जब-जब मन्दिर को हम दौड़े, तब-तब दर्शन कर, कर जोड़े॥
जब-जब दर्शन कर, कर जोड़े, तब-तब पूजन पाठ रचाई।
जब-जब पूजन-पाठ रचाई, तब-तब याद विधान की आई॥
जब-जब याद विधान की आई, तब-तब शान्ति विधान रचाए।
जब-जब शान्ति विधान रचाए, तब-तब संकट दुख घबराए॥
जब-जब संकट दुख घबराए, तब-तब निज की शान्ति पाई।
जब-जब निज की शान्ति पाई, तब-तब याद तुम्हारी आई॥
शान्तिप्रभु हमको मिले, जिनकी हमें तलाश।
आओ! आओ! मन वसो, करिये नहीं उदास॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक सर्वोपद्रव शान्तिकारक त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

जब-जब शान्ति प्रभु को भूले, तब-तब मिथ्या फलते फूले।
जब-जब मिथ्या फलते फूले, तब-तब जन्म मरण हम झेले॥
जैसे ही शान्ति को याद किया तो, निर्मल आतम सी झलकी है।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में धारा दी जल की है॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय जलं...।

जब-जब शान्ति का नाम लिया ना, तब-तब खूब उपद्रव होते।
जब-जब खूब उपद्रव होते, तब-तब चेतन के दिल रोते॥
जैसे ही शान्ति का नाम पुकारा, ज्वाला शीतल हुई चेतन की।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में धारा दी चंदन की॥
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय चन्दनं...।

जब-जब शान्ति की माला न फेरी, तब-तब मन बंदर सा फिरता।
जब-जब मन बन्दर सा फिरता, तब-तब रूप दिगम्बर न रुचता॥
जैसे ही शान्ति की माला फेरी, मोक्ष महल सा निज में पाए।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अक्षत पुञ्ज चढ़ाए॥
ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय अक्षतान् ...।

जब-जब शान्ति का दर्शन न पाया, तब-तब निज की कली मुरझाई।
जब-जब निज की कली मुरझाई, तब-तब आतम खिलने न पाई॥
जैसे ही शान्ति का दर्शन पाया, दोष नशे हुई ब्रह्म गुलाला।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित पुष्पों की माला॥
ॐ रां रीं रूं रौं रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय पुष्पाणि...।

जब-जब ध्याया न शान्तिप्रभु को, तब-तब जीवन नीरस जैसा।
जब-जब जीवन नीरस जैसा, तब-तब आतम भूखा प्यासा॥
जैसे ही शान्ति का ध्यान लगाया, निज में निज का रस-सा आया।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में ये नैवेद्य चढ़ाया॥
ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय नैवेद्यं...।

जब-जब शान्ति की आरती न की, तब-तब जीवन में छाया अँधेरा।
जब-जब जीवन में छाया अँधेरा, तब-तब राही का बढ़ता है फेरा॥
जैसे ही शान्ति की ज्योति मिली तो, ज्ञान का सूर्य प्रकाशित पाया।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में आकर दीप जलाया॥
ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय दीपं...।
जब-जब शान्ति का पाठ किया ना, तब-तब कर्मों की बढ़ती कहानी।
जब-जब कर्मों की बढ़ती कहानी, तब-तब निज की विभूति विरानी॥
जैसे ही शान्ति का पाठ रचाया, कर्मों की कड़ियाँ चट-चट चटकीं।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में खेएँ धूप धूप-घट की॥
ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय धूपं...।
जब-जब न पूजा शान्तिप्रभु को, तब-तब दुनियाँ हमसे रूठी।
जब-जब दुनियाँ हमसे रूठी, तब-तब जीने की आशा छूटी॥
जैसे ही शान्तिप्रभु को पूजा, आतम में परमातम सा पाए।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में फल के गुच्छे चढ़ाए॥
ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय फलं...।
जब-जब शान्ति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शान्ति विधान रचाए, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥
ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : गिल्ली डंडा खेल.....)

नमो-नमो जप रहो थो, माँ ऐरा तेरो लाडलो[२]
एक बार देखो हमने ऐरा माँ के पुण्य में[२]

चुपके-चुपके सो रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने, हस्तिनापुर तीर्थ में[२]
रत्न-वर्षा पाए रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने सारे संसार में[२]
गर्भ कल्याणक छाए रहो थो, माँ ऐरा...नमो....

(दोहा)

कृष्ण सप्तमी भाद्र को, तजकर स्वर्ग विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, वसे शान्ति भगवान्॥

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।

(लय : बाजे कुण्डलपुर....)

बाजे हस्तिनापुर में बधाई, कि नगरी में शान्ति जन्मे...शान्तिनाथजी
शुभ मंगल बेला आई, त्रिलोक में आनन्द छाया... शान्तिनाथजी
सौधर्म शचि सह आये, कि अभिषेक मेरु पे करें... शान्तिनाथजी
नृप विश्वसेन हर्षाये, कि जन्म कल्याणक है... शान्तिनाथजी

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शान्ति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।

(लय : अय मेरे प्यारे वतन...)

अय! हमारी आतमा, अय! परम परमात्मा- झूठी दुनियाँ त्याग, धार ले वैराग्य

जन्म मृत्यु कर्म सुख दुख, कर अकेले ही सहन।
पुत्र पत्नि मित्र बन्धु, स्वार्थ में सब हैं मगन॥
मोह मिथ्या नींद से अब, जाग चेतन जाग। धार ले वैराग्य।

जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशान्ति शोर।
शान्तिनाथ मुनि को हुई, नमोऽस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।

(लोलतरंग)

जब तक है अज्ञान अँधेरा, तब तक ज्ञान की ज्येति मिले ना।
जब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना, तब तक मोह का अंध टले ना॥
जैसे ही मोह का अंध नशाये, केवलज्ञानी हों अर्हन्ता।
तत्त्व प्रकाशी निज रस स्वादी, जय-जय शान्तिनाथ जिनन्दा॥
दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शान्ति अर्हन्त कोएकरती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं.....।

जब तक है अर्हंत अवस्था, तब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे।
जब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे, तब तक शुद्ध न सिद्ध बनेंगे॥
कर्म नशें ज्यों मोक्ष मिले त्यों, सिद्ध बने गुण पाए अनन्ता।
काल अनन्ता, ब्रह्म रमन्ता, जय-जय, जय-जय सिद्ध महन्ता॥
चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वंदन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।

(पेज नं. २१५ पर जयमाला है)

[इसके बाद प्रतिदिन के विधान के अर्घ्य प्रारंभ करें]

गुरु मार्ग में
पीछे की हवा सम
हमें चलाते

१. श्री शान्तिनाथ विधान (८-अर्घ्य)

मंगल द्रव्य

(जोगीरासा)

मंगल द्रव्य छत्र शोभित हो, प्रभु चरणों में आके।
छत्र छाँव के मंगल-मंगल, करें भाव गुण गाके॥
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ल ए ऐ ओ औ अं अः वर्णबीजाक्षरसहित छत्र सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १॥

मंगल द्रव्य चँवर शोभित हो, चरणों की चर्चा से।
विकसित ज्योति मंगल-मंगल, करें भाव अर्चा से॥
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं अर्हं क ख ग घ ङ वर्णबीजाक्षरसहित चँवरसुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २॥

दुनियादारी तजकर झारी, करके प्रभु से यारी।
प्यास बुझाने को आतुर सो, पड़े सभी पर भारी॥
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं अर्हं च छ ज झ ञ वर्णबीजाक्षरसहित झारी सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३॥

दर्पण प्रभु चरणों में अर्पण, करें समर्पण ऐसे।
जग झलकाए निर्विकार हो, आतम झलके जैसे॥
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं अर्हं ट ठ ड ढ ण वर्णबीजाक्षरसहित दर्पण सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४॥

मंगल-कलश बढ़ाए शोभा, सुख समृद्धि लाने।
समयसार अध्यात्म कलश सम, आतम कलश दिलाने॥
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं अर्हं त थ द ध न वर्णबीजाक्षरसहित कलश सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५॥

स्वस्तिक या फिर शुद्ध बीजना, प्रभु का शंख बजाए।
मंद-मंद मकरन्द हवा सम, सबको गोद उठाए॥
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं अर्हं प फ ब भ म वर्णबीजाक्षरसहित स्वस्तिक (बीजना) सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६॥

ठोना ने भी पकड़ा कोना, बनकर खेल-खिलौना।
यही भावना करें रात-दिन, हर लो रोना-धोना॥
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं अर्हं य र ल व वर्णबीजाक्षरसहित ठोना सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७॥

प्रभु की ध्वजा उड़े मंगलमय, यश का पीटे डंका।
ध्वजा तले आने से क्या हो, करो न ऐसी शंका॥
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श ष स ह वर्णबीजाक्षरसहित ध्वजा सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

(हरीगीतिका)

हैं अष्ट मंगल द्रव्य शोभित, शान्तिनाथ जिनेश्वरा।
सब मंगलों में प्रथम मंगल, त्रि-पद धारि महेश्वरा॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं अष्ट गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री अष्ट गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

तेरी दो आँखें
तेरी ओर हजार
सतर्क हो जा

२. श्री शान्तिनाथ विधान (१६-अर्घ्य)

शान्ति-अष्टक

(ज्ञानोदय)

शान्तिप्रभु के चरण कमल द्वय, नहीं स्नेह से भजने को।
पर भवसागर के नाना विध, दुख समूह से बचने को॥
तथा तेज सूरज किरणों से, ग्रीष्म हुआ भूमण्डल हो।
तो छाया सम चन्द्र चरण प्रभु, मिलें प्रजा का मंगल हो॥

ॐ ह्रीं विश्व कल्याणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१॥

काल नाग ज्यों क्रोधित जिसको, विष ज्वाला से व्याप्त करे।
विद्या औषध मंत्र हवन जल, उसको शांत समाप्त करे॥
वैसे ही प्रभु शान्तिनाथ के, चरण कमल द्वय जो भजते।
अहो! शान्ति अतिशय वो पाते, विघ्न पाप यूँ ही नशते॥

ॐ ह्रीं विष वेदना रूप अशान्ति हर्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२॥

तप्त स्वर्ण सम स्वर्ण मेरु सम, जिनकी उज्ज्वल श्री ज्योति।
ऐसे शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु, करके पीड़ा क्षय होती॥
जैसे उदार सूर्योदय से, अंधकार की रात्रि टले।
तमाक्रांत नाना जीवों को, नेत्र ज्योति भी शीघ्र मिले॥

ॐ ह्रीं नेत्र ज्योति प्रदाता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३॥

तीन लोक का ईश्वर विजयी, महा भयंकर रौद्र रहा।
नाना जन्मों में भी पहले, जिसका सबको खौफ रहा॥
ऐसे काल कालिया का प्रभु, सब जग में आतंक मचा।
शान्तिप्रभु के चरण कमल की, भक्ति बिना कब कौन बचा॥

ॐ ह्रीं मृत्युंजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४॥

लोकालोक प्रकाशित करते, ज्ञानमूर्ति हो शान्तिनाथ।
उज्ज्वल नाना रत्न दण्डमय, छत्र सुशोभित शान्तिनाथ॥
चरण-कमल की गीत-ध्वनियाँ, दुख हरती यों शान्तिनाथ।
जैसे सिंह दहाड़ों को सुन, हाथी भागें शान्तिनाथ॥

ॐ ह्रीं दुःख विनाशी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५॥

दिव्य स्त्रियाँ अपलक ताकें, विपुल कथा मेरु पर हों।
बालभानु की चमक चुराएँ, भामण्डल मय जिनवर हों॥
शान्तिप्रभु की यों स्तुति से, अव्याबाध अतुल सुख हो।
अनुपम अचिन्त्य शाश्वत आत्मिक, चरण कमल को भज सुख हो॥

ॐ ह्रीं सुख प्रदाता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६॥

जब तक सूर्य उदय ना होता, जो जग में करता उजयार।
तब तक तो जल कमल सरोवर, खिले न त्यागे निद्रा भार॥
यूँ ही जब तक शान्तिनाथ के, चरण कमल ना पूजें लोग।
तब तक पापों की पीड़ा के, टलें नहीं भारी संयोग॥

ॐ ह्रीं पाप हर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७॥

भूतल पर जो शान्ति चाहते, शान्ति-शान्ति है इष्ट जिन्हें।
शान्त हृदय से शान्ति-शान्ति रट, मिले परम सुख शान्ति उन्हें॥
हे! करुणाकर करुणा करके, दृष्टि प्रसन्न करो मुझ पर।
करूँ शान्ति-अष्टक से भक्ति, करो भक्त पर शान्ति नजर॥

ॐ ह्रीं दृष्टि दोष हर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८॥

(चौपाई)

शान्तिनाथ मुख शशि सम उज्ज्वल, व्रत गुण शील धरे संयम दल।
इक सौ आठ लक्षणी प्रभु तन, जिनवर नेत्र कमल को वंदन॥

ॐ ह्रीं सर्व गुण प्रदाता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९॥

पंचम चक्रवर्ति वरदानी, सोलम तीर्थंकर कल्याणी।
इन्द्र नरेन्द्र शान्ति आराधें, शान्ति करो हम शान्ति चाहें॥
ॐ ह्रीं शान्ति प्रदाता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०॥

कल्पवृक्ष सुर पुष्पवृष्टि हो, दुंदुभि आसन दिव्य ध्वनि हो।
छत्र चंवर भामण्डल सोहें, प्रातिहार्य शान्ति मन मोहें॥
ॐ ह्रीं सुख समृद्धि कर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११॥

जगत पूज्य हो शान्ति भगवन, करो शान्ति हम करते वंदन।
सर्व संघ को शान्ति दीजिए, विघ्न उपद्रव शान्त कीजिए॥
ॐ ह्रीं विश्व शान्ति कर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१२॥

(वसंततिलका)

जो इन्द्रदेव गण से नित पूज्य स्वामी,
ले हार कुण्डल किरीट उन्हें नमामि।
वे शान्तिनाथ जिन हैं जगदीप न्यारे,
दें शान्ति रोज मुझको नित दें सहारे॥
ॐ ह्रीं परोपकारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१३॥

(उपजाति)

संपूजकों को प्रतिपालकों को, गुरु नायकों को मुनि साधकों को।
राजा प्रजा देश स्वराज सबको, प्रभु दीजिए सुख शान्ति जगत को॥
ॐ ह्रीं सकल शान्तिविधाता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१४॥

(स्रग्धरा)

सारे प्राणी सुखी हों, दल-बल मय हों, राज्य राजा सुधर्मी।
वर्षा होवे हितैषी, समय-समय पै, रोग ना हों विधर्मी॥
चोरी मारी न होवे, क्षण भर जग में, हो न दुर्भिक्ष स्वामी।
हों सारे जैन धर्मी, जिन धरम धारें, हों सुखी सर्व ज्ञानी॥
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव अशान्ति हर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१५॥

(वसंततिलका)

हो द्रव्य अव्यय मिले शुभ देश प्यारा,
सम्यक् सुकाल तप योग्य मिले सहारा।
आनंद भाव नित हों सुख शान्तियों में,
रत्नत्रयी मनन होंए, मुमुक्षओं में॥

(दोहा)

घतिकर्म सब नाशकर, पाया केवलज्ञान।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभ आदि भगवान ॥

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग-दीक्षायोग्य सामग्री प्रदाता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१६॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

जिनराज प्रभु की भक्तियों से, शाक्तियाँ सम्यक् मिलें।
दुख पाप हरने युक्तियों से, मुक्तियाँ निज की मिलें॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं षोडश गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री षोडश गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

३. श्री शान्तिनाथ विधान (२४-अर्घ्य)

चत्तारि मंगलं

(सखी)

अरिहंत रूप शुभ मंगल, हर लेते विघ्न अमंगल।
श्री शान्तिप्रभु कल्याणी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं अरिहंत मंगलस्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १॥

प्रभु सिद्ध रूप शुभ मंगल, काटें कर्मों का जंगल।
श्री शान्तिप्रभु कल्याणी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं सिद्ध मंगलस्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २॥

मुनि साधु रूप शुभ मंगल, नाशें पापों का दलदल।
श्री शान्तिप्रभु कल्याणी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं साधु मंगलस्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३॥

है केवली प्रणीत मंगल, जिनधर्म बनाए उज्ज्वल।
श्री शान्तिप्रभु कल्याणी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं धर्म मंगलस्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४॥

चत्तारि लोगुत्तमा

अरिहंत लोक में उत्तम, जो करें हमें सर्वोत्तम।
श्री शान्तिप्रभु कल्याणी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं अरिहंत लोकोत्तमस्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५॥

प्रभु सिद्ध लोक में उत्तम, जो शुद्ध बनाए आतम।
श्री शान्तिप्रभु कल्याणी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं सिद्ध लोकोत्तमस्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६॥

मुनि साधु लोक में उत्तम, जो हरें बुराई दुख गम।
श्री शान्तिप्रभु कल्याणी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तमस्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७॥

है केवली प्रणीत उत्तम, जिनधर्म करे परमातम।
श्री शान्तिप्रभु कल्याणी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं धर्म लोकोत्तमस्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८॥

चत्तारि सरणं

अरिहंत शरण हम पाएँ, जग के सम्बन्ध नशाएँ।
श्री शान्तिप्रभु कल्याणी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं अरिहंत शरणस्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९॥

प्रभु सिद्ध शरण हम पाएँ, निज सिद्ध अवस्था पाएँ।
श्री शान्तिप्रभु कल्याणी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं सिद्ध शरणस्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०॥

मुनि साधु शरण हम पाएँ, ले दीक्षा सु-व्रत ध्याएँ।
श्री शान्तिप्रभु कल्याणी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं साधु शरणस्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ११॥

है केवली प्रणीत धर्मम्, दे शरण नशाएँ कर्मम्।
श्री शान्तिप्रभु कल्याणी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं धर्म शरणस्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १२॥

हिंसा त्याग (चौपाई)

संकल्पी त्यागें हम हिंसा, आतम ध्याएँ धार अहिंसा।
शान्तिप्रभु संस्कार दिलाओ, हमको सम्यक् योग्य बनाओ॥

ॐ ह्रीं संकल्पी-हिंसात्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १३॥

उद्योगी हिंसा को त्यागें, मोह नींद से जल्दी जागें।
शान्तिप्रभु संस्कार दिलाओ, हमको सम्यक् योग्य बनाओ॥

ॐ ह्रीं उद्योगी-हिंसात्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १४॥

आरम्भी हिंसा परिहारें, अपना आतम रूप निखारें।
शान्तिप्रभु संस्कार दिलाओ, हमको सम्यक् योग्य बनाओ॥

ॐ ह्रीं आरम्भी-हिंसात्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १५॥

हिंसा त्यागें शीघ्र विरोधी, बनें चेतना के अनुरोधी।
शान्तिप्रभु संस्कार दिलाओ, हमको सम्यक् योग्य बनाओ॥

ॐ ह्रीं विरोधी-हिंसात्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १६॥

चार गतियाँ त्याग

पाप नरक गति कोई न चाहें, प्रभु के चरणा हमें बचाएँ।
शान्तिप्रभु संस्कार दिलाओ, हमको सम्यक् योग्य बनाओ॥

ॐ ह्रीं नरक-गतिरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १७॥

गति तिर्यंच दुखों की दात्री, तजते कर-पात्री पग-यात्री।
शान्तिप्रभु संस्कार दिलाओ, हमको सम्यक् योग्य बनाओ॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच-गतिरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १८॥

त्याग देव गति के भोगों को, स्वीकारें आतम योगों को।
शान्तिप्रभु संस्कार दिलाओ, हमको सम्यक् योग्य बनाओ॥

ॐ ह्रीं देव-गतिरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १९॥

मनुष्य गति पा संयम धारें, पंचम गति पा मोक्ष पधारें।
शान्तिप्रभु संस्कार दिलाओ, हमको सम्यक् योग्य बनाओ॥

ॐ ह्रीं मनुष्य-गतिरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २०॥

चार मैत्री आदि भावना (विष्णु)

मैत्री भाव जगत के सब ही, रखें प्राणियों से।
वैर त्यागकर सजें क्षमा के, मोती मणियों से॥
शान्तिप्रभु से यही प्रार्थना, प्रेम भरो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं मैत्री-भावसहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २१॥

सम्यक् से शोभित गुण अणुव्रत, तथा महाव्रत हों।
ऐसे गुणियों के दर्शन कर, प्रसन्न प्रमुदित हों॥
शान्तिप्रभु से यही प्रार्थना, गुणी करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं प्रमोद-भावसहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २२॥

दुखी दरिद्र देखकर प्राणी, करुणा भाव धरें।
सुखी रहें सब जीव जगत के, मंगल भाव करें॥
शान्तिप्रभु से यही प्रार्थना, सुखी करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं कारुण्य-भावसहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २३॥

दुर्जन क्रूर कुमार्ग रतों में, हम माध्यस्थ रहें।
'सुव्रत' उत्तम करें साधना, समता भाव धरें॥
शान्तिप्रभु से यही प्रार्थना, साहस दो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं माध्यस्थ-भावसहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २४॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

प्रभु मंगलोत्तम हैं शरण, हिंसादि गतियों को तजे।
शुभ भावना कर मैत्री आदि, चेतना गुण से सजे॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति गुण सहित सर्वविघ्न-शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री चतुर्विंशति गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

४. श्री शान्तिनाथ विधान (३२-अर्घ्य)

तीन मूढ़ता

(लय—माता तू दया करके)

जो देव नहीं होते, उनको जो देव कहें।
जिनसे हम भ्रमित हुए, भव-भव दुख दर्द सहें॥
इस देव-मूढ़ता से, प्रभु हमें बचा लेना।
हे! शान्तिनाथ स्वामी, सुखशान्ति शरण देना॥

ॐ ह्रीं देवमूढ़ता दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १॥

जो गुरु नहीं होते, उनको जो गुरु कहें।
जो धर्म भ्रष्ट करते, जिनसे भव भ्रमण सहें॥
इस गुरु-मूढ़ता से, प्रभु हमें बचा लेना।
हे! शान्तिनाथ स्वामी, सुखशान्ति शरण देना॥

ॐ ह्रीं गुरुमूढ़ता दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २॥

जग की परिपाटी जो, मिथ्या का दल-दल दे।
जिससे हम बच न सकें, जो विघ्न अमंगल दे॥
इस लोक-मूढ़ता से, प्रभु हमें बचा लेना।
हे! शान्तिनाथ स्वामी, सुखशान्ति शरण देना॥

ॐ ह्रीं लोकमूढ़ता दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३॥

छह-अनायतन (सखी)

जब मिले कुदेवों से हम, तब हुए कुदेवों जैसे।
ये अनायतन तज हम हों, श्री शान्तिनाथ के जैसे॥

ॐ ह्रीं कुदेव दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४॥

जब कुदेव सेवक पाए, हम रहे गुलामों जैसे।
ये अनायतन तज हम हों, श्री शान्तिनाथ के जैसे॥

ॐ ह्रीं कुदेवसेवक दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५॥

पा कुगुरु का पथ वाणी, दुख सहें कहाँ तक कैसे।
ये अनायतन तज हम हों, श्री शान्तिनाथ के जैसे॥
ॐ ह्रीं कुगुरु दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६॥

पा कुगुरु के सेवक को, नर रत्न गवाँए कैसे।
ये अनायतन तज हम हों, श्री शान्तिनाथ के जैसे॥
ॐ ह्रीं कुगुरुसेवक दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७॥

पा कुशास्त्र की शिक्षाएँ, होंगे फिर पागल कैसे।
ये अनायतन तज हम हों, श्री शान्तिनाथ के जैसे॥
ॐ ह्रीं कुशास्त्र दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८॥

पा कुशास्त्र के सेवक को, हम भूले भटके कैसे।
ये अनायतन तज हम हों, श्री शान्तिनाथ के जैसे॥
ॐ ह्रीं कुशास्त्रसेवक दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९॥

आठ-मद

(हाकलिका)

कुल-मद से संसार दुखी, आतम कैसे बने सुखी।
शान्तिनाथ मद दूर करो, हमको सुखी जरूर करो॥
ॐ ह्रीं कुल-मद दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०॥

यहाँ जाति-मद सब चाहें, अतः मिली दुखी की राहें।
शान्तिनाथ मद दूर करो, हमको सुखी जरूर करो॥
ॐ ह्रीं जाति-मद दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ११॥

सभी रूप-मद के भोगी, बन न सके आतम योगी।
शान्तिनाथ मद दूर करो, हमको सुखी जरूर करो॥
ॐ ह्रीं रूप-मद दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १२॥

किसे ज्ञान-मद ना भाए, सो निज ज्ञान न हो पाए।
शान्तिनाथ मद दूर करो, हमको सुखी जरूर करो॥
ॐ ह्रीं ज्ञान-मद दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १३॥

धन-मद का जग दीवाना, सो निज धन से अनजाना।
शान्तिनाथ मद दूर करो, हमको सुखी जरूर करो॥
ॐ ह्रीं धन-मद दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १५॥

बल-मद से जग नाँच रहा, दुख की पत्री वाँच रहा।
शान्तिनाथ मद दूर करो, हमको सुखी जरूर करो॥
ॐ ह्रीं बल-मद दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १६॥

तप-मद हरें तपस्याएँ, कर दें खड़ी समस्याएँ।
शान्तिनाथ मद दूर करो, हमको सुखी जरूर करो॥
ॐ ह्रीं तप-मद दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १७॥

प्रभुता का मद खूब चढ़ा, जिससे बस संसार बढ़ा।
शान्तिनाथ मद दूर करो, हमको सुखी जरूर करो॥
ॐ ह्रीं प्रभुता-मद दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १८॥

आठ-शंकादि दोष

(जोगीरासा)

जिनशासन में शंका करना, कार्य नहीं हितकारी।
इसी भाव से विकृत होती, निज तस्वीर हमारी॥
शंका नामक दोष नशाने, तीर्थंकर को ध्याएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख शान्ति सब पाएँ॥
ॐ ह्रीं शंका दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १८॥

मोक्षमार्ग में भव-भोगों की, चाहत धर्म नशाए।
इसी भाव से निज की चाहत, पूरी ना हो पाए॥
कांक्षा नामक दोष नशाने, तीर्थंकर को ध्याएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख शान्ति सब पाएँ॥
ॐ ह्रीं कांक्षा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १९॥

धर्म तथा धर्मात्मा जन से, करना ईर्ष्या ग्लानि।
इसी भाव से अपनी बढ़ती, दुख की कर्म कहानी॥
विचिकित्सा का दोष नशाने, तीर्थंकर को ध्याएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख शान्ति सब पाएँ॥

ॐ ह्रीं विचिकित्सा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २०॥

मिथ्या मत की परम्परा में, पागल से हो जाना।
इसी भाव से अपना वैभव, हमको स्वयं गँवाना॥
मूढ़दृष्टि का दोष नशाने, तीर्थंकर को ध्याएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख शान्ति सब पाएँ॥

ॐ ह्रीं मूढ़दृष्टि दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २१॥

अपने दोष अन्य के गुण को, जो जन सदा छिपाएँ।
निज गुण, दोष अन्य के कहते, वो संसार बढाएँ॥
अनुपगूहन का दोष नशाने, तीर्थंकर को ध्याएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख शान्ति सब पाएँ॥

ॐ ह्रीं अनुपगूहन दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २२॥

व्रत संयम के साधक जन को, पद से निम्न गिराना।
इसी भाव से नरक बिलों में, आतम रत्न गुमाना॥
अस्थितिकरण नामक दोष नशाने, तीर्थंकर को ध्याएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख शान्ति सब पाएँ॥

ॐ ह्रीं अस्थितिकरण दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २३॥

सहधर्मी से ईर्ष्या करके, उनको ना अपनाना।
दोषारोपण कर अपने से, नीचा उन्हें दिखाना॥
अवात्सल्य का दोष नशाने, तीर्थंकर को ध्याएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख शान्ति सब पाएँ॥

ॐ ह्रीं अवात्सल्य दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २४॥

देव शास्त्र गुरु धर्म जाति के, योग्य कार्य ना जो हों।
जिनसे होती निंदा हिंसा, कलंक कारक जो हों॥
अप्रभावना का दोष नशाने, तीर्थंकर को ध्याएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख शान्ति सब पाएँ॥

ॐ ह्रीं अप्रभावना दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २५॥

सप्त-व्यसन

(लघु चौपाई)

जुआ व्यसन का करके त्याग, भक्ति सुधा धारें वैराग्य।
शान्तिनाथ देना आशीष, नमोऽस्तु कर हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं जुआ दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २६॥

चौर्य व्यसन का करके त्याग, चिदानंद का सीचें बाग।
शान्तिनाथ देना आशीष, नमोऽस्तु कर हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं चौर्य दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २७॥

मद्यपान का करके त्याग, आतम रस का चख लें स्वाद।
शान्तिनाथ देना आशीष, नमोऽस्तु कर हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं मद्यपान दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २८॥

परस्त्री का रमना त्याग, निज रमणी से कर लें राग।
शान्तिनाथ देना आशीष, नमोऽस्तु कर हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं परस्त्रीरमण दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २९॥

वेश्यागमन दोष को त्याग, आतम का हर डालें दाग।
शान्तिनाथ देना आशीष, नमोऽस्तु कर हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं वेश्यागमन दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३०॥

मांस-भोज्य का दूषण त्याग, वीतरागता हो सौभाग्य।
शान्तिनाथ देना आशीष, नमोऽस्तु कर हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं मांसभोज्य दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३१॥

शिकार की हिंसा को त्याग, जले अहिंसा धर्म चिराग।
शान्तिनाथ देना आशीष, नमोऽस्तु कर हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं शिकार दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३२॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

निर्दोष हों निर्मुक्त हों, सारे व्यसन हर कर्म से।
संयुक्त हों संतुष्ट हों, आतम सगुण सद्धर्म से॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलम् शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत् गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री द्वात्रिंशत् गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

तेरी दो आँखें
तेरी ओर हजार
सतर्क हो जा

५. श्री शान्तिनाथ विधान (४०-अर्घ्य)

आठ मूलगुण

(सखी)

कर मद्यत्याग कल्याणी, नित धरें मूलगुण प्राणी।
साकार करें सब सपने, श्री शान्तिनाथजी अपने॥

ॐ ह्रीं मद्य दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १॥

कर मांस त्याग कल्याणी, नित धरें मूलगुण प्राणी।
साकार करें सब सपने, श्री शान्तिनाथजी अपने॥

ॐ ह्रीं मांस दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २॥

मधु त्याग करें कल्याणी, नित धरें मूलगुण प्राणी।
साकार करें सब सपने, श्री शान्तिनाथजी अपने॥

ॐ ह्रीं मधु दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३॥

फल पंच उदम्बर त्यागें, नित धरें मूलगुण जागें।
साकार करें सब सपने, श्री शान्तिनाथजी अपने॥

ॐ ह्रीं पंच-उदम्बरफल दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४॥

सब रात्रि भोजन त्यागें, नित धरें मूलगुण जागें।
साकार करें सब सपने, श्री शान्तिनाथजी अपने॥

ॐ ह्रीं रात्रिभोजन दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५॥

व्रत जीव दया को पालें, नित धरें मूलगुण ध्या लें।
साकार करें सब सपने, श्री शान्तिनाथजी अपने॥

ॐ ह्रीं हिंसा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६॥

हम करें देव दर्शन को, नित धरें मूलगुण धन को।
साकार करें सब सपने, श्री शान्तिनाथजी अपने॥

ॐ ह्रीं अदर्शन दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७॥

हम पिएँ छानकर पानी, नित धरें मूलगुण ज्ञानी।
साकार करें सब सपने, श्री शान्तिनाथजी अपने॥

ॐ ह्रीं क्रिया दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८॥

बत्तीस कृतिकर्म दोष

(जोगीरासा)

हाथों से घुटनों से पीड़ित, करके कर्म करें जो।
पर पीड़ित का दोष लगाकर, दोषी धर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं परपीड़ित दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९॥

हाथ अँगूठे से ललाट को, पीड़ित कर्म करें जो।
यही अंकुशित दोष लगाकर, दोषी धर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं अंकुशित दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०॥

अपनी ऊपर कमर उठाकर, चंचल कर्म करें जो।
मत्स्य नाम का दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं मत्स्योद्वर्त दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ११॥

दोनों हाथों व घुटनों का, बंधन कर्म करें जो।
वेदी नामक दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं वेदिकाबद्ध दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १२॥

गुरु आदिक से डर-डरकर के, अपने कर्म करें जो।
विनय नाम का दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं विनयत्व दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १३॥

खुद को ऊँचा बड़ा मानकर, वंदन कर्म करें जो।
गौरव नामक दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं गौरव दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १४॥

गुरु-आज्ञा को पूर्ण भंगकर, वंदन कर्म करें जो।
प्रतिनीति का दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं प्रतिनीति दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १५॥

आचार्यों की डाँट-डपट सुन, वंदन कर्म करें जो।
तर्जित नामक दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं तर्जित दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १६॥

आचार्यों की अविनय करके, वंदन कर्म करें जो।
हीलित नामक दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं हीलित दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १७॥

हाथों से सिर संकोचित कर, वंदन कर्म करें जो।
कुंचित नामक दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं कुंचित दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १८॥

करके बिन मन से पाठों को, वंदन कर्म करें जो।
अदृष्ट नामक दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं अदृष्ट दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १९॥

उपकरणों को पूरे पाकर, वंदन कर्म करें जो।
आलब्ध नामक दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं आलब्ध दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २०॥

उपकरणों की आशा रखकर, वंदन कर्म करें जो।
अनालब्ध यह दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं अनालब्ध दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २१॥

गूँगे जैसे करके वंदन, वंदन कर्म करें जो।
मूक नाम का दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं मूक दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २२॥

अपनी उँगली घुमा-घुमाकर, वंदन कर्म करें जो।
चुलुलित नामक दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं चुलुलित दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २३॥

आदर वा उत्साह बिना ही, वंदन कर्म करें जो।
यही अनादृत दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं अनादृत दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २४॥

विद्या पा उद्दण्ड भाव से, वंदन कर्म करें जो।
स्तब्ध नाम का दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं स्तब्ध दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २५॥

परमेष्ठी के पास बैठकर, वंदन कर्म करें जो।
प्रविष्ट नामक दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं प्रविष्ट दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २६॥

झूल-झूलकर झूला जैसे, वंदन कर्म करें जो।
दोलायित का दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं दोलायित दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २७॥

कछुए सम अंगों को करके, वंदन कर्म करें जो।
कच्छप परिगित दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं कच्छप-परिगित दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २८॥

द्वेष भाव मन विकृत करके, वंदन कर्म करें जो।
मनोदुष्ट का दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं मनोदुष्ट दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २९॥

डर-डरकर के घबराकर के, वंदन कर्म करें जो।
भय नामक यह दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं भय दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३०॥

संघ पूज्य हों इस आशा से, वंदन कर्म करें जो।
ऋद्धि-गौरव दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं ऋद्धि-गौरव दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३१॥

चोरी-चोरी छिप-छिपकर के, वंदन कर्म करें जो।
स्तेनित का दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं स्तेनित दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३२॥

करके कलह क्षमा ना करके, वंदन कर्म करें जो।
प्रदुष्ट नाम का दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं प्रदुष्ट दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३३॥

मौन छोड़कर शब्द बोलकर, वंदन कर्म करें जो।
शब्द नाम का दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं शब्द दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३४॥

अपनी गर्दन कमर मोड़कर, वंदन कर्म करें जो।
त्रिवलित नामक दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं त्रिवलित दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३५॥

दिखा-दिखाकर गुरु आदि को, वंदन कर्म करें जो।
दुष्ट नाम का दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं दुष्ट दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३६॥

मुझसे संघ न रूठे इससे, वंदन कर्म करें जो।
दोष संघ-करमोचन द्वारा, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं संघ-करमोचन दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३७॥

शास्त्र काल के प्रमाण के बिन, वंदन कर्म करें जो।
हीन नाम का दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं हीन दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३८॥

नियतकाल से अल्पकाल में, वंदन कर्म करें जो।
उत्तरचूलिका दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं उत्तरचूलिका दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३९॥

चींख-चींखकर ऊँचे स्वर में, वंदन कर्म करें जो।
दुर्दुर नामक दोष लगाकर, दोषी कर्म करें वो॥
शान्तिनाथ की भक्ति अर्चना, सारे दोष नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, स्वामी शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं दुर्दुर दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४०॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

नित शांत और प्रशांत हों तज, दोष को हर कर्म को।
सुख-शान्ति हो नव क्रांति हो, छाया मिले चैतन्य को॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं चत्वारिंशत् गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री चत्वारिंशत् गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

भजन

हे! स्वामी तेरी पूजा करूँ मैं-२,
हर पल तेरी अर्चा करूँ मैं॥
सावन का महीना होगा, उसमें होगी राखी।
विष्णु मुनि जैसी सेवा करूँ मैं, हर पल...॥१॥
भादों का महीना होगा, उसमें होगी वारिश।
दसलक्षण की चर्चा करूँ मैं, हर पल...॥२॥
कार्तिक का महीना होगा, उसमें होगी दीवाली।
वीर प्रभु जैसी मुक्ति वरूँ मैं, हर पल...॥३॥
फागुन का महीना होगा, उसमें होगी होली।
अष्टाह्निक के रंग रंगूँ मैं, हर पल...॥४॥
वैशाख का महीना होगा, उसमें होगी अख-ती।
राजा श्रेयांस-सोम सा दान करूँ मैं, हर पल...॥५॥
आषाढ़ का महीना होगा, उसमें होगा चौमासा।
विद्या गुरु की भक्ति करूँ मैं, हर पल...॥६॥

६. श्री शान्तिनाथ विधान (४८-अर्घ्य)

अड़तालीस ऋद्धिमंत्र सहित

(लय–माता तू दया करके...)

जय कर्म इन्द्रियाँ कर, जो पूज्य हुए जिनवर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥
ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१॥

जब अवधिज्ञान पाए, तो धर्म दिए हितकर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥
ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२॥

परमावधि ज्ञान किए, परमातम में वस कर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥
ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३॥

सर्वावधि ऋद्धि पा, सुख शान्ति दिए भर-भर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४॥

गुण अनन्तावधि पाकर, आतम के गुण गाकर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥
ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५॥

(लघु चौपाई)

कोष्टबुद्धि का पाकर सार, सबको दिए शान्ति भण्डार।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥
ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६॥

बीज बुद्धि का पा आलोक, स्वामी हरें जगत के शोक।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥
ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७॥

पदानुसारी पाकर धाम, शान्ति बनाएँ सबके काम।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८॥

संभिन्नस्त्रोतृ पाकर ज्ञान, स्वामी करें जगत कल्याण।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९॥

स्वयंबुद्ध से धर वैराग्य, शान्ति जगाएँ सबके भाग्य।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०॥

(जोगीरासा)

रंग-बिरंगे जगत नजारे, हमको खूब लुभाएँ।
शान्तिनाथजी जगत त्याग कर, शुद्धातम चमकाएँ॥
तीर्थंकर प्रत्येकबुद्ध जी, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११॥

पर से पाकर गुण शिक्षाएँ, जीते सभी परीक्षा।
शुद्ध-बुद्ध एकत्व चेतना, ध्याने देते दीक्षा॥
बोधितबुद्ध देव तीर्थंकर, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१२॥

अपने पर के सरल विषय जो, मन के जान रहा हो।
फिर भी उनमें कभी न रमता, सम्यग्ज्ञान रहा वो॥
ज्ञान मनःपर्यय-ऋजुमति धर, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१३॥

अपने पर के कुटिल विषय जो, मन के जान रहा हो।
फिर भी उनमें कभी न रमता, सम्यग्ज्ञान रहा वो॥
ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय धर, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१४॥

(हाकलिका)

दस पूर्वों के जो ज्ञाता, भक्तों को दें सुख साता।
दस पूर्वी अखियाँ खोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वियाणं (दसपुव्वीणं) श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१५॥

चौदहपूर्वी ऋद्धि धरें, भक्तों की समृद्धि करें।
चौदह पूर्वी सुख तो लो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वियाणं (चउदसपुव्वीणं) श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१६॥

जो अष्टांगनिमित्त धरें, खुद को पर को मुक्त करें।
कुशल मंत्र चेतन धो लो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १७॥

अणिमा आदिक ऋद्धि धरें, निज-पर का उद्धार करें।
ऋद्धि विक्रिया ले डोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वणपत्ताणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१८॥

विद्याधर नर व्रतधारी, मुक्तिरमा के अधिकारी।
विद्याधर सम सुख घोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१९॥

चारणऋद्धि धरें स्वामी, रोग-शोक हरते स्वामी।
चारणऋद्धि मंत्र बोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं..॥ २०॥

(सखी)

जो बिना पढ़े हों ज्ञानी, वो प्रज्ञा श्रमण निशानी।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२१॥

आकाश गमन जो करते, भक्तों की रक्षा करते।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२२॥

जो कभी न मारें प्राणी, आशीर्विष धर कल्याणी।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो आसिविसाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२३॥

जो कुपित दृष्टि ना धरते, हम सब पर करुणा करते।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२४॥

तप कठिन करें ले दीक्षा, कर्मों की करें परीक्षा।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २५॥

(शुद्ध गीता)

तपस्या खूब करके भी, चमकती देह है जिनकी।
उन्हीं की अर्चना करके, सँवरती जिन्दगी सबकी॥
धरें वह दीप्ततप हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२६॥

करें आहार तो लेकिन, निहारों पर विजय पा ली।
मिला यह साधना का फल, दिए भक्तों को खुशहाली॥

धरें वह तप्ततप हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२७॥

महातप खूब करके जो, ध्वजा जिनधर्म की धारें।
करें उपवास कल्याणी, उतारें पार भव तारें॥
महातप पूज लें हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२८॥

तपस्या घोर करके जो, करें हल हर समस्या को।
इन्हीं की अर्चना करके, सफल अपनी तपस्या हो॥
भजें हम घोरतप स्वामी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २९॥

धरें ऋषि घोरगुण न्यारे, तपस्या के सहारे से।
हरें संसार की पीड़ा, बनें सबके दुलारे से॥
धरें वह घोरगुण हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३०॥

(चौपाई)

विश्व विनाशक बल धारें पर, घोरपराक्रम करें हितंकर।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३१॥

महा अघोरब्रह्मगुण ज्ञानी, जगत हितैषी केवलज्ञानी।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३२॥

ऋषियों का तन छूकर आई, आमर्षौषधि ऋद्धि सुहाई।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३३॥

लार-थूक-कफ खेल्ल कहाएँ, तप से औषधि रूप सुहाएँ।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३४॥

देह पसीना जल्ल कहाएँ, तप से औषधि रूप सुहाएँ।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३५॥

(दोहा)

मल-मूत्रों को छू पवन, करे स्वस्थ तन प्राण।
विप्रुष-औषधि के धनी, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं (विप्पोसहिपत्ताणं) श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३६॥

वायु तन छूकर करे, स्वस्थ सुखी इंसान।
सर्वौषधि गुण के धनी, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३७॥

बिना थके चिन्तन करें, मुहूर्त में श्रुतज्ञान।
मनोबली के नाथ हैं, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३८॥

बिना थके वाचन करें, मुहूर्त में श्रुतज्ञान।
वचनबली के नाथ हैं, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३९॥

(विष्णु)

वज्र समान कायबल पाकर, कभी न पाप करें।
मुक्तिवधू से व्याह रचाने, कायोत्सर्ग करें॥

भेद-ज्ञान के योग्य कायबल, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४०॥

क्षीर समान भोज्य हो जाता, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप तपस्या होती, प्रभु की गरिमा से॥
ऋद्धि क्षीरस्रावी ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४१॥

नीरस भोजन घी जैसा हो, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप साधना होती, प्रभु की गरिमा से॥
सर्पिस्रावी गुण ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४२॥

कटुक भोज्य भी मधुर मिष्ट हो, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप अर्चना होती, प्रभु की गरिमा से॥
ऋद्धि मधुस्रावी ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४३॥

जहर बने अमृत के जैसा, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप भावना होती, प्रभु की गरिमा से॥
अमृतस्रावी गुण ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं (अमडसवीणं)श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४४॥

ऋषि आहार शेष ऐसा हो, तप की गरिमा से।
कटक पेट भर रहे साथ में, प्रभु की महिमा से॥
यह अक्षीणमहानस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४५॥

तीनलोक के सिद्ध आयतन, सिद्धशिला तक जो।
चरण धूल सिद्धों की पाने, सादर वन्दन हो॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः भजकर, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसिद्धायदणाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४६॥

अवगुण त्यागें सद्गुण धारें, वर्धमान जैसे।
जिनके हम श्रद्धालु जिन बिन, रहें कहो कैसे॥
वर्धमान जैसी चर्या को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४७॥

जिनशासन में संचालित हो, आज वीरशासन।
सर्व साधुओं की धारा यह, करे धर्म रक्षण॥
गौतम-गुरु से विद्या-गुरु तक, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसाहूणं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप शान्ति, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥

सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं अष्टचत्वारिंशत् गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री अष्टचत्वारिंशत् गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

**प्रश्नों से परे
अनुत्तर हैं उन्हें
मेरे नमन!**

**उन्हें जिनके
तन-मन नग्न हैं
मेरा नमन!**

७. श्री शान्तिनाथ विधान (५६-अर्घ्य)

अट्ठाईस इन्द्रिय विषय

(लघु चौपाई)

स्पर्शन का धर्म कठोर, करके विजय चले शिव ओर।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं कठोर दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१॥

स्पर्शन का कोमल धर्म, करके विजय नशाते कर्म।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं कोमल दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२॥

स्पर्शन का हल्का धर्म, करके विजय नशाते भर्म।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं हल्का दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३॥

स्पर्शन का भारी धर्म, करके विजय करो शिव शर्म।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं भारी दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४॥

स्पर्शन का ठंडा धर्म, करके विजय हरो भव घर्म।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं ठंडा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५॥

स्पर्शन का गर्म स्वभाव, करके विजय हरो दुर्भाव।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं गर्म दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६॥

स्पर्शन का रूखा धर्म, करके विजय हमें दो मर्म।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं रूखा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७॥

स्पर्शन का चिकना धर्म, करके विजय करो पथ नर्म।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं चिकना दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८॥

खट्टा रस रसना का त्याग, स्वामी धरें परम वैराग्य।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं खट्टा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९॥

मीठा रस रसना का छोड़, स्वामी चले मोक्ष भवबंधन तोड़।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं मीठा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०॥

कड़वा रस रसना परिहार, चिदानंद का कर आहार।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं कड़वा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ११॥

त्याग कसैला रसना स्वाद, कुंदन सम दें आशीर्वाद।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं कसायला दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १२॥

रस चरपरा छोड़ के नाथ, चेतन का नित लेते स्वाद।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं चरपरा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १३॥

काले रंग का तज संसार, उज्ज्वल नित आतम शृंगार।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं काला दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १४॥

पीले रंग को कभी न पाल, भक्तों को रखते खुशहाल।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं पीला दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १५॥

नीले रंग की त्यागे झील, स्वामी करते हमें सुशील।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं नीला दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १६॥

लाल रंग का त्यागे हार, करें धर्म की जय-जयकार।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं लाल दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १७॥

सफेद रंग को करके साफ, प्रभु अरिहंत नशाएँ पाप।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं सफेद दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १८॥

दुर्गंधों की तजकर पीर, जिनवर देते भव का तीर।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं दुर्गंध दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १९॥

त्याग सुगंधों भरी बहार, शाश्वत-आतम करें फुहार।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं सुगंध दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २०॥

सरगम के स्वर **सा** को त्याग, शमन-दमन सम रखते राग।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं सा-स्वर दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २१॥

सरगम के स्वर **रे** को छोड़, साधक शिवरथ लेते मोड़।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं रे-स्वर दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २२॥

सरगम के स्वर **ग** कर गौण, करें साधना होकर मौन।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं ग-स्वर दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २३॥

सरगम के स्वर **म** को मोड़, मोक्ष महल को कभी न छोड़।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं म-स्वर दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २४॥

सरगम के स्वर **प** परिहार, करें हमारी नैया पार।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं प-स्वर दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २५॥

सरगम के स्वर **ध** धिक्कार, मिले चेतना का अधिकार।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं ध-स्वर दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २६॥

सरगम के स्वर **नि** कर नाश, सफल करें अपना संन्यास।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं नि-स्वर दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२७॥

मन के विकल्प सारे त्याग, तजें मनोरंजन की आग।
शान्तिनाथ की जय-जयकार, नमोऽस्तु गूँजे बारम्बार॥
ॐ ह्रीं मनविकल्प दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२८॥

चौदह गुणस्थान

(जोगीरासा)

खोटे देव शास्त्र गुरुओं की, खोटी ही श्रद्धाएँ।
मिथ्यादर्शन कहलाती जो, आतम धर्म नशाएँ॥
सच्चे देव-शास्त्र-गुरुओं से, सम्यक् गुण झलकाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥
ॐ ह्रीं मिथ्यात्व दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २९॥

सम्यक् के ऊँचे आसन से, गिरकर जब तक प्राणी।
मिथ्या का दलदल ना पाएँ, वह सासादन वाणी॥

सासादन का पतन त्यागकर, सम्यक् गुण झलकाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥
ॐ ह्रीं सासादन दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३०॥

सम्यग्दर्शन मिथ्यादर्शन, हल्दी चूना जैसे।
मिलकर तत्त्व विषय खोते हैं, आतम झलके कैसे॥
मिश्र दशा की खिचड़ी तजकर, सम्यक् गुण झलकाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥
ॐ ह्रीं मिश्र दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३१॥

सच्चे देव-शास्त्र-गुरुओं की, करके सम्यक् श्रद्धा।
सम्यक् तो पा लिया परन्तु, मिली ना सुव्रत विद्या॥
अविरत वाला भाव त्याग कर, संयम गुण झलकाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥
ॐ ह्रीं अविरत दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३२॥

सम्यक् पाकर अणुव्रत लेकर, मोक्षमार्ग पर चालें।
लेकिन संयम धार सकें ना, महाव्रतों को ध्या लें॥
पूज्य देशसंयम के आगे, संयम गुण झलकाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥
ॐ ह्रीं देशसंयम दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३३॥

सम्यक् पाकर महाव्रती बन, व्रत निर्दोष सँभालें।
लेकिन प्रमाद हर न सकें तो, किंचित दोष लगा लें॥
महाव्रती संयम को धरकर, सारे दोष नशाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥
ॐ ह्रीं सकलसंयम दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३४॥

संयम धरकर प्रमाद हरकर, महाव्रतों को पालें।
तीन गुप्तियों को धारण कर, आतम ध्यान लगा लें॥
अप्रमत्त बनकर हरें प्रवृत्ति, कायोत्सर्ग लगाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥

ॐ ह्रीं प्रवृत्ति दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३५॥

ऐसे पहले कभी हुए ना, भाव अपूरव प्यारे।
ऐसे ही निर्मल भावों से, जो आतम शृंगारे॥
अपूर्वकरण के भाव सँभालें, ऐसे भाव सजाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥

ॐ ह्रीं अपूर्वकरण दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३६॥

अपने आतम भाव सजाकर, समानता को ध्याएँ।
ऐसे ही पवित्र भावों से, चेतन दोष नशाएँ॥
अनिवृत्तिकरण भावों से, चेतन को झलकाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥

ॐ ह्रीं अनिवृत्तिकरण दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३७॥

सूक्ष्म-सूक्ष्म अतिसूक्ष्म लोभ कर, ध्यानी मुद्रा धारें।
करके सूक्ष्म कषायें अपनी, सबको पार उतारें॥
सूक्ष्मसाम्पराय सम हम भी, खुद को सूक्ष्म बनाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मसाम्पराय दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३८॥

दूध उफनता जल की बूँदे, पाकर शीतल होता।
बढ़ते हुए मोह भावों से, जीव धर्म नित खोता॥
कर उपशांतमोह को साधक, निर्मोही बन जाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥

ॐ ह्रीं उपशांतमोह दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३९॥

मोह कर्म सब कर्म कराए, फिर भी है कमजोरा।
अष्टकर्म में सबसे पहले, नश जाए चितचोरा॥
क्षीणमोह का फल पाकर हम, श्रेणी पर चढ़ जाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥

ॐ ह्रीं क्षीणमोह गुणधारक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४०॥

कर्मों के संयोग योग से, भव संसार बढ़ाएँ।
धर्मों का संयोग प्राप्त कर, निज संसार नशाएँ॥
सयोगकेवली बनकर हम भी, प्रभु अर्हन्त कहाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥

ॐ ह्रीं संयोगकेवली गुणधारक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४१॥

राग भोग संयोग कर्म के, जल्दी त्यागें सारे।
शुद्ध चेतना पाने हम भी, योग निरोध सभारें॥
अयोगकेवली बनकर हम, सिद्ध अवस्था पाएँ।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, सुख समृद्धि पाएँ॥

ॐ ह्रीं अयोगकेवली गुणधारक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४२॥

चौदह मार्गणास्थान

(सखी)

गति चारों त्यागे स्वामी, पंचम गति के आसामी।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥

ॐ ह्रीं गति दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४३॥

तज पाँच इन्द्रियाँ पूरी, तुम बने अतीन्द्रिय शूरी।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥

ॐ ह्रीं इन्द्रिय दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४४॥

तज काय भरी दुख पीड़ा, पा बैठे आतम हीरा।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥
ॐ ह्रीं काय दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४५॥

तज सारे योग निराले, संयोग मिलें सुख वाले।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥
ॐ ह्रीं योग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४६॥

तज वेद-वेदना देखो, सिर प्रभु चरणों में टेको।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥
ॐ ह्रीं वेद दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४७॥

तज सभी कषाय विभावी, बन बैठे आत्म स्वभावी।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥
ॐ ह्रीं कषाय दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४८॥

संसार ज्ञान को त्यागे, निज ज्ञान प्राप्ति को भागे।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥
ॐ ह्रीं ज्ञान दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४९॥

तज सभी असंयम धारा, संयम से निज शृंगारा।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥
ॐ ह्रीं असंयम दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५०॥

दर्शन आकर्षण छोड़े, भव दर्शन से चित मोड़े।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥
ॐ ह्रीं दर्शन दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५१॥

लेश्या के रंग नशाए, निज उज्ज्वल चेतन पाए।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥
ॐ ह्रीं लेश्या दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५२॥

भव्यत्व भाव के त्यागी, हो मुक्तिवधू के रागी।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥

ॐ ह्रीं भव्यत्व दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५३॥

सम्यक्त्व साधना भाई, सो निज रमणी शरमाई।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५४॥

तज संज्ञी की भव तंगी, अध्यात्म मिला सब संज्ञी।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥

ॐ ह्रीं संज्ञी दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५५॥

आहार त्याग के सारे, रस चखा चेतना का रे।
श्री शान्तिनाथ निराले, हम शान्ति चाहने वाले॥

ॐ ह्रीं आहार दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५६॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

प्रभु उच्च हो सर्वोच्च हो, जग मान्य हो अरिहंत हो।
तज के अशान्ति शोर को, सुख शान्ति दाता मंत्र हो॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं षट्पंचाशत् गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री षट्पंचाशत् गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

८. श्री शान्तिनाथ विधान (६४-अर्घ्य)

चौंसठ ऋद्धि वर्णन

(विष्णु)

बुद्धि ऋद्धि के अठारह भेद

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, अवधिज्ञान पहला।
रूपी पुद्गल महास्कंध तक, जाने जो उजला॥
तीनों अवधिज्ञान पूजकर, आत्म चखें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अवधि-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १॥

ढाईद्वीप में मूर्त द्रव्य जो, जीवों के मन में।
ज्ञान मनःपर्यय वह जाने, रमता चेतन में॥
दोनों तरह मनःपर्यय भज, मोक्ष मिले आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं मनःपर्यय-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २॥

घाति हरण कर बने केवली, अद्भुत ज्ञान गहे।
सभी द्रव्य गुण पर्यायों को, युगपत् जान रहे॥
स्व-पर प्रकाशी केवलज्ञानी, अर्हत् हों आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं केवल-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३॥

कोष्ठों में ज्यों मिले धान्य हों, ऐसे द्रव्य मिले।
तो भी अलग-अलग जो जाने, निज सुख को मचले॥
कोष्ठ-बुद्धि को आत्मशुद्धि को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं कोष्ठ-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४॥

एक बीज से बढ़े फसल ज्यों, एक शब्द से ज्ञान।
संत तपस्या कर हो ज्ञानी, पा लेते निर्वाण॥
बीज-बुद्धि की महाऋद्धि से, मुक्ति मिले आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं बीज-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५॥

गुरु से मात्र एक पद पढ़कर, श्रुत समझें पूरा।
पदानुसारिणी-बुद्धि ऋद्धि वह, धारें मुनि शूरा॥
सभी भेद इसके भज पाएँ, भेद ज्ञान आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पदानुसारिणी-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६॥

नर पशुओं के मिश्र वचन सुन, अलग-अलग बोलें।
संभिन्नस्रोतृ-बुद्धि ऋद्धि धर, ज्ञान चक्षु खोलें॥
जड़-चेतन का बन्ध मिटाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं संभिन्नस्रोतृ-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७॥

पर उपदेश बिना अपने से, होकर वैरागी।
करें तपस्या तो हो जाती, मुक्तिवधू रागी॥
यह प्रत्येक-बुद्धि ऋद्धि भज, ध्यानी हों आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८॥

बन के नगन दिगम्बर मुनि जो, करें तपस्याएँ।
सुरगुरु परमत सब पर जय कर, हरें समस्याएँ॥
तत्त्वज्ञान वादित्वऋद्धि से, हम पाएँ आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं वादित्व-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९॥

दसपूर्वों को ध्याकर तपसी, अन्तर्मुखी हुए।
तो विद्याएँ दिव्य शक्तियाँ, आकर पाँव छुए॥
जिन विद्या से निज विद्या को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दशपूर्वित्व-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०॥

चौदह पूर्वों के ज्ञानी हो, तजें मान ज्वाला।
तभी मुक्ति नत नयना होकर, कर ले वरमाला॥
चौदह राजू उच्च पहुँचने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं चौदहपूर्वित्व-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ११॥

अंग भौम आदिक ज्योतिष के, आठ निमित्तों से।
भविष्य में क्या होने वाला, कहते शब्दों से॥
यह अष्टांगनिमित्त हम पूजें, उज्ज्वल हों आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्त-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १२॥

नव योजन सीमा के बाहर, स्पर्शन करना।
फिर भी निज का स्पर्शन कर, आतम में रमना॥
दूर स्पर्शत्व ऋद्धि भजें हम, छुएँ मुक्ति आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शत्व-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १३॥

नव योजन की मर्यादा से, बाहर रस चख लें।
शुद्धातम में लीन हुए तो, आतमरस चख लें॥
दूरास्वादन ऋद्धि भजें हम, मिले स्व-रस आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दूरस्वादित्व-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १४॥

नव योजन की सीमा से भी, बाह्य सूँघ लेते।
निज आतम के पुष्प खिला के, मोक्ष घूम लेते॥
भजें दूरघ्राणत्व ऋद्धि हम, लें स्वगंध आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्व-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १५॥

सैंतालीस हजार वा दो सौ, कुल त्रेसठ योजन।
इससे दूर दृश्य के दृष्टा, कर लें निज शोधन॥
ऋद्धि दूरदर्शित्व भजें हम, दर्शन हों आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दूरदर्शित्व-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १६॥

बारह योजन के बाहर भी, सुनने की क्षमता।
दूरश्रवण की ऋद्धि प्राप्त कर, निज की उद्यमता॥
हम भक्तों की अर्जी सुनकर, तारो तो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्व-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १७॥

बिना पढ़े ही सकल जिनागम, जो ऋषि खुद समझें।
कर्मों के सिद्धांत समझ के, जग में ना उलझें॥
ऋषिवर प्रज्ञाश्रमण हमें भी, प्रज्ञा दें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमणत्व-बुद्धि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १८॥

चारण ऋद्धि के नौ भेद

नव प्रकार चारणऋद्धि में, जल चारण पहले।
जल जीवों को कष्ट दिए बिन, जल पर संत चले॥
जलचारण की ऋद्धि पूजकर, प्यास मिटे आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं जलचारण-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १९॥

जंघा बल से धरती तल से, चउ अंगुल ऊँचे।
चाहें तो योजन बहु योजन, क्षण भर में पहुँचे॥
जंघाचारण ऋद्धि पूजकर, उन्नति हो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं जंघाचारण-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २०॥

नभ में चलें किसी आसन से, जिन आज्ञा पालें।
भक्तों का कल्याण करें ऋषि, निज आतम ध्या लें॥
ऋद्धि नभश्चारण को भजकर, सिद्धासन आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं नभश्चारण-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २१॥

मकड़ी के जालों पर चलना, बिन बाधाओं के।
तन्तु न टूटे जन्तु न रूठे, मुनि ऋषिराजों से॥
ऋद्धि तन्तुचारण भजकर, जन्तु सुखी आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं तन्तुचारण-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २२॥

पुष्पों पर ऋषि कभी न चलते, किंतु अगर चलते।
तो जीवों को दुख ना होता, कभी न मर सकते॥
ऋद्धि पुष्पचारण को भजकर, पुष्प खिलें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पुष्पचारण-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २३॥

पत्रों पर ऋषियों को चलना, इष्ट नहीं होता।
अगर चलें तो उन जीवों को, कष्ट नहीं होता॥

ऋद्धि पत्रचारण को भजकर, मित्र बनें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पत्रचारण-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २४॥

बीजों पर चलकर जीवों को, अगर न कष्ट हुए।
ऋद्धि बीजचारण को भजकर, सुखिया भक्त हुए॥
मोक्षबीज पाने हम पूजें, बीज फले आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं बीजचारण-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २५॥

श्रेणी पर चल श्रेणी माडें, किन्तु न जीव मरें।
श्रेणीचारण ऋद्धि भजकर, आतम भी निखरें॥
हम भी ऋषियों की श्रेणी में, आ जाएँ आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रेणीचारण-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २६॥

अग्निशिखा पर चलने पर भी, मरें नहीं प्राणी।
फिर भी ध्यान-अग्नि से ऋषिवर, बनते कल्याणी॥
ऋद्धि अग्निचारण को भजकर, कर्म जलें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अग्निचारण-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २७॥

विक्रिया ऋद्धि के ग्यारह भेद

ग्यारह विध की विक्रिया ऋद्धि, अणिमा है पहली।
परमाणु सी काया जिनकी, छिद्रों से निकली॥
अणिमा-ऋद्धि हम भी भजकर, सूक्ष्म बनें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अणिमा-विक्रिया-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २८॥

महादेह मेरु जैसी कर, जग के कष्ट हरें।
विष्णुकुमार सरीखे ऋषिवर, महिमा रूप धरें॥
महिमा-ऋद्धि हम भी भजकर, महा बनें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं महिमा-विक्रिया-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २९॥

करें पवन सा हल्का तन फिर, हल्का करते मन।
आतम हल्का करके पाए, सुख का मोक्ष भवन॥
लघिमा-ऋद्धि हम भी भजकर, लघु होवें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं लघिमा-विक्रिया-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३०॥

मेरु से भी भारी अपनी, काया को करना।
ऐसी गरिमा पाकर हमको, आत्म मुक्त करना॥
गरिमा-ऋद्धि हम भी भजकर, गुणी बनें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं गरिमा-विक्रिया-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३१॥

भू पर रहकर सूरज चंदा, जो ऋषिवर छू लें।
आत्म गुणों में घुलें मिलें तो, मुक्ति चरण छू लें॥
प्राप्ति-ऋद्धि को करके नमोऽस्तु, भव समाप्ति आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं प्राप्ति-विक्रिया-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३२॥

जल में थल सम थल में जल सम, जो ऋषि खेल सकें।
तरह-तरह की देह बना कर, भव की जेल तजें॥
भजें यही प्राकाम्य-ऋद्धि हम, देह तजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं प्राकाम्य-विक्रिया-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३३॥

महातपस्वी महामनस्वी, सब जग को जीते।
निर्मोही सबका मन मोहें, निजरस को पीते॥
हम ईशत्व-ऋद्धि को पूजें, ईश बनें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं ईशत्व-विक्रिया-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३४॥

तप का ऐसा प्रभाव हो कि, सब जग वश में हो।
पर ऋषिवर निज-वश होते सो, ना पर-वश में हो॥
वशित्व-ऋद्धि को भजकर हम, निजवश हों आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं वशित्व-विक्रिया-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३५॥

पर्वत चट्टानें भी जिनको, रोक नहीं पाते।
बिना खेद के बिना छेद के, संत पार जाते॥
पूजें अप्रतिघात-ऋद्धि हम, निर्बाधा आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अप्रतिघात-विक्रिया-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३६॥

दीक्षा लेकर तप करके जो, हो जाते अदृश्य।
आतम के जो दृश्य देखकर, उज्ज्वल करें भविष्य॥
अंतर्धान-ऋद्धि हम भजकर, शिष्य बनें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अंतर्धान-विक्रिया-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३७॥

तप के प्रभाव से मनवांछित, तन का रूप करें।
कामरूपिणी इस विद्या से, दुख का कूप हरें॥
कामरूप को करके नमोऽस्तु, काम तजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं कामरूपित्व-विक्रिया-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३८॥

तप ऋद्धि के सात भेद

तपो ऋद्धि के सात भेद में, प्रथम उग्रतप हों।
दीक्षा से समाधि तक बहुविध, जिसमें अनशन हों॥
उग्र भाव तज उग्रऋद्धि भज, मिले शांति आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं उग्रतप-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३९॥

तरह-तरह उपवास करें पर, दुर्बल ना होते।
किन्तु देह दिन प्रतिदिन चमके, पाप तिमिर खोते॥
ऋद्धि दीप्ततप भज हम पाएँ, आत्म ज्योति आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दीप्ततप-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४०॥

तप से भोजन यों सूखे ज्यों, तप्त लौह पर जल।
अतः नहीं मल मूत्र हुए सो, पाएँ मोक्षमहल॥
ऋद्धि तप्ततप हम भी पूजें, शीतल हों आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं तप्ततप-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४१॥

महा-महा उपवास करें जो, सिंहनिष्क्रीड़न से।
फिर भी त्रसनाली के ज्ञाता, मिलते चेतन से॥
यही महातपऋद्धि भजें हम, मिले शान्ति आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं महातप-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४२॥

रोग व्यथा हो तन में फिर भी, घोर तपा करसी।
विश्वशांति करने को जिनकी, खूब कृपा बरसी॥
भजें घोरतप ऋद्धि भक्त हम, हों निरोग आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं घोरतप-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४३॥

सिंधु सुखा दें लोक पलट दें, तप बल के द्वारा।
किन्तु अहिंसक करें न यों सो, जग पूजे सारा॥
घोरपराक्रम ऋद्धि भजें हम, ऊर्ध्व वसें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं घोरपराक्रमतप-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४४॥

दुनियाँ की नारी त्यागें पर, मुक्तिवधू रागी।
डिगा न सकते जगत प्रलोभन, जय हो! वैरागी॥
अघोर-ब्रह्मचर्य हम पूजें, मंगल हों आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचारित्वतप-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४५॥

बलऋद्धि के तीन भेद

बल ऋद्धि के तीन भेद में, प्रथम मनोबल है।
जिससे ऋषि बस एक घड़ी में, जिनश्रुत को मथ लें॥
ऋद्धि मनोबल भजकर हम हों, विजित मना आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं मनोबल-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४६॥

द्वादशांग को एक घड़ी में, जो पूरा पढ़ लें।
महातपस्वी इन ऋषियों के, चलो पैर पड़ लें॥
ऋद्धि वचनबल भजकर होते, वचन सिद्ध आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं वचनबल-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४७॥

तप के प्रभाव से उँगली पर, लोक जमा लेवें।
कायोत्सर्ग वर्ष-भर करके, मुक्ति रिझा लेवें॥
ऋद्धि कायबल भजकर हम भी, हों विदेह आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं कायबल-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४८॥

औषधि ऋद्धि के आठ भेद

आठ भेद औषध ऋद्धि के, है आमर्ष प्रथम।
जिनका तन छू छूमंतर हों, रोग व्याधियाँ गम॥
आमर्ष-औषधि को भजकर के, निज छू लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४९॥

खेल्ल-औषधि ऋद्धिधर के, लार-नाक मल को।
इत्यादि छू पवन चले तो, हरे रोग दुख को॥
ऐसी ऋद्धि पूज-पूज हम, मल हर लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं खेल्लौषधि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५०॥

ऋषि के तन के बाह्य मैल जो, तप से औषध हों।
जिनको छूकर टलें व्याधियाँ, सुख से प्रोषध हों॥
जल्ल-औषधि भजकर तैरें, भव जल हम आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं जल्लौषधि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५१॥

दाँत कान आदिक मल तप से, औषध निश्चित हों।
इनको छूकर भक्त जनों के, कार्य सुनिश्चित हों॥
मल्ल-औषधि भज हम जीतें, मोह मल्ल आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं मल्लौषधि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५२॥

ऋषि के मल मूत्रादिक तप से, दवा हुए आहा।
जिसको छूकर पवन चले तो, रोग करे स्वाहा॥
विप्रुष-औषधि ऋद्धि भजें हम, निर्मल हों आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं विप्रुषौषधि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५३॥

तपसी की सम्पूर्ण देह यह, जब औषध होती।
जिसको छू के पवन चले तो, रोग व्यथा खोती॥
सर्व-औषधि ऋद्धि पूज हम, सर्व सुखी आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सर्वौषधि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५४॥

तप से जिनकी वाणी अमृत, जैसी हो जाती।
जहर उतर जाते जिसको सुन, निज को चमकाती॥
मुखनिर्विष यह ऋद्धि पूजकर, जहर नशे आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं मुखनिर्विषौषधि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५५॥

तप के कारण जिनकी नजरें, अमृत हो जाएँ।
जहाँ पड़ें नजरें तो विष खुद, निर्विष हो जाएँ॥
दृष्टिनिर्विष ऋद्धि भजें हम, निर्विकार आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दृष्टिनिर्विषौषधि-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५६॥

रस ऋद्धि के छह भेद

रस ऋद्धि के छह भेदों में, आशीर्विष पहला।
मर जा कहने पर मर जाएँ, कहें न करें भला॥
आशीर्विष को करके नमोऽस्तु, भला करें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं आशीर्विष-रस-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५७॥

कोपदृष्टि जिन पर कर देते, वो तत्काल मरें।

परम दयालु करें ना यों सो, हम त्रयकाल भजें॥
दृष्टिर्विष गुरु हरें समस्या, सुख देवें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दृष्टिर्विष-रस-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५८॥

अरस भोज्य कर-पात्रों में आ, तप से सरस हुए।
भोजन त्याग भजन करते ऋषि, सो हम चरण छुए॥
क्षीरस्रावि रस-ऋद्धि पूजकर, क्षीरामृत आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावि-रस-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५९॥

कटुक भोज्य भी पाणि-पात्र में, तप से मधुर हुए।
भोजन रस के त्यागी ऋषिवर, आतम रसिक हुए॥
मधुस्रावी रस-ऋद्धि पूजकर, निजरस हों आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं मधुस्रावि-रस-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६०॥

सरस-अरस सब भोज्य करों में, अमृत स्वाद झरे।
तप से ऋषि यह गुण पाएँ पर, निज रस चाह रहे॥
अमृतस्रावि ऋद्धि पूजकर, ज्ञानामृत आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अमृतस्रावि-रस-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६१॥

रूखा-सूखा कटुक भोज्य भी, घृत सम हो तप से।
भोज्य रसों के त्यागी ऋषि को, हम खोजें कब से॥
सर्पिस्रावि ऋद्धि पूज हम, पुष्ट बनें अहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सर्पिस्रावि-रस-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६२॥

अक्षीण ऋद्धि के दो भेद

दो विध की अक्षीणऋद्धि में, पहला यह कहता।
मुनि चौके में चक्रि-सैन्य को, भोज्य न कम पड़ता॥
यह अक्षीण-महानस ऋद्धि, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६३॥

मुनि-आसन पर चक्रि-सैन्य, भी यदि चाहे रुकना।
तब तो सुख से सब रुक जाएँ, हम चाहें झुकना॥
यह अक्षीण-महालय ऋद्धि, हम ध्याएँ आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अक्षीण-महालय-ऋद्धीश्वर श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६४॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

अपमान असफलता हरें, दें ऋद्धि-सिद्धि सम्पदा।
उपसर्ग संकट विघ्न हर्त्ता, टालते हर आपदा॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं चतुषष्टि गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री चतुषष्टि गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

९. श्री शान्तिनाथ विधान (७२-अर्घ्य)

बहत्तर आस्त्रव के भेद

पाँच मिथ्यात्व

(सखी)

विपरीत नाम की श्रद्धा, दे भव भटकन दुख मिथ्या।
श्री शान्तिनाथ दुख हारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं विपरीत दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १॥

एकांत नाम की श्रद्धा, दे पतन कलह भय मिथ्या।
श्री शान्तिनाथ दुख हारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं एकांत दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २॥

संशय नामक जो श्रद्धा, वो दे दुविधा भव मिथ्या।
श्री शान्तिनाथ दुख हारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं संशय दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३॥

जो विनय नाम की श्रद्धा, वो दे मृत जैसा मिथ्या।
श्री शान्तिनाथ दुख हारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं विनय दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४॥

अज्ञान नाम की श्रद्धा, वो दे अपयश मद मिथ्या।
श्री शान्तिनाथ दुख हारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं अज्ञान दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५॥

बारह अविरति

(हाकलिका)

स्पर्शन के दास बने, तो कैसे संन्यास बने।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रिय दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६॥

रसना-रस के दास बने, तो कैसे संन्यास बने।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रिय दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७॥

घ्राण विषय के दास बने, तो कैसे संन्यास बने।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८॥

चक्षु विषय के दास बने, तो कैसे संन्यास बने।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रिय दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९॥

कर्ण विषय के दास बने, तो कैसे संन्यास बने।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०॥

मन विषयों के दास बने, तो कैसे संन्यास बने।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥

ॐ ह्रीं मन दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ११॥

पृथ्वीकायिक रक्षा ना, संयम धर्म सुरक्षा ना।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥

ॐ ह्रीं पृथ्वी दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १२॥

अग्निकायिक रक्षा ना, संयम धर्म सुरक्षा ना।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥

ॐ ह्रीं अग्नि दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १३॥

जलकायिक की रक्षा ना, संयम धर्म सुरक्षा ना।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥

ॐ ह्रीं जल दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १४॥

वायुकायिक रक्षा ना, संयम धर्म सुरक्षा ना।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं वायु दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १५॥

वनस्पति की रक्षा ना, संयम धर्म सुरक्षा ना।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं वनस्पति दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १६॥

त्रसकायिक की रक्षा ना, संयम धर्म सुरक्षा ना।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं त्रस दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १७॥

पंद्रह प्रमाद

स्पर्शन के दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं स्पर्शन दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १८॥

जिह्वा वाले दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं रसना दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १९॥

नासा वाले दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥२१ऽ
ॐ ह्रीं घ्राण दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २०॥

चक्षु वाले दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं चक्षु दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २१॥

कर्णों वाले दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं कर्ण दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २२॥

स्त्रीकथा के दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं स्त्रीकथा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २३॥

राजकथा के दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं राजकथा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २४॥

राष्ट्रकथा के दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं राष्ट्रकथा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २५॥

भोजकथा के दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं भोजनकथा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २६॥

क्रोध कर्म के दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं क्रोध दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २७॥

मान कर्म के दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं मान दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २८॥

माया कर्म के दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं माया दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २९॥

लोभ कर्म के दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं लोभ दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३०॥

निद्रा कर्म के दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं निद्रा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३१॥

स्नेह कर्म के दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं स्नेह दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३२॥

पच्चीस कषाय

अनन्तानुबंधी क्रोध हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधीक्रोध दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३३॥

अनन्तानुबंधी मान हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधीमान दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३४॥

अनन्तानुबंधी माया हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधीमाया दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३५॥

अनन्तानुबंधी लोभ हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधीलोभ दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३६॥

अप्रत्याख्यान क्रोध हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानक्रोध दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३७॥

अप्रत्याख्यान मान हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानमान दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३८॥

अप्रत्याख्यान माया हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानमाया दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३९॥

अप्रत्याख्यान लोभ हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानलोभ दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४०॥

प्रत्याख्यान क्रोध हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानक्रोध दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४१॥

प्रत्याख्यान मान हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानमान दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४२॥

प्रत्याख्यान माया हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानमाया दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४३॥

प्रत्याख्यान लोभ हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानलोभ दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४४॥

संज्वलन क्रोध हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोध दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४५॥

संज्वलन मान हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं संज्वलनमान दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४६॥

संज्वलन माया हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं संज्वलनमाया दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४७॥

संज्वलन लोभ हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं संज्वलनलोभ दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४८॥

हास्य कर्म का दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं हास्य दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४९॥

रति कर्म का दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं रति दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५०॥

अरति कर्म का दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अरति दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५१॥

शोक कर्म का दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं शोक दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५२॥

भय कर्मों का दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं भय दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५३॥

जुगुप्सा का दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं जुगुप्सा दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५४॥

स्त्रीवेद का दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं स्त्रीवेद दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५५॥

पुरुष वेद का दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं पुरुषवेद दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५६॥

नपुंसक वेद का दोष हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं नपुंसकवेद दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५७॥

पंद्रह योग

सत्य मनो का योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं सत्य-मनोयोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५८॥

असत्य मनो का योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं असत्य-मनोयोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५९॥

उभय मनो का योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं उभय-मनोयोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६०॥

अनुभय मनो का योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अनुभय-मनोयोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६१॥

सत्य वचन का योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं सत्य-वचनयोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६२॥

असत्य वचन का योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं असत्य-वचनयोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६३॥

उभय वचन का योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं उभय-वचनयोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६४॥

अनुभय वचन का योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अनुभय-वचनयोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६५॥

औदारिक तन योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं औदारिक-काययोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६६॥

औदारिक मिश्र योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं औदारिकमिश्र-काययोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६७॥

वैक्रियिक तन योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं वैक्रियिक-काययोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६८॥

वैक्रियिक मिश्र योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं वैक्रियिकमिश्र-काययोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६९॥

आहारक का योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥
ॐ ह्रीं आहारक-काययोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७०॥

आहारक मिश्र योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥

ॐ ह्रीं आहारमिश्र-काययोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७१॥

कार्मण का योग हरें, आतम का जयघोष करें।
शान्तिनाथजी दीक्षा दो, हमको शान्ति शिक्षा दो॥

ॐ ह्रीं कार्मण-काययोग दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७२॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

बनके निरास्त्रव कर्म तजने, हेतु सारे तज दिए।
सो शान्तिनाथ जिनेन्द्र तुमको, भक्त सारे भज लिए॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं द्विसप्तति गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री द्विसप्तति गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

**गुणालय में
एकाध दोष कभी
तिल सा लगे**

१०. श्री शान्तिनाथ विधान (८०-अर्घ्य)

पाँच महाव्रत

(सखी)

व्रत पालें पूर्ण अहिंसा, सो टलें पाप सब हिंसा।
श्री शान्तिप्रभु उपकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं अहिंसा-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १॥

व्रत पालें सत्य सहाई, सो हटतीं झूठ बुराई।
श्री शान्तिप्रभु उपकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं सत्य-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २॥

व्रत पालें अचौर्य आदि, सो टलें चोरियाँ व्याधि।
श्री शान्तिप्रभु उपकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं अचौर्य-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३॥

व्रत ब्रह्मचर्य गुण पालें, सो काम कुशील नशा लें।
श्री शान्तिप्रभु उपकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४॥

व्रत परिग्रह त्याग सँवारें, सो नैया पार उतारें।
श्री शान्तिप्रभु उपकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं अपरिग्रह-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५॥

पाँच समिति

भू चार हाथ लख चालें, यह ईर्या समिति पालें।
श्री शान्तिप्रभु उपकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वगमन-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६॥

हित-मित-प्रिय वाणी बोलें, भाषा समिति मुख खोलें।
श्री शान्तिप्रभु उपकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं हितकरवचन-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७॥

लें एक बार दिन भुक्ति, यह धरें एषणा समिति।
श्री शान्तिप्रभु उपकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥
ॐ ह्रीं आत्मरसिक-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८॥

लें रखें देख हर कण-कण, समिति आदान निक्षेपण।
श्री शान्तिप्रभु उपकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥
ॐ ह्रीं अन्तर-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९॥

निर्दोष मूत्र मल तजना, व्युत्सर्ग समिति से भजना।
श्री शान्तिप्रभु उपकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥
ॐ ह्रीं शुद्ध-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०॥

तीन गुप्ति

मन की सब त्याग कथाएँ, मुनि आतम गुफा सजाएँ।
श्री शान्तिप्रभु उपकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥
ॐ ह्रीं मनोविजय-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ११॥

वचनों की त्याग विकलता, मुनि आतम रूप सँभलता।
श्री शान्तिप्रभु उपकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥
ॐ ह्रीं वचनविजय-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १२॥

तन की सब त्याग कियाएँ, मुनि कायोत्सर्ग लगाएँ।
श्री शान्तिप्रभु उपकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥
ॐ ह्रीं कायविजय-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १३॥

दस धर्म

(चौपाई)

क्रोध कषाय त्यागना पूरा, उत्तम क्षमा धारते शूरा।
शान्तिनाथजी शान्ति प्रदाता, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथा॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १४॥

आठ मदों का मान त्यागना, उत्तम मार्दव धर्म धारना।
शान्तिनाथजी शान्ति प्रदाता, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथा॥
ॐ ह्रीं उत्तममार्दव-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १५॥

मायाचार कपट छल त्यागें, उत्तम आर्जव से अनुरागें।
शान्तिनाथजी शान्ति प्रदाता, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथा॥
ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जव-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १६॥

अशुचि अपावन लोभ त्यागना, निर्मल उत्तम शौच धारना।
शान्तिनाथजी शान्ति प्रदाता, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथा॥
ॐ ह्रीं उत्तमशौच-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १७॥

राग-द्वेष तज झूठ त्यागना, सम्यक् उत्तम सत्य धारना।
शान्तिनाथजी शान्ति प्रदाता, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथा॥
ॐ ह्रीं उत्तमसत्य-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १८॥

इन्द्रिय मन को वश में रखना, उत्तम संयम गुण से सजना।
शान्तिनाथजी शान्ति प्रदाता, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथा॥
ॐ ह्रीं उत्तमसंयम-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १९॥

भव संसार ताप को हरना, कर्मों के क्षय को तप करना।
शान्तिनाथजी शान्ति प्रदाता, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथा॥
ॐ ह्रीं उत्तमतप-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २०॥

दान चार प्रकार का देना, उत्तम त्याग धर्म धर लेना।
शान्तिनाथजी शान्ति प्रदाता, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथा॥
ॐ ह्रीं उत्तमत्याग-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २१॥

पर पदार्थ का राग त्यागना, उत्तम आकिंचन्य धारना।
शान्तिनाथजी शान्ति प्रदाता, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथा॥
ॐ ह्रीं उत्तम-आकिञ्चन्य-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २२॥

स्त्री मात्र तज निज में रमना, उत्तम ब्रह्मचर्य से सजना।
शान्तिनाथजी शान्ति प्रदाता, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथा॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २३॥

बारह भावना (अनुप्रेक्षा) (दोहा)

इस अनित्य संसार के, रिश्ते नाते छोड़।
शान्तिप्रभु से शीघ्र हो, हम सबका गठ-जोड़॥

ॐ ह्रीं नित्य-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २४॥

अशरण भव वन में नहीं, ओर छोर निज गाँव।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, चरण शरण की छाँव॥

ॐ ह्रीं शरण-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २५॥

चतुर्गति संसार में, दुख का है भण्डार।
शान्तिप्रभु जी मुक्ति दो, हो सबका उद्धार॥

ॐ ह्रीं मोक्ष-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २६॥

जीव अकेले भोगते, जनम-मरण संसार।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, निज एकत्व विचार॥

ॐ ह्रीं एकत्व-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २७॥

जब यह तन भी अन्य है, क्यों फिर करो न ज्ञान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हमें भेद-विज्ञान॥

ॐ ह्रीं आत्म-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २८॥

सप्त धातु का पिण्ड है, अशुचि तन अपवित्र।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हमको धर्म पवित्र॥

ॐ ह्रीं निर्मल-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २९॥

मन-वच-तन से जीव के, आस्रव होते कर्म।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हमें निरास्रव धर्म॥

ॐ ह्रीं मुक्त-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३०॥

कर्मों का आस्रव तजें, संवर की ले नाव।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हमें मोक्ष का गाँव॥
ॐ ह्रीं निर्बन्ध-स्वभावी स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३१॥

करें कर्म की निर्जरा, तजें पाप का भार।
शान्तिप्रभु जी कीजिए, हम भक्तों को पार॥
ॐ ह्रीं निष्कर्म-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३२॥

पुरुष रूप इस लोक में, अब ना भटकें दास।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, अब लोकाग्र निवास॥
ॐ ह्रीं लोक-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३३॥

सम्यग्दर्शन-ज्ञान वा, है दुर्लभ चारित्र।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, दीक्षा परम पवित्र॥
ॐ ह्रीं बोधि-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३४॥

धर्म रहा जिन धर्म बस, शेष पाप विस्तार।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हमें धर्म की धार॥
ॐ ह्रीं धर्म-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३५॥

बाईस परिषह (हाकलिका)

भूख व्याधियाँ तजने को, क्षुधा परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं क्षुधा-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३६॥

प्यास आदि दुख तजने को, तृषा परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं तृषा-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३७॥

काय वेदना तजने को, शीत परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं शीत-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३८॥

गर्मी के दुख तजने को, उष्ण परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं उष्ण-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३९॥

दंशमशक दुख तजने को, घोर परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं दंशमशक-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४०॥

देह दोष सब तजने को, नाग्न्य परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं नाग्न्य-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४१॥

अप्रीति को तजने को, अरति परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं अरति-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४२॥

मोह भाव को तजने को, स्त्री परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं स्त्री-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४३॥

खेद-खिन्नता तजने को, चर्या परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं खेद-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४४॥

गमन-आगमन तजने को, निषद्या परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं निषद्या-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४५॥

निद्रा विजयी बनने को, शय्या परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं निद्रा-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४६॥

शब्द बात दुख तजने को, आक्रोश परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं आक्रोश-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४७॥

प्रहार आदि दुख तजने को, वध का परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं वध-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४८॥

वस्तु माँगना तजने को, याचना परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं याचना-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४९॥

भिक्षा के दुख तजने को, अलाभ परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं अलाभ-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५०॥

आधि-व्याधि दुख तजने को, रोग परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं रोग-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५१॥

तृणस्पर्श दुख तजने को, महा परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं तृणस्पर्श-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५२॥

स्नान आदि से बचने को, मल का परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं मल-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५३॥

सत्कार पुरस्कार तजने को, कठिन परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं सत्कार-पुरस्कार-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५४॥

ज्ञान मान ना करने को, प्रज्ञा परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं प्रज्ञा-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५५॥

बुद्धिमंदता तजने को, अज्ञान परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं अज्ञान-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५६॥

जीवन सार्थक करने को, अदर्शन परिषह सहने को।
शान्तिप्रभु जी दो अशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं अदर्शन-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५७॥

पाँच चारित्र (जोगीरासा)

सब जीवों में समानता का, भाव धारना प्यारा।
लेकर संयम भाव नाव को, भव जल तैरें खारा॥
आर्त्त रौद्र की पीड़ा तज के, सामायिक को ध्याएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥
ॐ ह्रीं सामायिक-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५८॥

लिए मूलगुण उत्तरगुण जो, यथाशक्ति वो पालें।
अगर दोष कुछ लग जाएँ तो, करके छेद सँभालें॥
छेदोपस्थापन से हम भी, निज चारित्र सजाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥
ॐ ह्रीं छेदोपस्थापना-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५९॥

महाव्रतों का पालन करने, चलने की हो बुद्धि।
किन्तु जीव हिंसा ना होवे, है परिहार विशुद्धि॥
यह चारित्र धारकर हम भी, चेतन बाग खिलाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥
ॐ ह्रीं परिहारविशुद्धि-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६०॥

कायोत्सर्ग ध्यान मुद्रा में, अगर लीन हो जाएँ।
तभी कषायें क्रमशः कम-कम, साधक की हो जाएँ॥
चरित सूक्ष्म इस साम्पराय से, आतम शुद्ध बनाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मसाम्पराय-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६१॥

जैसे आतम शुद्ध जीव या, सिद्ध अवस्था होती।
जिसे प्राप्त कर भव दुख छूटे, जले ज्ञान चित-ज्योति॥
यथाख्यात चारित्र इसी से, अर्हत सिद्ध कमाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं यथाख्यात-स्वभावी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६२॥

अठारह दीक्षा के अयोग्य स्थान

दीक्षा लेना खेल नहीं हैं, दुनियाँ में बच्चों का।
तेल निकल आता है तप में, सच! अच्छे-अच्छों का॥
जिनदीक्षा अतिबाल न धारें, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं बालदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६३॥

वृद्ध-बुढ़ापा है दुखदायी, सबको खूब सताए।
लार टपकती गर्दन हिलती, तृष्णा नार लुभाए॥
जिनदीक्षा अतिवृद्ध न पालें, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं वृद्धदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६४॥

आग राख के अंदर-अंदर, खूब धधकती जैसे।
भोग वासना नुपंसकों में, सदा सुलगती वैसे॥
जिनदीक्षा न धरें नपुंसक, सो यह दोष नशाएँ।

शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं नपुंसकदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६५॥

तन मन वचनों के रोगी जन, बन सकते हैं भोगी।
लेकिन संयम पाल न सकते, बन ना सकते योगी॥
जिनदीक्षा के अयोग्य रोगी, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं रोगदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६६॥

अंगहीन न होते भगवन, नहीं बिम्ब मन भाएँ।
फिर धार्मिक अनुयायी कैसे, अंगहीन हो जाएँ॥
जिनदीक्षा ना अंगहीन की, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं विकलांगदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६७॥

कायर या भयभीत लोग जब, ढंग से ना जी पाएँ।
फिर कैसे वे व्रत पालेंगे, कैसे ध्यान लगाएँ॥
जिनदीक्षा के अयोग्य कायर, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं भयदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६८॥

मंदबुद्धि जड़बुद्धि जीव की, दुनियाँ हँसी उड़ाए।
फिर वैसे वह मोक्षमार्ग में, अपनी लाज बचाए॥
जिनदीक्षा जड़बुद्धि ना धारें, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं मंदबुद्धिदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६९॥

चोर-डाकुओं को यह दुनियाँ, बुरी नजर से देखे।
अगर धार लें जिनदीक्षा तो, जग कैसे सिर टेके॥

जिनदीक्षा के योग्य न डाकू, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं चौर्यदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७०॥

शत्रु शत्रुता कोई न चाहें, प्रेम भाव सब चाहें।
राजशत्रु फिर किसे सुहाएँ, जो दें दुख की राहें॥
जिनदीक्षा ना राजशत्रु लें, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं शत्रुदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७१॥

जो विक्षिप्त जीव होते वो, स्वयं सँभल ना पाएँ।
व्रत संयम चारित्र धर्म फिर, वे कैसे अपनाएँ॥
जिनदीक्षा विक्षिप्त न धरते, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं विक्षिप्तदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७२॥

स्वच्छ साफ सुथरी राहों पर, अंधे डगमग चालें।
फिर कैसे वे मोक्षमार्ग में, रत्नत्रय को पालें॥
जिनदीक्षा के योग्य अंध ना, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं अंधदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७३॥

अगर दास संन्यास धार ले, तो संन्यास रुकेगा।
जिनशासन में दाग लगेगा, ऊँचा कौन उठेगा॥
जिनदीक्षा के योग्य दास ना, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं भृत्यदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७४॥

दुर्जन धूर्त-बुद्धि प्राणी जब, सब जन को भटकाएँ।

मोक्षमार्ग में फिर कैसे वे, निज-पर पार लगाएँ॥
जिनदीक्षा के योग्य धूर्त ना, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं धूर्तदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७५॥

पागल मूढ़ निपट अज्ञानी, पत्थर नाँव सरीखे।
खुद डूबें वा हमें डुबाएँ, आगम से यह सीखें॥
जिनदीक्षा के योग्य मूढ़ ना, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं मूढ़दोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७६॥

कर्जदार पर इस दुनियाँ को, होता नहीं भरोसा।
संयम के सिंहासन से यह, सबको देगा धोखा॥
जिनदीक्षा कर्जदार लें, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं ऋणदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७७॥

करके दोष पलायन कर्त्ता, भागमभाग मचाएँ।
फिर कैसे वह संयम में थिर, होकर ध्यान लगाएँ॥
जिनदीक्षा ना धरें पलायक, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं पलायनदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७८॥

गर्भ धारकर सहज भाव से, यहाँ-वहाँ ना डोलो।
फिर कैसे यह पिछी कमण्डल, उनसे सँभले बोलो॥
जिनदीक्षा न धरे गर्भिणी, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं गर्भदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७९॥

सूतक पातक सोर काल में, दूर धर्म से होते।
कहो प्रसूता स्त्री को क्या, सहज मोक्षपथ होते॥
जिनदीक्षा ना धरे प्रसूता, सो यह दोष नशाएँ।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, परम शान्ति झलकाएँ॥

ॐ ह्रीं सूतक-पातक-सोरदोष-विजयी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८०॥

पूर्णार्घ्य

(हरीगीतिका)

निष्पाप हों व्रत योग्य हों, संवर करें संसार के।
दीक्षा धरें पातक हरें, मुक्ति वरें भव तार के॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं अशीति गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री अशीति गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

आगे बनूँगा
प्रभु पदों में अभी
बैठ तो जाऊँ

११. श्री शान्तिनाथ विधान (८८-अर्घ्य)

सत्तर अतिचार

सम्यग्दर्शन के पाँच अतिचार

(चौपाई)

जिनशासन में करें ना शंका, तभी बजेगा धार्मिक डंका।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं शंकादि-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १॥

जिनशासन से करें न कांक्षा, सो पूरी हो हर आकांक्षा।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं कांक्षादि-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २॥

करो धर्म में ना विचिकित्सा, बनें धर्म के सम्यक् हिस्सा।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं ग्लानि-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३॥

अन्यदृष्टि की नहीं प्रशंसा, रखें विश्व कल्याणी मंशा।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं अन्यदृष्टिप्रशंसा-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४॥

अन्यदृष्टि का नहीं संस्तवन, खोटे भाव त्याग दें चेतन।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं अन्यदृष्टिसंस्तव-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५॥

अहिंसाणुव्रत के पाँच अतिचार

पशुओं का वध करना छोडें, जीव दया से नाता जोड़ें।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं वध-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६॥

मनचाहा चलने से रोकें, पशुओं को बंधन से छोड़ें।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं बंधन-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७॥

नाक-कान आदि ना छेदें, धर्म अहिंसा जग को दे दें।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं छेदन-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८॥

भार शक्ति से ज्यादा ना हो, अतिभार आरोपण ना हो।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं अतिभारारोपण-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९॥

खान-पान पर रोक लगाना, तो कैसे दुख दर्द मिटाना।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं अन्नपाननिरोध-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०॥

सत्याणुव्रत के पाँच अतिचार

मिथ्या का उपदेश न देना, सत्य धर्म रक्षित कर लेना।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं मिथ्यावचन-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ११॥

नर-नारी की गुप्त कथाएँ, प्रकट करें तो धर्म नशाएँ।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं रहोभ्याख्यान-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १२॥

झूठे दस्तावेज बनाना, कूटलेख की क्रिया बढ़ाना।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं कूटलेखक्रिया-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १३॥

हरण करें ना अन्य धरोहर, ये न्यासापहार है दुख घर।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं न्यासापहार-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १४॥

संकेतों को जान समझकर, जग में करना नहीं उजागर।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं साकारमंत्रभेद-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १५॥

अचौर्याणुव्रत के पाँच अतिचार

चोरी के पथ राह दिखाना, दुख संकट में धर्म फसाना।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं चौर्यप्रयोग-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १६॥

चोरी की वस्तु क्रय करना, धर्म साधना विक्रय करना।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं चौर्यक्रय-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १७॥

राजाज्ञा के विरुद्ध चलना, अंत रहा हाथों को मलना।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं राज्यविरुद्धकार्य-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १८॥

बाँट तराजू कम-बढ़ रखना, अपमानों का रस ना चखना।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं हीनाधिकमानोन्मान-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १९॥

नकली माल असल कह बेचें, पतन राह निश्चित ही देखें।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं प्रतिरूपकव्यवहार-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २०॥

ब्रह्मचर्याणुव्रत के पाँच अतिचार

पर के विवाह करें कराएँ, मुक्तिवधू से क्या मिल पाएँ।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं अन्यविवाहकरण-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २१॥

व्यभिचारिणी महिलाओं से, बचना भोगी सम्बन्धों से।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं अन्यस्त्री-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २२॥

वेश्यादिक से धर्म बचाना, निजरमणी से रास रचाना।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं वेश्यागमन-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २३॥

करें कामसेवन ना विधि से, मिल न सकें तो आत्म निधि से।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं अनंगक्रीड़ा-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २४॥

यदि भोगें अत्यंत वासना, बुरी कलंकित धर्म साधना।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं तीव्रकामासक्ति-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २५॥

परिग्रह परिमाणाणुव्रत के पाँच अतिचार

खेत भवन की तजें न सीमा, तब ही हो आतम का बीमा।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं क्षेत्रवास्तु-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २६॥

सोने चाँदी की सीमाएँ, अगर त्याग दें तो दुख पाएँ।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं हिरण्यस्वर्ण-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २७॥

धन-धान्यादिक की मर्यादा, अगर त्याग दें तब हों बाधा।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मन बाएँ॥
ॐ ह्रीं धनधान्यादि-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २८॥

दास-दासियों की सीमाएँ, त्यागें तो सम्मान गंवाएँ।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं दासीदासादि-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २९॥

कपड़े बर्तन के प्रमाण को, कभी न त्यागें धर्म प्राण को।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं कुप्यभाण्डादि-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३०॥

दिग्व्रत के पाँच अतिचार

सीमा से ऊपर वन चढ़ना, तब तो निश्चित नीचे बढ़ना।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं ऊर्ध्वगमन-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३१॥

सीमा से नीचे जो जाए, वो नरकों से क्या बच पाए।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं अधोगमन-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३२॥

मर्यादा से आगे जाना, तो कष्टों का मिले खजाना।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं तिर्यग्गमन-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३३॥

सीमित क्षेत्र बढ़ाते जाना, सिद्धक्षेत्र फिर कैसे पाना।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं अतिक्रमण-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३४॥

की हुई सीमा भूल हि जाना, आत्म तत्त्व फिर कैसे ध्याना।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं सीमाविस्मरण-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३५॥

देशव्रत के पाँच अतिचार

जो वस्तु बाहर सीमा के, अंदर लाना उसे छोड़ दे।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं आन्तरिक-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३६॥

सीमा के बाहर नौकर को, नहीं भेजना है चाकर को।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं बाह्य-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३७॥

सीमा के बाहर खाँसी से, निज आशय ना हो हाँसी से।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं ध्वनिसंकेत-दोषहर्त्ता -दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३८॥

सीमा के बाहर लोगों को, तजें इशारे निज कर्मों को।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥

ॐ ह्रीं कायसंकेत-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३९॥

सीमा के बाहर यदि देखें, कंकर पत्थर आदि न फेकें।
शान्तिप्रभु जी पथ दिखलाओ, दीक्षा की खुशियाँ मनवाओ॥
ॐ ह्रीं दृष्टिसंकेत-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४०॥

अनर्थदण्डव्रत के पाँच अतिचार

(हाकलिका)

हँसकर अशुभ न बोलें जो, दुख कंदर्प न घोलें वो।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं हास्य-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४१॥

अशुभ देह कर बोलें जो, कौत्कुच्य दुख घोलें वो।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं देह-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४२॥

अशुभ बहुत ही बोलें जो, मुखर दुखों को घोलें वो।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं वचन-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४३॥

बिना लक्ष्य मन वच तन की, करें क्रियाएँ क्रन्दन की।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अनर्थ-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४४॥

बहुत अधिक संग्रह करना, अनर्थदंड त्याग करना।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं संग्रह-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४५॥

सामायिक शिक्षाव्रत के पाँच अतिचार

ध्यान अन्यथा मन के हों, तो क्या भाव भजन के हों।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं ध्यान-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४६॥

वचन अन्यथा वाचन हों, तो क्या सुख के साधन हों।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अन्यथावचन-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४७॥

कार्य अन्यथा तन के हों, तो क्या मोक्ष निकेतन हों।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं अन्यथाकाय-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४८॥

बिन उत्साह ध्यान धरना, कैसे सामायिक करना।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं उत्साह-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४९॥

चंचलता में भूल गए, सामायिक को छोड़ गए।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं सामायिकविस्मरण-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५०॥

प्रौषधोपवास शिक्षाव्रत के पाँच अतिचार

बिन देखी शोधी भू में, मल मूत्रादिक तजने में।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं भूमि-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५१॥

बिन देखे शोधे साधन, तजें उठाना पाप कदम।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं उपकरण-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५२॥

बिन शोधे रखना आसन, तजें बिछाना संसाधन।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं आसन-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५३॥

भूख-प्यास से आकुल हो, करें धर्म क्या मंगल हो।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं क्षुधा-तृषा-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५४॥

करने योग्य धर्म भूलें, तो दुख का झूला झूलें।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं प्रोषधोपवासविस्मरण-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५५॥

भोगोपभोग परिणाम व्रत के पाँच अतिचार

जीव सहित फल आदि को, खाना तो भव व्याधि हो।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं सचित्त-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५६॥

सचित्त सम्बन्धी भोजन, करने से हो भव-बंधन।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं सचित्तसम्बन्ध-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५७॥

जीव सहित मिश्रित भोजन, करके कब हो पुण्य धरम।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं सचित्तमिश्र-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५८॥

गरिष्ट भोजन करने से, कौन बचाए मरने से।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं भोज्य-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५९॥

कम-बढ़ पका हुआ भोजन, है द्विपक्वाहार अधम।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं द्विकक्व-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६०॥

अतिथिसंविभाग व्रत के पाँच अतिचार

सचित्त पत्तों पर भोजन, रखकर दान है न उत्तम।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं सचित्तपत्र-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६१॥

सचित्त पत्तों से ढक कर, भोजन दान रहा दुखकर।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं सचित्तपत्रावरण-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६२॥

पर दाता की वस्तु दें, दान पुण्य तब मान न लें।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं परदाता-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६३॥

ईर्ष्या-डाह अनादर कर, दान करें दुख से भर-भर।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं ईर्ष्या-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६४॥

योग्य समय से दान न दें, निश्चय से अपयश कर लें।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं काल-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६५॥

सल्लेखना व्रत के पाँच अतिचार

सल्लेखन को धारण कर, जीने की ना इच्छा कर।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं जिजीविषा-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६६॥

पीड़ा से व्याकुल होकर, मरने की ना इच्छा कर।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं मरणेच्छा-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६७॥

मृत्यु निकट आ जाने पर, मित्रों का स्मरण न कर।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं मित्रस्मरण-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६८॥

सल्लेखन स्वीकार करें, भोगे भोग न याद करें।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं भोगस्मरण-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६९॥

भविष्य में भव विषयों की, इच्छा त्यागें भोगों की।
शान्तिप्रभु जी शिक्षा दो, हमको सुव्रत दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं निदान-दोषहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७०॥

नवधा भक्ति

(विष्णु)

नग्न दिगम्बर साधु जनों की, चर्या के हेतु।
करें प्रतीक्षा द्वारा प्रेक्षण, मुक्ति का सेतु॥
प्रथम भक्ति पड़गाहन करके, मिथ्या ना आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पड़गाहन-मण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७१॥

साधु जनों को उच्चासन दें, नित सम्मान करें।
तब अपना सम्मान बढ़ेगा, ये भी ध्यान धरें॥
भक्ति दूसरी उच्चासन से, व्यसन टलें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं उच्चासन-मण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७२॥

साधु जनों के चरण पखारें, श्रद्धा जल द्वारा।
है सम्यक् सौभाग्य हमारा, दे शान्ति धारा॥
भक्ति तीसरी पद प्रक्षालन, पाप हरे आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पादप्रक्षालन-मण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७३॥

अष्ट द्रव्य से अष्ट कर्म के, सकल समापन को।
साधु जनों की करें अर्चना, मोक्ष निवासन को॥
चौथी भक्ति पूजा द्वारा, संयम लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पूजन-मण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७४॥

साधु जनों को विनय भक्ति से, करके नमोऽस्तु रे।
जिनशासन की ध्वज फहराएँ, करके जयोऽस्तु रे॥

पंचम भक्ति प्रणाम द्वारा, ध्यान धरें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं नमस्कार-मण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७५॥

अशुभ भाव संसार हेतु तज, शुभ-शुभ भाव करें।
अशुद्ध भावों को त्यागें तो, निज पर शुद्ध करें॥
षष्ठम भक्ति मन शुद्धि से, धर्म धरें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं मनशुद्धि-मण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७६॥

वचनों के संग्राम त्याग कर, धारण मौन करें।
निज की निज से निज चर्चा कर, जग को गौण करें॥
सप्तम भक्ति वचन शुद्धि से, कर्म हरें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं वचनशुद्धि-मण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७७॥

काया के व्यापार त्याग कर, कायाकल्प करें।
कायोत्सर्ग धार लें हम भी, यह संकल्प करें॥
अष्टम भक्ति काय शुद्धि से, सुख पाएँ आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं कायशुद्धि-मण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७८॥

खानपान यदि बिगड़ गया तो, खानदान बिगड़े।
खानपान के विवेक द्वारा, टलें सभी झगड़े॥
नवम भक्ति आहार जल शुद्धि, मुक्त करे आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥।
ॐ ह्रीं आहारशुद्धि-मण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७९॥

नवदेवता

(जोगीरासा)

अरिहंतों को करना नमोऽस्तु, मंगल प्रथम कहाता।
हम सबके हर काम बनाए, सुख समृद्धि दाता॥
मंत्र णमो अरिहंताणं दे, मुक्तिवधू वरमाला।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, फेरो माला-माला॥

ॐ ह्रीं अरिहंत-स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८०॥

सिद्ध नाम ही सत्य जगत में, सिद्ध सिद्धिमय होते।
सिद्ध सिद्धियाँ सब जग चाहें, सिद्धि बिना सब रोते॥
मंत्र णमो सिद्धाणं जप के, खुले मोक्ष का ताला।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, फेरो माला-माला॥

ॐ ह्रीं सिद्ध-स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८१॥

आचार्यों की शरण प्राप्त कर, संसारी पथ छोड़ो।
धरकर सु-व्रत करो तपस्या, दीक्षा ले रथ मोड़ो॥
मंत्र णमो आइरियाणं से, मिटे पाप का प्याला।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, फेरो माला-माला॥

ॐ ह्रीं आचार्य-स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८२॥

उपाध्याय गुरु की करुणा से, बनिए सम्यग्ज्ञानी।
मंदबुद्धि के जहर मिटाकर, बनिए आतम ध्यानी॥
मंत्र णमो उवज्झायाणं से, मिलता ज्ञान उजाला।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, फेरो माला-माला॥

ॐ ह्रीं उपाध्याय-स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८३॥

नग्न दिगम्बर साधु-संत ही, धर्म ध्वजा फहराएँ।
हम भक्तों के प्राण-हृदय हैं, यश सम्मान दिलाएँ॥

णमो लोए सव्वसाहूणं से, मिले सुखों की शाला।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, फेरो माला-माला॥

ॐ ह्रीं साधु-स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८४॥

श्री जिन धर्म हमारा प्यारा, सबका सदा सहाई।
जीव मात्र का रहा हितैषी, मंगलमय सुखदाई॥
आत्म धर्म का यही प्रदाता, हरे कर्म का गाला।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, फेरो माला-माला॥

ॐ ह्रीं जिनधर्म-स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८५॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्र के, पोषक शास्त्र हमारे।
हमको प्राणों से प्यारे हैं, प्रभु बिन यही सहारे॥
जिन-आगम के साँचे ने ही, हमें धर्ममय ढाला।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, फेरो माला-माला॥

ॐ ह्रीं जिनागम-स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८६॥

पंचमकाल महा दुखदाई, साक्षात प्रभु न पाए।
समवसरण भी मिला न फिर भी, चैत्य बिम्ब तो पाए॥
जिनचैत्यों की पूजा कर, चेतन ने भव टाला।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, फेरो माला-माला॥

ॐ ह्रीं जिनचैत्य-स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८७॥

समवसरण की प्रतिकृति हैं, धर्म आयतन मंदिर।
आस्था के हैं केन्द्र हमारे, जग में सबसे सुंदर॥
पूज्य जिनालय चैत्यालय ने, सिद्धालय सम पाला।
शान्तिप्रभु को करके नमोऽस्तु, फेरो माला-माला॥

ॐ ह्रीं जिनचैत्यालय-स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८८॥

पूर्णार्घ्य

(हरीगीतिका)

वैराग्य से भव पाप त्यागें, व्रत धरें निज शान्ति को।
उत्कृष्ट चर्या पालने अतिचार, त्यागें भ्रांति को॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं अष्टाशीति गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री अष्टाशीति गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

छोटा भले हो
दर्पण मिले साफ
खुद को देखो

१२. श्री शान्तिनाथ विधान (९६-अर्घ्य)

सत्रह नियम

(सखी)

भोजन के नियम बनाएँ, क्या कब क्यों कितना खाएँ।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं भोजन-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १॥

षट्रस के नियम बनाएँ, रस त्याग चेतना ध्याएँ।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं षट्रस-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २॥

तज सौंफ-सुपारी खाना, खाना तो नियम बनाना।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं सौंफादि-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३॥

कुंकुम आदिक का लेपन, लें नियम सजाएँ निज तन।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं शृंगार-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४॥

हर पुष्प सुगंधित तजना, या नियम बनाकर सजना।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं पुष्पादि-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५॥

ताम्बूल-पान का सेवन, लें नियम करें निज चिंतन।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं ताम्बूलादि-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६॥

गीतों-गानों का सुनना, यह नियम बनाकर चलना।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं गीतश्रवण-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७॥

जब नृत्य समय हो साँचे, तो नियम बनाकर नाचें।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं नृत्य-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८॥

व्रत ब्रह्मचर्य है चोखा, लें नियम करें न धोखा।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९॥

स्नान करें तो लेकिन, लें नियम नहाएँ निज तन।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं स्नान-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०॥

आभूषण से तो सजना, पर नियम बनाकर रखना।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं आभूषण-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ११॥

वस्त्रों से देह सँभालें, पर नियम जरूरी पालें।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं वस्त्रादि-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १२॥

शैय्या विस्तर पर सोएँ, लें नियम अन्यथा रोएँ।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं शैय्यादि-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १३॥

आसन पर बैठें सुख से, पर नियम करें खुद खुद से।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं आसनादि-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १४॥

वाहन की करें सवारी, लें नियम बड़ा उपकारी।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥
ॐ ह्रीं वाहनादि-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १५॥

जब आना-जाना करना, तो नियम बनाकर चलना।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥

ॐ ह्रीं आवागमन-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १६॥

उपयोग करें जो वस्तु, लें नियम शेष को तज तू।
दो शान्तिप्रभु जी शक्ति, हम करें नमोऽस्तु भक्ति॥

ॐ ह्रीं वस्तुप्रयोग-नियम-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १७॥

सत्रह यम

(दोहा)

तजें कुगुरु की संगति, सद्गुरु का पा साथ।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं कुगुरु-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १८॥

कुदेव पूजना छोड़ दें, सुदेव का पा साथ।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं कुदेव-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १९॥

कुधर्म की सेवा तजें, सुधर्म का पा साथ।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं कुधर्म-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २०॥

त्यागें अनर्थदण्ड का, जीवन भर का साथ।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं अनर्थदंड-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २१॥

अयोग्य धंधे पाप के, त्यागें इनका साथ।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं अयोग्यव्यापार-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २२॥

जुआ खेलना त्याग दें, जीवन भर के पाप।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं द्यूत-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २३॥

जीवन भर को मांस का, सेवन का हो त्याग।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥
ॐ ह्रीं मांस-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २४॥

त्याग शहद-मधु का करें, लें चेतन का स्वाद।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥
ॐ ह्रीं मधु-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २५॥

वेश्यावृत्ति विश्व में, कभी न हो ये पाप।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥
ॐ ह्रीं वेश्यावृत्ति-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २६॥

चोर चोरियाँ त्याग दें, चलें मोक्ष का मार्ग।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥
ॐ ह्रीं चौर्य-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २७॥

परस्त्री से राग का, जीवन भर हो त्याग।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥
ॐ ह्रीं परस्त्री-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २८॥

त्यागें हिंसादान को, रखें दया की लाज।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥
ॐ ह्रीं हिंसादान-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २९॥

जीवन भर करना नहीं, शिकार का अभिशाप।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥
ॐ ह्रीं शिकार-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३०॥

त्रस-हिंसा इस जन्म में, तजकर हों आबाद।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥
ॐ ह्रीं त्रसहिंसा-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३१॥

स्थूल झूठ श्रावक तजें, रखें जन्म भर याद।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं स्थूलझूठ-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३२॥

बिना छना जल जन्म भर, श्रावक करते त्याग।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं अनछनाजल-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३३॥

कुलाचार जैनत्व में, रात्रि भोजन त्याग।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, ऐसा आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति-त्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३४॥

सत्रह अयोग्य व्यापार त्याग

(लघु चौपाई)

चमड़े की वस्तु व्यापार, कभी न करना दुख का भार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं चर्मवस्तु-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३५॥

रेशम ऊन वस्त्र व्यापार, त्यागें यह दुख का संसार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं रेशमऊनादिवस्त्र-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं॥ ३६॥

जहर जीव हिंसा व्यापार, तजें नरक जैसा दुख द्वार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं विष-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३७॥

मद्य-मांस-मधु का व्यापार, तजें धर्म का करें प्रचार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं मकार-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३८॥

जूते चप्पल का व्यापार, त्यागें करें आत्म प्रचार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं पादुका-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३९॥

ईटों-भट्टों के व्यापार, आगों के त्यागें संसार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं इष्टिकादि-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४०॥

आग लगाना वन अंगार, त्यागें यह हिंसक व्यापार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं वनाग्नि-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४१॥

ले पिस्तौल छुरी तलवार, तजें भयंकर यह व्यापार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं आयुध-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४२॥

नट नाटक फिल्म संसार, धर्म हीन त्यागें व्यापार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं नटादि-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४३॥

इत्र सेंट फूलों के हार, त्यागें यह मोहक व्यापार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं इत्रादि-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४४॥

लाख मोम आदि उपहार, त्यागें यह भ्रामक व्यापार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं मोमादि-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४५॥

हलवाई मीठा आहार, त्यागें यह मारक व्यापार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं रसोई-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४६॥

यांत्रिक मील तजें व्यापार, जो सबका करते संहार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं यांत्रिकमील-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४७॥

छेद-भेद पशु बंधनवार, त्यागें दर्द भरे व्यापार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं पशुबंधन-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४८॥

वन जंगल के काटनहार, रक्षा रहित तजें व्यापार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं वनसंहार-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४९॥

खान-कुआ सरवर की धार, तजें खोदने के व्यापार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं कूपखननादि-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५०॥

सड़े-घुने अनाज भण्डार, तजें स्वास्थ्य नाशक व्यापार।
शान्तिप्रभु जी दो आशीष, हम तो सदा नवाएँ शीश॥
ॐ ह्रीं घुणित अन्नादि-व्यापारत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५१॥

सत्रह मरण

(हाकलिका)

जिसमें है प्रतिपल मरना, मरण अवीचि यह तजना।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥
ॐ ह्रीं अवीचि-मरणत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५२॥

तद्भव मरण त्यागना है, करना श्रेष्ठ साधना है।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥
ॐ ह्रीं तद्भव-मरणत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५३॥

अवधि मरण का त्याग करें, आतम से अनुराग करें।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥
ॐ ह्रीं अवधि-मरणत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५४॥

यह आद्यंत मरण त्यागें, दूर पाप पथ से भागें।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥
ॐ ह्रीं आद्यंत-मरणत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५५॥

बाल मरण की चाल तजें, मुक्ति की वरमाला सजें।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥
ॐ ह्रीं बाल-मरणत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५६॥

आवसन्न यह मरण नशें, निजनगरी निजभवन नसें।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥
ॐ ह्रीं आवसन्न-मरणत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५७॥

तजें सशल्य मरण हम भी, करो निःशल्य हमें तुम ही।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥
ॐ ह्रीं सशल्य-मरणत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५८॥

पलाय मरण शीघ्र छूटे, दुख की परम्परा टूटे।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥
ॐ ह्रीं पलाय-मरणत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५९॥

वशार्त्त मरण भी तजना है, मुक्त चेतना भजना है।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥
ॐ ह्रीं वशार्त्त-मरणत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६०॥

हम विप्राण मरण त्यागें, मोही निद्रा से जागें।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥
ॐ ह्रीं विप्राण-मरणत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६१॥

गृद्धपृष्ट का मरण तजें, सम्यक् चरणाचरण सजें।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥
ॐ ह्रीं गृद्धपृष्ट-मरणत्याग-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६२॥

मरण बालपण्डित छोड़ें, परम्परा भव की तोड़ें।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥
ॐ ह्रीं बालपण्डित-मरण-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६३॥

पण्डित मरण छोड़ चलिए, आगे मोक्षमार्ग बढ़िए।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥

ॐ ह्रीं पण्डित-मरण-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६४॥

भक्तप्रत्याख्यान मरण, देता हमको समवसरण।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥

ॐ ह्रीं भक्तप्रत्याख्यान-मरण-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६५॥

प्रायोपगमन मरण साधें, निज शुद्धातम आराधें।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥

ॐ ह्रीं प्रायोपगमन-मरण-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६६॥

इष्ट इंगिनीमरण हमें, करें सफल हो भजें तुम्हें।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥

ॐ ह्रीं इंगिनी-मरण-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६७॥

पण्डित-पण्डित मरण रहा, करें केवली मरण अहा।
शान्तिप्रभु उद्धार करो, अब तो नैया पार करो॥

ॐ ह्रीं पण्डितपण्डित-मरण-उपदेशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६८॥

चक्रवर्ती वैभव

(जोगीरासा)

चौदह रत्न

चक्र छत्र असि दण्ड काकिणी, मणी चर्म सेनापति।
अश्व पुरोहित स्थापित स्त्री, हाथी आदिक गृहपति॥
चौदह रत्नों के त्यागी बन, आतम रत्न निखारे।
चक्रवर्ती श्री शान्तिप्रभु जी, तुमको नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं जड़रत्न-त्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६९॥

नौ निधियाँ

पाण्डु काल फिर महाकाल फिर, मानव पद्म निधि हों।
पिंगल रत्न शंख नैसर्पण, नव निधियाँ शुभ विधि हों॥
नव निधियों को त्याग आप तो, आतम निधि निखारे।
चक्रवर्ती श्री शान्तिप्रभु जी, तुमको नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं जड़निधि-त्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७०॥

चौरासी लाख हाथी

विवाह बन्धन या गजरथ को, हाथी मिलें न स्वामी।
पर चौरासी लाख हाथियों, के चक्री आसामी॥
मुक्तिवधू से ब्याह रचाने, त्यागें हाथी सारे।
चक्रवर्ती श्री शान्तिप्रभु जी, तुमको नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं गज-त्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७१॥

अठारह करोड़ घोडे

सुनो एक घोड़े की कीमत, दूल्हा ही पहचाने।
किन्तु अठारह करोड़ घोड़े, चक्री के मस्ताने॥
निज रमणी का दूल्हा बनने, त्यागें घोड़े सारे।
चक्रवर्ती श्री शान्तिप्रभु जी, तुमको नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं अश्व-त्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७२॥

छ्यानवें हजार रानियाँ

मानव की बत्तीस हजारों, इतनी विद्याधरियाँ।
इतनी म्लेच्छखण्ड की कुल हों, छ्यानवें हजार रानियाँ॥
सभी रानियाँ छोड़ दौड़ के, निज रानी शृंगारे।
चक्रवर्ती श्री शान्तिप्रभु जी, तुमको नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं नारी-त्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७३॥

तीन सौ पैंसठ रसोइए

सुनो! तीन सौ पैंसठ होते, रसोइए चक्री के।
हम तुम लड्डू पचा न सकते, खानपान चक्री के॥
जड़-पुद्गल के भोज्य त्याग के, चेतन रस स्वीकारे।
चक्रवर्ती श्री शान्तिप्रभु जी, तुमको नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं सेवक-त्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७४॥

कटक सेना

कटक नाम की सेना जिनकी, आज्ञाओं पर डोले।
त्याग-तपस्या की सेना ले, मोक्ष किला वे खोले॥
त्याग कटक सेना को स्वामी, कर्म-युद्ध ललकारे।
चक्रवर्ती श्री शान्तिप्रभु जी, तुमको नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं सैन्य-त्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७५॥

षट्-खण्ड

पाँच म्लेच्छ इक आर्य खण्ड कुल, भरत क्षेत्र के होते।
षट्खण्डों के अधीश चक्री, धार्मिक पुण्य सँजोते॥
षट्खण्डों को त्याग आपने, भव के दिए किनारे।
चक्रवर्ती श्री शान्तिप्रभु जी, तुमको नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं षट्खण्ड-त्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७६॥

चक्र रत्न

चक्री का जो चक्ररत्न वो, शत्रु देख भय खाए।
पर परिवार कुटुम सम्बन्धी, पर ना असर दिखाए॥
सिद्धचक्र में शामिल होने, कर्म चक्र भी तारे।
चक्रवर्ती श्री शान्तिप्रभु जी, तुमको नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं चक्ररत्न-त्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७७॥

सुन्दर रूप

कामदेव चक्री तीर्थंकर, तीनों सुन्दर होते।
जिनकी देख-देख सुंदरता, विस्मय विस्मय खोते॥
सुंदर सी सम्पन्न चेतना, पाने मन को मारे।
चक्रवर्ती श्री शान्तिप्रभु जी, तुमको नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं सुन्दरदेह-त्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७८॥

अन्य सम्पदा

सोना-चाँदी हीरा-मोती, रत्नों के भण्डारे।
पुत्र सम्पदा इतनी होती, जिसका पार न पा रे॥
जीर्ण-शीर्ण तृण जैसे सारे, जड़-वैभव परिहारे।
चक्रवर्ती श्री शान्तिप्रभु जी, तुमको नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं जड़वैभव-त्यागी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७९॥

सत्रह अनुजीवी गुण

(दोहा)

जीव चेतना गुण मिले, बने सुखी भगवान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥

ॐ ह्रीं चैतन्य-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८०॥

श्रद्धा गुण सम्यक्त्व से, कर लें सम्यग्ज्ञान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८१॥

मोक्ष द्वार चारित्र गुण, देता आतम-ज्ञान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥

ॐ ह्रीं चारित्र-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८२॥

सुख का सम्पादन करें, मिले भेद-विज्ञान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥

ॐ ह्रीं सुख-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८३॥

दुख दरिद्रता नाश कर, करें धर्म सुख दान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥
ॐ ह्रीं दान-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८४॥

अनुजीवी गुण लाभ है, करे भला सम्मान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥
ॐ ह्रीं लाभ-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८५॥

भोग नाम का गुण रहा, दे संयोग महान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥
ॐ ह्रीं भोग-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८६॥

आतम का उपभोग दे, चेतन का बागान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥
ॐ ह्रीं उपभोग-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८७॥

वीर्य शक्ति बल प्राप्त हो, तजें कर्म संग्राम।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥
ॐ ह्रीं वीर्य-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८८॥

भव्य भाव प्रकटा सकें, पाएँ मोक्ष मकान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥
ॐ ह्रीं भव्यत्व-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८९॥

अभव्य की पीड़ा तजें, तजें मान-अपमान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥
ॐ ह्रीं अभव्यत्व-गुणरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९०॥

प्रकटा लें जीवत्व गुण, जड़-पुद्गल कर हान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥
ॐ ह्रीं जीवत्व-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९१॥

वैभाविक गुण त्याग दें, स्वाभाविक आदान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥

ॐ ह्रीं स्वाभाविक-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९२॥

गुण कर्त्तृत्व निखार के, मार्ग करें आसान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥

ॐ ह्रीं कर्त्तृत्व-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९३॥

गुण भोक्तृत्व सँभाल के, करें आत्म रसपान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥

ॐ ह्रीं भोक्तृत्व-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९४॥

प्रभुत्व गुण पाकर दिए, पुण्यफला वरदान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥

ॐ ह्रीं प्रभुत्व-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९५॥

विभुत्व गुण विद्या मिले, 'सुव्रत' का अरमान।
शान्तिप्रभु जी दीजिए, हम पर थोड़ा ध्यान॥

ॐ ह्रीं विभुत्व-गुणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९६॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

लेकर नियम शुभ यम धरें, व्यापार सम्यक् ही करें।
करके मरण गुण आत्म वैभव, प्राप्त कर मुक्ति वरें॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं षट्-नवति गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री षट्-नवति गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

पंचमहागुरु भक्ति (भावानुवाद)

(चौपाई)

जिन पर सुर नर छत्र लगाएँ, पाँचों कल्याणक सुख पाएँ।
प्रभु अरिहन्त दान गुण करते, गुण पाने हम नमोऽस्तु करते॥१॥
ध्यान अग्नि के बाण चलाके, जन्म-मरण दुख नगर जलाके।
शाश्वत मोक्ष सिद्ध प्रभु वरते, गुण पाने हम नमोऽस्तु करते॥२॥
पंचाचार तपों को साधें, द्वादशांग सागर अवगाहें।
गुरु आचार्य मोक्ष सुख वरते, गुण पाने हम नमोऽस्तु करते॥३॥
शेर भयंकर वाले वन में, भूल गए जो पथ जीवन में।
उपाध्याय पथ दर्शन करते, गुण पाने हम नमोऽस्तु करते॥४॥
तप कर देह क्षींण कर डाली, लगा ध्यान लक्ष्मी प्रकटाली।
साधु मोक्षपथ दर्शन करते, गुण पाने हम नमोऽस्तु करते॥५॥
जो इस तरह पंचगुरु ध्याते, सघन बेल भव दुख की काटें।
कर्म हरण कर शिवसुख वरते, गुण पाने हम नमोऽस्तु करते॥६॥

(दोहा)

अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु, उपाध्याय मुनि साधु।
सुख दायक परमेष्ठी को, 'सुव्रत' करें नमोऽस्तु॥

===

१३. श्री शान्तिनाथ विधान (१०४-अर्घ्य)

सोलह स्वप्न

(चौपाई)

प्रथम स्वप्न गर्जित गजराजा, तीर्थंकर त्रय जग के राजा।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं त्रैलोक्याधिपति श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १॥

स्वप्न बैल था सपना दूजा, धर्म धुरंधर जग ने पूजा।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं जगत्पूज्य श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २॥

लक्ष्मी का कलशाभिषेक हो, धर्मवृद्धि कर्त्ता विशेष हो।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं धर्मवर्धक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३॥

चौथा सपना पूरण चंदा, तीन लोक को दे आनंदा।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं त्रैलोक्यानन्दकारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४॥

जलक्रीड़ा करती मछली दो, अनेक निधियों का स्वामी हो।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं अनेकनिधिस्वामी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५॥

छटवाँ सपना पद्म सरोवर, एक हजार आठ लक्षण धर।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं सहस्त्रलक्षणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६॥

रत्नजड़ित सिंहासन देखा, बड़े राज्य का भोक्ता देखा।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं राज्यवैभवधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७॥

फिर धरणेन्द्र भवन विज्ञानी, जन्मजात हो अवधिज्ञानी।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं यथाजातज्ञानी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८॥

धूम रहित फिर देखी ज्वाला, अष्टकर्म को हरने वाला।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं कर्मविनाशी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९॥

दसवाँ सपना सिंह निहारा, अनन्त बलशाली हो प्यारा।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं अनन्तबलधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०॥

स्वप्न ग्यारवाँ फूलमाल दो, सुमेरु पर अभिषेक प्राप्त हो।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं मेरुन्हवनमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ११॥

देखा सूर्य उदय फिर होता, महाप्रतापी भव तम खोता।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं महाप्रतापी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १२॥

फिर सोने के पूर्ण कलश दो, भोगेगा वो अनन्त सुख को।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं अनन्तसुखी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १३॥

फिर देखा लहरोंमय सागर, होगा केवलज्ञानी ईश्वर।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं केवलज्ञानी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १४॥

सुर से आता विमान देखा, जन्म स्वर्ग से आकर लेगा।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥
ॐ ह्रीं स्वर्गावतारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १५॥

सोलहवाँ फिर स्वप्न निहारा, रत्न राशि हो गुण भण्डारा।
ऐरा माँ ने स्वप्न निहारे, शान्तिप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं गुणनिधान श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १६॥

छ्यालीस मूलगुण

जन्म के दस अतिशय

(सखी)

आए ना जिन्हें पसीना, चमके प्रभु देह नगीना।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥

ॐ ह्रीं स्वेद-रहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १७॥

मलमूत्र जिन्हें न होते, ले जन्म कभी ना रोते।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥

ॐ ह्रीं मलमूत्र-रहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १८॥

संस्थान रहा सर्वोत्तम, हों नपे तुले अंगोत्तम।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंस्थानधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १९॥

उत्तम संहनन के धारी, फिर भी हों परमोपकारी।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंहननधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २०॥

हो देह सुगंधित प्यारी, जिस पर मोहित नर-नारी।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥

ॐ ह्रीं सुगंधितदेहधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २१॥

हो मधुर वचनमय वाणी, जो रही सर्व कल्याणी।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥

ॐ ह्रीं मधुरवचनधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २२॥

लहु श्वेत दुग्ध सम होता, वात्सल्य भाव जो बोता।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥
ॐ ह्रीं श्वेतरुधिरगुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २३॥

शुभ लक्षण एक हजारा, जिसने आतम शृंगारा।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥
ॐ ह्रीं सहस्त्रलक्षणधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २४॥

हो सुंदर रूप सलौना, सो करने दर्श चलो ना।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥
ॐ ह्रीं सुंदररूपधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २५॥

हो अनन्त बल के धारी, बचपन से शक्तिशाली।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥
ॐ ह्रीं अनन्तबलधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २६॥

केवलज्ञान के दस अतिशय

हो सुभिक्ष सौ-सौ योजन, दुर्भिक्ष दुखों का शोधन।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥
ॐ ह्रीं सुभिक्षतागुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २७॥

आकाश गमन प्रभु करते, अरिहंत दशा जब धरते।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥
ॐ ह्रीं गगनविहारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २८॥

तब कवलाहार न होता, जब केवलज्ञानम् होता।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥
ॐ ह्रीं कवलाहारमुक्त श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २९॥

प्रभु चार मुखी हो दिखते, जो देखे समक्ष दिखते।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥
ॐ ह्रीं चतुर्मुखी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३०॥

जब केवलज्ञान प्रखर हो, हर विद्या के ईश्वर हो।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३१॥

तन की ना पड़ती छाया, परमौदारिक हो काया।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥

ॐ ह्रीं छायारहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३२॥

नाखून केश ना बढ़ते, जब ज्ञानावरणी झड़ते।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥

ॐ ह्रीं नखकेश-वृद्धिरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३३॥

नेत्रों की गिरें ना पलकें, जब वीतराग गुण झलकें।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥

ॐ ह्रीं अपलकगुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३४॥

हो दया-भावमय प्राणी, प्रभु जब हों केवलज्ञानी।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥

ॐ ह्रीं परमदयालु श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३५॥

उपसर्ग वहाँ ना आते, सर्वज्ञ जहाँ हो जाते।
हम शान्तिप्रभु को पूजें, जन्मों के अतिशय गूँजे॥

ॐ ह्रीं उपसर्गहर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३६॥

देवकृत चौदह अतिशय

(हाकलिका)

अर्धमागधी भाषा में, करें दिव्यध्वनि आशामय।
देव करें ऐसे अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिगुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३७॥

मैत्री भाव सिखाते हैं, वैर कषाय मिटाते हैं।
देव करें ऐसे अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय॥

ॐ ह्रीं मैत्रीभावगुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३८॥

सभी दिशाएँ निर्मल हों, तेरे मेरे मंगल हों।
देव करें ऐसे अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय॥

ॐ ह्रीं निर्मलदिशागुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३९॥

गगन स्वच्छ निर्मल होता, पुण्यफला का यश होता।
देव करें ऐसे अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय॥

ॐ ह्रीं निर्मलाकाशगुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४०॥

हर ऋतु के फल फूल फलें, आकस्मिक उपसर्ग टलें।
देव करें ऐसे अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय॥

ॐ ह्रीं सर्व-ऋतुफलादिगुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४१॥

दर्पणवत हो स्वच्छ दशा, समवसरण भू पर उतरा।
देव करें ऐसे अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय॥

ॐ ह्रीं निर्मलभूगुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४२॥

जय-जय ध्वनि नभ में गूँजें, तीन लोक प्रभु को पूजें।
देव करें ऐसा अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय ॥

ॐ ह्रीं जयघोषगुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४३॥

चरण कमल प्रभु रखें जहाँ, स्वर्णकमल सुर रचें वहाँ।
देव करें ऐसे अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय॥

ॐ ह्रीं कमलविहारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४४॥

मंद सुगंधित पवन चले, भक्तों के हों भले-भले।
देव करें ऐसे अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय॥

ॐ ह्रीं मंदसुगंधपवनगुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४५॥

वर्षा सुरभित जल की हो, आतम जैसी झलकी हो।
देव करें ऐसे अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय॥

ॐ ह्रीं सुगंधितजलवृष्टिगुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४६॥

कंटक कीच रहित भू हो, गुजरें जहाँ स्वयंभू हो।
देव करें ऐसे अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय॥
ॐ ह्रीं कंटकरहितभूगुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४७॥

हो आनंदमयी प्राणी, शान्ति प्रदाता कल्याणी।
देव करें ऐसे अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय॥
ॐ ह्रीं जनानंदगुणी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४८॥

धर्मचक्र चलता आगे, मोह नींद से जग जागे।
देव करें ऐसे अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय॥
ॐ ह्रीं धर्मचक्रसुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४९॥

मंगलद्रव्य अष्ट होते, विघ्न अमंगल दुख खोते।
देव करें ऐसे अतिशय, शान्तिप्रभु की बोलें जय॥
ॐ ह्रीं अष्टमंगलद्रव्य-सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५०॥

अष्ट प्रातिहार्य

सिंहासन आसीन हुए, भक्त भक्ति में लीन हुए।
प्रातिहार्य आठों सोहें, शान्तिप्रभु जी मन मोहें॥
ॐ ह्रीं सिंहासन-सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५१॥

पुष्पवृष्टि नभ से होती, जैसे जले धर्म ज्योति।
प्रातिहार्य आठों सोहें, शान्तिप्रभु जी मन मोहें॥
ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि-सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५२॥

अशोक तरु हो रत्न जड़ा, शोक काँपता दूर खड़ा।
प्रातिहार्य आठों सोहें, शान्तिप्रभु जी मन मोहें॥
ॐ ह्रीं अशोकतरु-सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५३॥

भामण्डल भी चमक रहा, आगामी कुछ झलक रहा।
प्रातिहार्य आठों सोहें, शान्तिप्रभु जी मन मोहें॥
ॐ ह्रीं भामण्डल-सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५४॥

दिव्यध्वनि हो खरी-खरी, मंगलकारी तत्त्व भरी।
प्रातिहार्य आठों सोहें, शान्तिप्रभु जी मन मोहें॥
ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि-सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५५॥

तीन छत्र शोभित सिर पर, छत्र-छाँव कर दें हम पर।
प्रातिहार्य आठों सोहें, शान्तिप्रभु जी मन मोहें॥
ॐ ह्रीं छत्रत्रय-सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५६॥

दुंदुभि बाजे बाज रहे, सुखदाता जिनराज रहे।
प्रातिहार्य आठों सोहें, शान्तिप्रभु जी मन मोहें॥
ॐ ह्रीं दुंदुभि-सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५७॥

चौंसठ चँवर ढुराते हैं, प्रभु का गौरव गाते हैं।
प्रातिहार्य आठों सोहें, शान्तिप्रभु जी मन मोहें॥
ॐ ह्रीं चतुषष्टिचँवर-सुशोभित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५८॥

अनन्त चतुष्टय

अनन्तदर्शन प्रभु पाए, दर्शन को हम ललचाए।
अनन्त चतुष्टय से सोहें, शान्तिप्रभु जी मन मोहें॥
ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५९॥

अनन्तज्ञान गुणी होके, मोक्ष गए भव मल धोके।
अनन्त चतुष्टय से सोहें, शान्तिप्रभु जी मन मोहें॥
ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६०॥

अनन्तसुख की बलिहारी, मोहित है हर संसारी।
अनन्त चतुष्टय से सोहें, शान्तिप्रभु जी मन मोहें॥
ॐ ह्रीं अनन्तसुखधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६१॥

अनन्तवीर्य प्रभु प्रकटाए, कर्मशत्रु तब घबराए।
अनन्त चतुष्टय से सोहें, शान्तिप्रभु जी मन मोहें॥
ॐ ह्रीं अनुतवीर्यधारी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६२॥

अठारह दोष

(दोहा)

क्षुधा भूख हर्त्ता करें, हम सबका उद्धार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं क्षुधा-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६३॥

तृषा-प्यास नाशक करें, हमको भव से पार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं तृषा-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६४॥

जन्म दोष विजयी करें, सबका बेड़ा पार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं जन्म-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६५॥

मरण-मृत्यु जेता भरें, भक्तों के भण्डार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं मरण-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६६॥

जरा-बुढ़ापा जय किए, दो सबको उपहार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं जरा-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६७॥

विस्मय दोष विनाश के, अतिशय की दो धार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं विस्मय-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६८॥

आरत का गारत हरे, भारत भाग्य सुधार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं अरति-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६९॥

खेद दोष निर्दोष कर, करो सुखी संसार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं खेद-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७०॥

रोग-भोग संयोग हर, करो स्वस्थ घर-बार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं रोग-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७१॥

हरके शोक वियोग को, बने धर्म आधार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं शोक-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७२॥

जीत लिए मद-मान को, मार्दव की सरकार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं मान-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७३॥

मोह विनाशक बन पुजे, करो रत्न व्यापार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं मोह-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७४॥

भय का आलय त्याग के, निर्भय हो हितकार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं भय-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७५॥

निद्रा-तन्द्रा छोड़ के, छोड़े सभी विकार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं निद्रा-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७६॥

चिंता की त्यागे चिता, चित्-चैतन्य बहार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं चिंता-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७७॥

त्याग पसीना दोष को, बने नगीना हार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं स्वेद-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७८॥

वीतराग वैराग्य धर, राग-आग परिहार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं राग-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७९॥

द्वेष-क्लेश संग्राम का, त्याग किए स्वीकार।
शान्तिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं द्वेष-दोषरहित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८०॥

सोलह ध्यान

(लघु चौपाई)

आर्त्त-ध्यान तज इष्ट वियोग, स्वामी दें सुख के संयोग।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं इष्टवियोग-हर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८१॥

आर्त्त-ध्यान अनिष्ट संयोग, हम भी इसका नाशें रोग।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं अनिष्टसंयोग-हर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८२॥

आर्त्त-ध्यान पीड़ा प्रतिकार, दूर करें यह दुख का द्वार।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं पीड़ाचिंतनन-हर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८३॥

आर्त्त-ध्यान तज निदान बंध, हमको देता परमानंद।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं निदानबंध-हर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८४॥

रौद्र-ध्यान हिंसा-आनंद, कब छूटे यह भव का बंध।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं हिंसानंद-हर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८५॥

रौद्र-ध्यान झूठा-आनंद, शीघ्र त्याग दें सारे द्वंद्व।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं मृषानंद-हर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८६॥

रौद्र-ध्यान चोरी-आनंद, त्यागें यह ईर्ष्या की गंध।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं चौर्यानंद-हर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८७॥

रौद्र-ध्यान परिग्रह-आनंद, पतन-पथों का त्यागें छंद।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं परिग्रहानंद-हर्त्ता श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८८॥

धर्म-ध्यान आज्ञाविचयाय, आज्ञा पालन हमें सिखाय।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं आज्ञाविचय-धर्मध्यानी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८९॥

धर्म-ध्यान अपायविचयाय, दुख दरिद्र से हमें बचाय।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं अपायविचय-धर्मध्यानी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९०॥

धर्म-ध्यान विपाकविचयाय, कर्मबंध से हमें बचाय।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं विपाकविचय-धर्मध्यानी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९१॥

धर्म-ध्यान संस्थानविचयाय, सिद्धशिला हमको दिलवाय।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं संस्थानविचय-धर्मध्यानी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९२॥

शुक्ल-ध्यान पृथकत्ववितर्क, देता सुख इसमें ना तर्क।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं पृथकत्ववितर्क-शुक्लध्यानी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९३॥

शुक्ल-ध्यान एकत्ववितर्क, समवसरण दे सारे हर्ष।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं एकत्ववितर्क-शुक्लध्यानी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९४॥

शुक्ल-ध्यान तीजा सुखकार, दे सम्मेदशिखर शिवद्वार।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती-शुक्लध्यानी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९५॥

शुक्ल-ध्यान चौथा हितकार, मोक्षमहल दायक उपकार।
शान्तिप्रभु की जय जयकार, करें नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं व्युपरतक्रियानिर्वृतीनि-शुक्लध्यानी श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९६॥

आठ भूमियाँ

(जोगीरसा)

चैत्यप्रासाद भूमि है पहली, समवसरण में सोहे।
तीर्थंकर के चैत्य बिम्ब से, पाप हरे मन मोहे॥
शान्तिप्रभु जी इसके स्वामी, दुनियाँ शुद्ध बनाओ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, सुख समृद्धि दिलाओ॥

ॐ ह्रीं चैत्यप्रासाद-भूमिमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९७॥

रही खातिका भूमि दूसरी, सारे द्वंद्व मिटाए।
खण्ड-खण्ड को अखण्ड करके, मैत्री भाव बढ़ाए॥
शान्तिप्रभु जी इसके स्वामी, दुनियाँ शुद्ध बनाओ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, सुख समृद्धि दिलाओ॥

ॐ ह्रीं खातिका-भूमिमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९८॥

लता भूमि है भूमि तीसरी, सब जग को महकाए।
भक्तिपुष्प की कलियों को दे, चेतनबाग सजाए॥
शान्तिप्रभु जी इसके स्वामी, दुनियाँ शुद्ध बनाओ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, सुख समृद्धि दिलाओ॥

ॐ ह्रीं लता-भूमिमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९९॥

उपवन भूमि चौथी भूमि, पाप महावन नाशे।
जीवन करे तपोवन मंगल, सिद्ध शहर में वासे॥

शान्तिप्रभु जी इसके स्वामी, दुनियाँ शुद्ध बनाओ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, सुख समृद्धि दिलाओ॥

ॐ ह्रीं उपवन-भूमिमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १००॥

ध्वजभूमि पंचम भूमि ने, धर्मध्वजा है थामी।
धर्म-छाँव की तले बिठाए, मुक्त करे आगामी॥
शान्तिप्रभु जी इसके स्वामी, दुनियाँ शुद्ध बनाओ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, सुख समृद्धि दिलाओ॥

ॐ ह्रीं ध्वज-भूमिमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०१॥

कल्पभूमि छठवीं भूमि ने, कायाकल्प कराया।
कल्पतरु के सुख वितरित कर, मोक्ष बीज उगवाया॥
शान्तिप्रभु जी इसके स्वामी, दुनियाँ शुद्ध बनाओ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, सुख समृद्धि दिलाओ॥

ॐ ह्रीं कल्प-भूमिमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०२॥

स्तूप मंडप भवन भूमि ने, सिद्धालय झलकाया।
दुखी दरिद्री बेघर जन को, सक्षम सफल बनाया॥
शान्तिप्रभु जी इसके स्वामी, दुनियाँ शुद्ध बनाओ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, सुख समृद्धि दिलाओ॥

ॐ ह्रीं स्तूप-भूमिमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०३॥

श्रीमण्डप अष्टम भूमि तो, गंधकुटी मन भाई।
सिंहासन कमलासन जिन पर, वीतराग सुखदाई॥
शान्तिप्रभु जी इसके स्वामी, दुनियाँ शुद्ध बनाओ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, सुख समृद्धि दिलाओ॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डप-भूमिमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०४॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगितिका)

तीर्थंकरों के पूज वैभव, प्राप्त हो वैभव हमें।
संसार के जड़ भोग तज हम, शान्तिप्रभु पूजें तुम्हें॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं चतुरुत्तरशत गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री चतुरुत्तरशत गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

सीना तो तानो
पसीना तो बहा दो
सही दिशा में

१४. श्री शान्तिनाथ विधान (११२-अर्घ्य)

शत (१००) इन्द्रों द्वारा पूजन

चालीस भवनवासी इन्द्र-प्रतीन्द्र

(हाकलिका)

असुरकुमार इन्द्र पूजें, श्री **सम्मेदशिखर** गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं असुरकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १॥

असुरकुमार इन्द्र पूजें, **हरदा जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं असुरकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २॥

असुरकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **हस्तिनापुर** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं असुरकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३॥

असुरकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **भोजपुर जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं असुरकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४॥

नागकुमार इन्द्र पूजें, **ईशुरवारा** जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं नागकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५॥

नागकुमार इन्द्र पूजें, **रामटेक** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं नागकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६॥

नागकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **पजनारी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं नागकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७॥

नागकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **सहराई जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं नागकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८॥

विद्युत्कुमार इन्द्र पूजें, **बजरंगगढ़** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९॥

विद्युत्कुमार इन्द्र पूजें, **सवेरा जी** में गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०॥

विद्युत्कुमार प्रतीन्द्र पूजें, **बानपुर जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ११॥

विद्युत्कुमार प्रतीन्द्र पूजें, **मदनपुर जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १२॥

सुपर्णकुमार इन्द्र पूजें, **सद्लगा जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १३॥

सुपर्णकुमार इन्द्र पूजें, **सूर्यनगर** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं श्री सुपर्णकुमार-इन्द्रपूजित शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १४॥

सुपर्णकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **सिहोनियाँ जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १५॥

सुपर्णकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **टिकटौली** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १६॥

द्वीपकुमार इन्द्र पूजें, **दरगुवांजी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १७॥

द्वीपकुमार इन्द्र पूजें, **कारीटोरन** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १८॥

द्वीपकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **देवगढ़ जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १९॥

द्वीपकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **गोसलपुर** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २०॥

अग्निकुमार इन्द्र पूजें, **अजयगढ़ जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २१॥

अग्निकुमार इन्द्र पूजें, **पनिहार जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २२॥

अग्निकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **खजुराहो** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २३॥

अग्निकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **लूणवा जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २४॥

वातकुमार इन्द्र पूजें, **बहोरीबंद** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं वातकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २५॥

वातकुमार इन्द्र पूजें, **कोथली जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं वातकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २६॥

वातकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **थूवौन जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं वातकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २७॥

वातकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **प्रतापगढ़** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं वातकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २८॥

स्तनितकुमार इन्द्र पूजें, **समसगढ़ जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ २९॥

स्तनितकुमार इन्द्र पूजें, **पाटन जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३०॥

स्तनितकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **साखना जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३१॥

स्तनितकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **सेंरोन जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३२॥

उदधिकुमार इन्द्र पूजें, **पनागर जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३३॥

उदधिकुमार इन्द्र पूजें, **उरवाहा जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३४॥

उदधिकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **पचराई जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३५॥

उदधिकुमार प्रतीन्द्र पूजें, **आवाँ जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३६॥

दिक्कुमार इन्द्र पूजें, **सेसई जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३७॥

दिक्कुमार इन्द्र पूजें, **बीना जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३८॥

दिक्कुमार प्रतीन्द्र पूजें, **पहाड़ी जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ३९॥

दिक्कुमार प्रतीन्द्र पूजें, **बम्मोत्तर** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४०॥

बत्तीस व्यंतर इन्द्र-प्रतीन्द्र

किन्नर देव इन्द्र पूजें, **अष्टापद** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं किन्नर -इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४१॥

किन्नर देव इन्द्र पूजें, **चम्पापुर** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं किन्नर-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४२॥

किन्नर देव प्रतीन्द्र पूजें, **गिरनारी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं किन्नर-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४३॥

किन्नर देव प्रतीन्द्र पूजें, **पावापुरी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं किन्नर-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४४॥

किंपुरुषों के इन्द्र पूजें, **राजगृही** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं किंपुरुष-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४५॥

किंपुरुषों के इन्द्र पूजें, **मंदारगिरि** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं किंपुरुष-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४६॥

किंपुरुष प्रतीन्द्र सुर पूजें, **गुणावा** जी में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं किंपुरुष-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४७॥

किंपुरुष प्रतीन्द्र सुर पूजें, **मांगीतुंगी** जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं किंपुरुष-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४८॥

महोरग इन्द्र सुर पूजें, **सोनागिरि** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं महोरग-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ४९॥

महोरग इन्द्र सुर पूजें, **पावागिरि** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं महोरग-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५०॥

महोरग के प्रतीन्द्र सुर पूजें, **नैनागिरि** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं महोरग-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५१॥

महोरग के प्रतीन्द्र पूजें, **सिद्धोदय** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं महोरग-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५२॥

गंधर्वों के इन्द्र पूजें, **मुक्तागिरि** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं गंधर्व-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५३॥

गंधर्वों के इन्द्र पूजें, **सिद्धवरकूट** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं गंधर्व-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५४॥

गंधर्वों के प्रतीन्द्र पूजें, **द्रोणागिरी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं गंधर्व-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५५॥

गंधर्वों के प्रतीन्द्र पूजें, **अहार जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं गंधर्व-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५६॥

यक्ष इन्द्र प्रभु को पूजें, **कुण्डलपुर** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं यक्ष-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५७॥

यक्ष इन्द्र प्रभु को पूजें, **ऊन** क्षेत्र में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं यक्ष-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५८॥

यक्ष प्रतीन्द्र देव पूजें, **गोपाचल** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं यक्ष-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ५९॥

यक्ष प्रतीन्द्र देव पूजें, **मथुरा जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं यक्ष-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६०॥

राक्षस देव इन्द्र पूजें, **शौरीपुर** में जय गूँजे।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं राक्षस-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६१॥

राक्षस देव इन्द्र पूजें, **गजपंथा** में जय गूँजे।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं राक्षस-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६२॥

राक्षस के प्रतीन्द्र पूजें, **कुंथलगिरी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं राक्षस-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६३॥

राक्षस के प्रतीन्द्र पूजें, **कचनेर जी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं राक्षस-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६४॥

भूत इन्द्र प्रभु को पूजें **कलिकुण्ड** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं भूत-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६५॥

भूत इन्द्र प्रभु को पूजें, **कोटिशिला** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं भूत-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६६॥

भूतों के प्रतीन्द्र पूजें, **वैजंती** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं भूत-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६७॥

भूतों के प्रतीन्द्र पूजें, **जयसिंहपुर** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं भूत-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६८॥

पिशाचों के इन्द्र पूजें, **उज्जैनी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं पिशाच-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ६९॥

पिशाचों के इन्द्र पूजें, **चूलगिरी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं पिशाच-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७०॥

पिशाच के प्रतीन्द्र पूजें, **फलहोड़ी** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं पिशाच-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७१॥

पिशाच के प्रतीन्द्र पूजें, **शत्रुंजय** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं पिशाच-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७२॥

ज्योतिष देव (दो)

चन्द्र इन्द्र प्रभु को पूजें, **पावागढ़** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं चंद्र-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७३॥

सूर्य प्रतीन्द्र प्रभु पूजें, **तारंगा** में जय गूँजें।
हम तो नमोऽस्तु रोज करें, शान्तिप्रभु सुख शान्ति करें॥

ॐ ह्रीं सूर्य-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७४॥

वैमानिक इन्द्र-प्रतीन्द्र (चौबीस)

(जोगीरासा)

देव इन्द्र सौधर्म स्वर्ग के, मध्यलोक के स्वामी।
सभी पंच कल्याण मनाएँ, जिनवर के अनुगामी॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं सौधर्म-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७५॥

जो प्रतीन्द्र सौधर्म स्वर्ग के, इन्द्रों के अनुगामी।
पाँचों कल्याणक में शामिल, होकर करें नमामि॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं सौधर्म-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७६॥

देव इन्द्र ईशान स्वर्ग के, स्वर्गों के आसामी।
सदा साथ सौधर्म इन्द्र का, देकर पूजें स्वामी॥

मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं ईशान-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७७॥

जो प्रतीन्द्र ईशान स्वर्ग के, इन्द्रों के अनुगामी।
ढाईद्वीप के धर्म ध्यान में, शामिल हों अविरामी॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं ईशान-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७८॥

सनतकुमार इन्द्र श्रद्धा से, करें अर्चना नाचें।
जिनशासन की ध्वज फहराएँ, यश गाथा को वांचें॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं सनतकुमार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ७९॥

सनतकुमार प्रतीन्द्र सदा ही, सम्यक ज्ञान सराहें।
बहिरातम तज अंतर आतम, बन परमातम न ध्यायें॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं सतनकुमार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८०॥

जो माहेन्द्र इन्द्र होते वो, मोक्षमार्ग अपनाएँ।
पाप व्यसन की कथा त्यागकर, संस्कारी हो जाएँ॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८१॥

सुर माहेन्द्र प्रतीन्द्र मगन हों, जिनवर की सेवा में।
स्वर्गों का साम्राज्य भूलकर, रमें ईश अर्चा में॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८२॥

ब्रह्म इन्द्र ब्रह्माण्ड भ्रमण कर, शरण कहीं ना पाए।
तब जाकर सर्वज्ञ देव के, समवसरण में आए॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८३॥

ब्रह्म प्रतीन्द्र सदा ही खोजें, प्रभु की छत्र-छाया।
नाथ अनाथों के पाकर के, मिले धर्म की माया॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८४॥

लान्तव इन्द्र साधना के पथ, पाने को ललचाएँ।
सो तीर्थंकर प्रभु पूजकर, अपना पुण्य बढ़ाएँ॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं लान्तव-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८५॥

लान्तव प्रतीन्द्र बड़भागी बन, लाड़-प्यार झलकाएँ।
लालकमल सम प्रभु पगतलियाँ, भजने को अकुलाएँ॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं लान्तव-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८६॥

शुक्र इन्द्र सम्यग्दर्शन को, प्रभु-दर्शन को आएँ।
रत्नत्रय की राह पकड़ने, मानव कुल को चाहें॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं शुक्र-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८७॥

शुक्र प्रतीन्द्र महा पूजा को, दिव्यम् द्रव्य सजाते।
महा अर्चना करके अपना, सोया भाग्य जगाते॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं शुक्र-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८८॥

शतार इन्द्र भक्ति के द्वारा, मानव लोक पधारें।
तीर्थंकर का वैभव देखें, अपलक उन्हें निहारें॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं शतार-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ८९॥

शतार प्रतीन्द्र करें प्रतिज्ञा, पाप पंथ को छोड़े।
पुण्यफला अरिहंता भजने, अपने पथ को मोड़े॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं शतार-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९०॥

आनत इन्द्र आप्त आगम के, होते हैं अनुयायी।
आतंकों का भय हरने को, मंत्र जपें सुखदाई॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं आनत-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९१॥

आनत प्रतीन्द्र की परिपाटी, पीड़ा के पथ रोके।
परमेष्ठी का जाप भजन कर, हरें कर्म के धोखे॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं आनत-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९२॥

प्राणत इन्द्र जिनेश्वर जी की, धार्मिक धार बहाएँ।
अपनी कर्म कालिमा धोने, समकित रूप नहाएँ॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं प्राणत-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९३॥

प्राणत प्रतीन्द्र की आस्था ने, आराधक आराधे।
संकट दुख उपसर्ग मिटाने, कार्य करें ना आधे॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं प्राणत-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९४॥

आरण इन्द्र उदाहरण बनते, करके पुण्य कमाई।
योगी के सहयोगी बनके, हरते वैर-बुराई॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं आरण-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९५॥

आरण प्रतीन्द्र परमेश्वर की, प्रतिमा खूब तराशें।
अरिहन्तों की प्रतिमा पूजें, स्व में स्वयं तलाशें॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं आरण-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९६॥

अच्युत इन्द्र बड़े अदभुत हों, अतिशय खूब दिखाएँ।
चमत्कार को नमस्कार कर, अपने कर्म खिपाएँ॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं अच्युत-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९७॥

अच्युत प्रतीन्द्र सेवक बनकर, स्वामी को सत्कारें।
वीतराग की करें प्रशंसा, अपना भाग्य सँवारे॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं अच्युत-प्रतीन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९८॥

नर के इन्द्र **चक्रवर्ती** भी, निज षट्खण्ड तजें रे।
रत्नत्रय निज निधि पाने को, श्री जिनराज भजें रे॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं नर-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ९९॥

तिर्यंचों के इन्द्र **सिंह** भी, पूजें प्रभु के चरणा।
वध बन्धन के कष्ट त्यागने, भजें चरण प्रभु शरणा॥
मय परिवार जिनालय आके, शान्तिप्रभु को पूजें।
भक्ति भाव से नमोऽस्तु करके, जय-जयकारे गूँजें॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच-इन्द्रपूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १००॥

बारह तप (विष्णु)

मोक्षमार्ग में करें साधना, संयम वृद्धि को।
चउ विध का आहार त्याग दें, सुख समृद्धि को॥
शीघ्र स्वस्थ होने को अनशन, तप कर लें आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अनशन-तपोमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०१॥

भोजन राग गृद्धता तजने, कम आहार करें।
करे भूख से कम भोजन तो, सुख से कार्य करें॥
प्रेम बढ़ाने को ऊनोदर, तप कर लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं ऊनोदर-तपोमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०२॥

भिक्षा लेने नियम बनाकर, गवेषणा करना।
पुण्य परीक्षा करके अपना, हृदय बड़ा करना॥
वृत्तिपरिसंख्यान नाम का, तप कर लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं वृत्तिपरिसंख्यान-तपोमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०३॥

करने दमन इंद्रियाँ अपनी, षट्-रस त्याग करें।
आतम के रसपान हेतु ही, जड़ के स्वाद तजें॥
रस परित्याग साधना वाला, तप कर लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं रसपरित्याग-तपोमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०४॥

ज्ञान ध्यान स्वाध्याय सिद्धि को, जो एकांत वसें।
बैठें सोएँ ध्यान लगाएँ, आतम में हरषें॥
विविक्तशय्यासन का पावन, तप कर लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासन-तपोमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०५॥

काया की माया से ममता, मूर्च्छा त्याग करें।
सम्यक् आतापन इत्यादिक, धारण योग करें॥

कल्पवृक्ष सम कायक्लेश का, तप कर लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं कायक्लेश-तपोमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०६॥

प्रमाद या अज्ञान भाव से, जो भी दोष लगें।
उन्हें शुद्ध करने के हेतु, उत्तम क्षमा धरें॥
प्रायश्चित्त तपस्या वाला, तप कर लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं प्रायश्चित्त-तपोमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०७॥

पूज्य जनों की आज्ञा पालन, निज कर्तव्य करें।
रत्नत्रय की बहे त्रिवेणी, मन को शुद्ध करें॥
सम्यक् विनय साधना वाला, तप कर लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं विनय-तपोमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०८॥

तन मन धन वचनों के द्वारा, मुनि सेवा करना।
योगी के प्रतियोगी ना हों, ऐसा पथ चलना॥
धर्म बीज को वैय्यावृत्ति, तप कर लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति-तपोमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १०९॥

तज आलस्य ज्ञान भावों में, सम्यक् लीन रहें।
करें तत्त्व अभ्यास सदा ही, आत्म प्रवीण रहें॥
अंग सहित स्वाध्याय नाम का, तप कर लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं स्वाध्याय-तपोमण्डित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ११०॥

अहंकार ममकार परिग्रह, वाला त्याग करें।
भार त्याग कर हल्के होकर, नैया पार करें॥
यह व्युत्सर्ग साधना वाला, तप कर लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग-तपोमण्डिमत श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ १११॥

त्याग चित्त की चंचलता को, सारे व्यग्र हरें।
तत्त्व चेत्तना के चिंतन में, मन एकाग्र करें॥
सम्यक् ध्यान लगाने वाला, तप कर लें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं ध्यान-तपोमण्डिमत श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥ ११२॥

पूर्णार्घ्य

(हरीगीतिका)

शत इन्द्र पूजित लोक में, जिनराज जी के मंत्र हैं।
सो भक्त करके अर्चनाएँ, चल रहे जिनपंथ हैं॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकशत गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री द्वादशाधिकशत गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

१५. श्री शान्तिनाथ विधान (१२० अर्घ्य)

संस्कृत का भाषानुवाद

अष्टप्रातिहार्य

(हाकलिका)

अशोक तरुवर हरे भरे, शान्तिप्रभु सम शोक हरे।
हं बीजाक्षरमय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ह्म्ल्र्व्यूं बीज सहित अशोक तरु सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१॥

दिव्य सुमन सुर बरसाते, शान्तिप्रभु सम सुख लाते।
भं बीजाक्षरमय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भ्म्ल्र्व्यूं बीज सहित पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२॥

दिव्य ध्वनि ओंकारमयी, सुख संपद दे नयी-नयी।
मं बीजाक्षरमय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं म्म्ल्र्व्यूं बीज सहित दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३॥

चँवर ढुरायें चौसठ देव, उर्ध्वगमन होता स्वयमेव।
रं बीजाक्षरमय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं र्म्ल्र्व्यूं बीज सहित चामर सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४॥

शान्तिप्रभु सिंहासन पर, ऋद्धि सिद्धि दें मोहितकर।
घं बीजाक्षरमय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं घ्म्ल्र्व्यूं बीज सहित सिंहासन सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५॥

सात भवों को भामण्डल, दर्शाकर करता मंगल।
झं बीजाक्षरमय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं झ्म्ल्व्र्यूं बीज सहित भामंडल सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्ति-कराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६॥

देवदुंदुंभि वाद्य बजें, दसों-दिशा तक गूँज उठें।
सं बीजाक्षरमय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं स्म्ल्व्र्यूं बीज सहित देवदुंदुभि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्ति-कराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७॥

तीन लोक के अधिपति जो, तीन छत्र से शोभित सो।
खं बीजाक्षरमय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ख्म्ल्व्र्यूं बीज सहित छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्ति-कराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८॥

पंच परमेष्ठी

(सखी)

प्रभु तीर्थंकर अरिहन्ता, जय शान्तिनाथ भगवंता।
भण्डार गुणों का पाएँ, हम करके नमोऽस्तु ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय अरिहंतपरमेष्ठी-स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९॥

प्रभु सकल सिद्ध अविनाशी, जय शान्तिनाथ विधि नाशी।
पथ वीतरागता पाएँ, हम करके नमोऽस्तु ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय सिद्धपरमेष्ठी स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०॥

गुरु पंचाचार विधाई, जय शान्तिनाथ सुखदाई।
हर दुर्गुण व्यसन नशाएँ, हम करके नमोऽस्तु ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय आचार्यपरमेष्ठी स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११॥

हे! उपाध्याय श्रुत स्वामी, जय शान्तिनाथ निजध्यानी।
भय वैर विरोध नशाएँ, हम करके नमोऽस्तु ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय उपाध्यायपरमेष्ठी स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१२॥

निर्ग्रंथ साधु मुनि रूपा, जय शान्तिनाथ चिद्रूपा।
प्रभु हमको शरण बुलाएँ, हम करके नमोऽस्तु ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय साधुपरमेष्ठी स्वरूप श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१३॥

रत्नत्रय

निर्दोष सकल गुणधारी, दें शान्तिनाथ हितकारी।
वह सम्यग्दर्शन पाएँ, हम करके नमोऽस्तु ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय सम्यग्दर्शन प्राप्तये श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१४॥

जो दोष रहित जिनवाणी, दें शान्तिनाथ कल्याणी।
वह सम्यग्ज्ञानम् पाएँ, हम करके नमोऽस्तु ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय सम्यग्ज्ञान प्राप्तये श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१५॥

श्री चारित्तं खलु धम्मो, प्रभु शान्तिनाथजी तुम हो।
निर्दोष चरित वह पाएँ, हम करके नमोऽस्तु ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय सम्यक्चारित्र प्राप्तये श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१६॥

अष्ट कर्म

(हाकलिका)

कर्म हरे ज्ञानावरणी, पूज्य बनें अनन्तज्ञानी।
धर्म दान शुभ वस्तु दो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मसम्बन्धी उपद्रव निवारक अनन्तज्ञानगुण धारक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१७॥

हरे दर्शनावरणी जो, अनन्तदर्शन स्वामी वो।
निज दर्शन की वस्तु दो शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मसम्बन्धी उपद्रव निवारक अनन्तदर्शनगुण धारक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१८॥

वेदनीय पर विजय किए, अनन्त सुख को भोग लिए।
आतम सुख की वस्तु दो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मसम्बन्धी उपद्रव निवारक अनन्तसुखगुण धारक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१९॥

मोहनीय को नष्ट किए, अनन्तसम्यक् प्राप्त किए।
श्रद्धा सुख की वस्तु दो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मसम्बन्धी उपद्रव निवारक अनन्तसम्यक्गुण धारक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२०॥

आयु कर्म के बंधन को, नष्ट किए भव क्रन्दन को।
चरण शरण की वस्तु दो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं आयुकर्मसम्बन्धी उपद्रव निवारक अव्याबाधत्वगुण धारक श्रीशान्ति-नाथाय अर्घ्यं...॥२१॥

नामकर्म के रंग हरे, आतम को निस्संग करे।
सूक्ष्म स्वरूपी वस्तु दो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं नामकर्मसम्बन्धी उपद्रव निवारक अगुरुलघुत्वगुण धारक श्रीशान्ति-नाथाय अर्घ्यं...॥२२॥

गोत्र कर्म परिहार किए, आतम का शृंगार किए।
सर्वोत्तम निज वस्तु दो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मसम्बन्धी उपद्रव निवारक सूक्ष्मत्वगुण धारक श्रीशान्ति-नाथाय अर्घ्यं...॥२३॥

अंतराय नाशे पाँचों, अनन्तवीर्य का यश वाँचों।
आत्म शक्ति की वस्तु दो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं अंतरायकर्मसम्बन्धी उपद्रव निवारक अनन्तवीर्य धारक श्रीशान्ति-नाथाय अर्घ्यं...॥२४॥

बत्तीस इन्द्रों द्वारा पूजन

(अर्द्ध जोगीरासा)

असुर इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२५॥

नाग इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२६॥

विद्युत इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२७॥

सुपर्ण इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२८॥

अग्नि इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२९॥

वात इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३०॥

स्तनित इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३१॥

उदधि इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३२॥

द्वीप इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३३॥

दिशा इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३४॥

किन्नर इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३५॥

किम्पुरुष इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३६॥

महोरग इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं महोरगेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३७॥

गंधर्व इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं गन्धर्वेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३८॥

यक्ष इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं यक्षेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३९॥

राक्षस इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ ॥
ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४०॥

भूत इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं भूतेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४१॥

पिशाच इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४२॥

चंद्र इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं चंद्रनामकेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४३॥

सूर्य इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं भास्करेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४४॥

सौधर्म इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४५॥

ईशान इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं ईशानेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४६॥

सनत इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं सनत्कुमारेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४७॥

माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं माहेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४८॥

ब्रह्म इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४९॥

लान्तव इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५०॥

शुक्र इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५१॥

शतार इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं शतारेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५२॥

आनत इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं आनतेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५३॥

प्राणत इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५४॥

आरण इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं आरणेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५५॥

अच्युत इन्द्र परिवार सहित श्री- शान्तिनाथ गुण गाएँ।
करके नमोऽस्तु हम भी पूजें, शान्ति-विधान रचाएँ॥
ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रेण पूजित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५६॥

(हाकलिका)

मन के सभी विकार हरें, सुख-धन की बौछार करें।
शान्तिनाथ सुखशान्ति दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥
ॐ ह्रीं मानसिक विकारोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५७॥

वचनों के सब दोष हरें, भक्तों को निर्दोष करें।
शान्तिनाथ संपत्ति दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं वाचनिक विकारोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५८॥

तन के सभी विकार हरें, आतम को भव पार करें।
शान्तिनाथ भव मुक्ति दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं कायिक-विकारोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५९॥

देश राज्य घर नगरों के, हरें उपद्रव भक्तों के।
शान्तिनाथ मंगल कर दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं जिनराज-लक्ष्मीपुरगेहोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६०॥

कर्मोदय जब अशुभ हुए, धन दौलत दारिद्र हुए।
शान्तिनाथ अच्छा कर दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं दारिद्रोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६१॥

कुष्ट जलोदर कैंसर सम, रोग उपद्रव हों उपशम।
शान्तिनाथ निरोग कर दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं भीम-भगंदर-गलितकुष्ठ-गुल्म-जलोदर-रक्त-पित्त-कफ-वात-स्फोटकादि उपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६२॥

इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग, हरें उपद्रव दुख के योग।
शान्तिनाथ सुख भर-भर दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं इष्टवियोगानिष्टसंयोगोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६३॥

सेना वाले सभी कलंक, हरें उपद्रव भय आतंक।
शान्तिनाथ निर्भय कर दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं स्वचक्र-परचक्रोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६४॥

अस्त्र शस्त्र हथियारों के, हरें उपद्रव वारों के।
शान्तिनाथ निशंक कर दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं विविधायुधोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६५॥

मगरमच्छ जल-पानी के, हरें उपद्रव प्राणी के।
शान्तिनाथ पार कर दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं दुष्टजलचरजीवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६६॥

सिंहादिक वनवासी के, हरें उपद्रव यात्री के।
शान्तिनाथ यात्रा सुख दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं व्याघ्र-सिंह-गजादिकोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६७॥

क्रूर जीव धरती नभ के, हरें उपद्रव हम सब के।
शान्तिनाथ स्वतंत्र कर दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं भूचर-गगनचर-क्रूर-जीवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं॥६८॥

सर्प विच्छू जो जहरीले, हरें उपद्रव विष वाले।
शान्तिनाथ अमृत कर दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं व्याल-वृश्चिकादि-विषोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६९॥

पैने विष नख सींगों के, हरें उपद्रव जीवों के।
शान्तिनाथ मंगल कर दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं दुष्टजीव-पद-कर-नखोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७०॥

दाँत चोंच मुख पशुओं के, हरें उपद्रव दुखियों कें।
शान्तिनाथ अबंध कर दें, हम नमोऽस्तु सादर कर लें॥

ॐ ह्रीं चंचु-तुंड-दाढ़-कंटकोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७१॥

भीषण ज्वाला आगों के, हरें उपद्रव भव्यों के।
शान्तिनाथ शीतल कर दें, हम नमोऽस्तु सादर कर ॥

ॐ ह्रीं दावानलोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७२॥

(जोगीरासा)

पवन वेग के हरें उपद्रव, आँधी तूफां सारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं प्रचण्ड-पवनोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७३॥

नाव जहाज के हरें उपद्रव, सागर बीच किनारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं नौका-स्फोट-पतनोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७४॥

वन पर्वत के हरें उपद्रव, भू-मण्डल आधारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं वन-नग-मेदिनी-भयंकरोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं.॥७५॥

नदी कुंआ के हरें उपद्रव, झील जलाशय वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं नदी-सरोवराब्धि-कूप-ह्रदोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं.॥७६॥

देव योग के हरें उपद्रव, प्रकृति प्रदत्त सारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं विद्युत्पातादि-उपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७७॥

युद्ध शत्रु के हरें उपद्रव, अस्त्रों शस्त्रों वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं संग्राम-स्थलादिनिकटोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७८॥

कर्मोदय के हरें उपद्रव, भूत पिशाचों वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं डाकिनी-शाकिनी-भूत-पिशाचादिभय निवारकाय श्री शान्ति-नाथाय अर्घ्यं...॥७९॥

दुर्विद्या के हरें उपद्रव, तन्त्रों मन्त्रों वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं मोहन-स्तम्भनोच्चाटन-प्रमुख-दुष्टविद्योपद्रव-निवारकाय श्री शान्ति-नाथाय अर्घ्यं...॥८०॥

मिथ्यागुण के हरें उपद्रव, दुष्ट नवग्रह वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं दुष्टग्रहाद्युपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८१॥

वध-बंधन के हरें उपद्रव, लोह शृंखला वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं शृंखलाद्युपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८२॥

अल्प आयु के हरें उपद्रव, कर्म असाता वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं अल्पमृत्युपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८३॥

दुख-दुर्भिक्ष के हरें उपद्रव, भूख-प्यास के सारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८४॥

व्यापारों के हरें उपद्रव, सम्पत्ति बंटवारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं व्यापारवृद्धि-रहित्योपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८५॥

घर-कुटुम्ब के हरें उपद्रव, वैर विरोधों वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं बंधुत्वोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८६॥

घर-बाहर के हरें उपद्रव, बिन सम्बन्धों वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं अकुटुम्बत्वोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८७॥

अपमानों के हरें उपद्रव, मन संतापों वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं अपकीर्त्युपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८८॥

जग कल्याणी मिले सम्पदा, रत्नत्रय गुण सारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्णकल्याण-मंगलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८९॥

चिंतामणि सम मिले सम्पदा, शुभ-लाभों के द्वारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं चिंतामणिसमान-चिंतित-फलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९०॥

कल्पवृक्ष सम मिले सम्पदा, सुख संयोगों वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षोपम-कल्पितार्थ-फलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९१॥

कामधेनु सम मिले सम्पदा, इच्छित पदार्थ सारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं कामधेनूपम-कामनापूर्ण-फलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९२॥

धर्म-ध्यान की मिले सम्पदा, अंतराय सब टारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वल-धर्मध्यान-बाधारहित-अनवद्यबोधप्रदाय श्रीशान्ति-नाथाय अर्घ्यं...॥९३॥

कामदेव सम मिले सम्पदा, उत्सव नयन सितारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं कामदेवस्वरूप-प्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९४॥

स्वस्थ देह की मिले सम्पदा, देह सुगंधित सारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं सुगंधितशरीर-प्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९५॥

चिदानंद की मिले सम्पदा, भव्य कमल गुण सारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथ-आह्लादकारक-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९६॥

परम गुणों की मिले सम्पदा, धवल विमल गुण सारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वल-गुणगण-सहित-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९७॥

वाचस्पति सम मिले सम्पदा, प्रतिभा सम्मान सारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं वाचस्पतिसमान-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९८॥

चक्रवर्ति सम मिले सम्पदा,निधियाँ रत्न सहारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं चक्रवर्तिसमान-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९९॥

मुक्तिवधू सम मिले सम्पदा, उच्च कुलीन सहारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं उच्चकुल-प्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१००॥

व्रत-श्रावक की मिले सम्पदा, उत्तम संयम वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं श्रावक-सद्वृत्तकरण-बुद्धिप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०१॥

यशवर्धन की मिले सम्पदा, जो कीर्ति विस्तारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वल-कीर्तिप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०२॥

राजपाठ की मिले सम्पदा, निज वैराग्य संभारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं कल्याणकर-राजधनदसम-लक्ष्मीप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०३॥

देव मनुज की मिले सम्पदा, पशु नारकी टारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं नरकतिर्यंच-गतिरहित-नरसुर-गतिसहित-भवप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०४॥

तीर्थकर की मिले सम्पदा, सोलहकारण सारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं षोडशकारण-भावना-साधन-बलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०५॥

पुत्ररत्न की मिले सम्पदा, सोलह सपने वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रतुल्यपुत्र-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०६॥

जिनवर शिशु की मिले सम्पदा, गर्भ जन्म सुख वाले।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं मेरुशिखरे-स्नानयुक्त-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०७॥

मुनि दीक्षा की मिले सम्पदा, भव तन भोग निवारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं सिद्धसाक्षि-दीक्षाकारि-भवप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०८॥

उत्तम संहनन मिले सम्पदा, कर्म कुठार नशा रे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच-संहनन-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०९॥

रत्नत्रय की मिले सम्पदा, यथाख्यात गुण धारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं यथाख्यात-रत्नत्रयाचरण-युक्त-बलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११०॥

शुद्धातम की मिले सम्पदा, शुद्धोपयोग धारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं स्वात्म-ध्यानामृत-स्वादसहित-भवप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१११॥

समवसरण की मिले सम्पदा, बारह सभा निहारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं समवसरण-विभूति-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११२॥

केवलज्ञानी मिले सम्पदा, दिव्य देशना धारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं सत्केवलज्ञान-विभूति-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११३॥

सिद्ध सुखों की मिले सम्पदा, आठों कर्म निवारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं निरंजन-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११४॥

चिदानंद की मिले सम्पदा, रोग शोक दुख हारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं चिदानंदकरण-समर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११५॥

वचनानंदी मिले सम्पदा, बुद्धि विकार निवारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं वचनानंदकरण-समर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११६॥

कायानंदी मिले सम्पदा, आधि.व्याधि परिहारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं कायानंदकरण-समर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११७॥

अर्थ वर्ग की मिले सम्पदा, तीर्थोद्धार सहारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं अर्थ-वर्ग-सिद्धिसाधन-करण-समर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११८॥

काम वर्ग की मिले सम्पदा, जो वैराग्य निखारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं काम-वर्ग-सिद्धिसाधन-करण-समर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११९॥

मोक्ष वर्ग की मिले सम्पदा, चेतन घर शृंगारे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, होते वारे-न्यारे॥

ॐ ह्रीं मोक्षपुरुषार्थ-सिद्धिसाधनकरण-समर्थाय श्री शान्ति-नाथाय अर्घ्यं...॥१२०॥

पूर्णार्घ्य

(हरीगीतिका)

श्री शान्तिनाथ जिनेश जी, आराध्य हैं संसार के।
रतिनाथ हैं चक्रीश हैं, तीर्थेश हैं शिवद्वार के॥
दुख पाप विघ्न समूह आदिक, शान्ति हो भव कर्म की।
ले अर्घ्य हम भी पूजते हैं, प्राप्ति हो निज धर्म की॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं शतैकविंशति गुण सहित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

[इसके बाद पेज नं. २१५ पर जयमाला करके विधान पूर्ण करें।]

॥ इति श्री शतैकविंशति गुण सहित श्री शान्तिनाथ विधान सम्पूर्णम्॥

निश्चिंतता में
भोगी सो जाता, वहीं
योगी खो जाता

१६. श्री शान्तिनाथ महामण्डल विधान (१२० अर्घ्य)

अष्टप्रातिहार्य

(हाकलिका)

अशोक तरुवर हरे भरे, शान्तिप्रभु सम शोक हरे।
हं बीजाक्षर मय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ह्म्ल्व्र्यूं बीज सहित अशोकतरु सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१॥

दिव्य सुमन सुर बरसाते, शान्तिप्रभु सम सुख लाते।
भं बीजाक्षर मय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भ्म्ल्व्र्यूं बीज सहित पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२॥

दिव्यध्वनि ओंकारमयी, सुख सम्पद दे नई-नई।
मं बीजाक्षर मय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं म्म्ल्व्र्यूं बीज सहित दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३॥

चँवर ढुरायें चौंसठ देव, उर्ध्वगमन होता स्वयमेव।
रं बीजाक्षर मय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं र्म्ल्व्र्यूं बीज सहित चामर सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४॥

शान्तिप्रभु सिंहासन पर, ऋद्धि-सिद्धि दें मोहित कर।
घं बीजाक्षर मय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं घ्म्ल्व्र्यूं बीज सहित सिंहासन सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५॥

सात भवों को भामण्डल, दर्शाकर करता मंगल।
झं बीजाक्षर मय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं झ्म्ल्व्र्यूं बीज सहित भामंडल सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्ति-कराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६॥

देव दुंदुंभि वाद्य बजें, दसों-दिशा तक गूँज उठें।
सं बीजाक्षर मय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं स्म्ल्व्र्यूं बीज सहित देवदुंदुभि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्ति-कराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७॥

तीन लोक के अधिपति जो, तीन छत्र से शोभित सो।
खं बीजाक्षर मय भज लो, शान्तिप्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ख्म्ल्व्र्यूं बीज सहित छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य मंडिताय सर्वोपद्रव शान्ति-कराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८॥

श्रावक का सोला वर्णन

(जोगीरासा)

आटे दाल आदि मर्यादित, प्रासुक शुद्ध रहे जो।
अन्न शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
द्रव्य शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं अन्न-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९॥

जीवाणी लायक मर्यादित, प्रासुक नीर रहे जो।
नीर शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
द्रव्य शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं जल-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०॥

जल आहार पकाने लायक, प्रासुक अग्नि रहे जो।
अग्नि शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥

द्रव्य शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं अग्नि-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११॥

आगम विधि से तन वस्त्रों की, दाता शुद्धि रखे जो।
कर्त्ता शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
द्रव्य शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं कर्त्ता-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१२॥

सूर्य प्रकाश वहाँ आता हो, दाता-पात्र जहाँ हो।
प्रकाश शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
क्षेत्र शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं प्रकाश-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१३॥

शुद्ध वायु प्राकृतिक वहाँ हो, दाता-पात्र जहाँ हो।
वायु शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
क्षेत्र शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं वायु-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१४॥

आवागमन वहाँ न होवे, दाता-पात्र जहाँ हो।
गमन शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
क्षेत्र शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं आवागमन-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१५॥

हिंसा मैल गंदगी ना हो, दाता-पात्र जहाँ हो।
हिंसा शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
क्षेत्र शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं हिंसा-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१६॥

रात न हो जब पात्र-दान दो, या आहार बना हो।
रात्रि शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
काल शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं रात्रि-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१७॥

ग्रहण न हो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
ग्रहण शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु,चारित शुद्ध करे जो॥
काल शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं ग्रहण-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१८॥

शोक न हो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
शोक शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
काल शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं शोक-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१९॥

शोर न हो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
शोर शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
काल शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं जन्मशोरविकृति-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२०॥

स्नेह रखो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
स्नेह शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
भाव शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं स्नेह-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२१॥

दया रखो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
दया शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
भाव शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं दया-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२२॥

विनय रखो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
विनय शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
भाव शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं विनय-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२३॥

धर्म समझकर पात्र दान दो, या आहार बना हो।
दान शुद्धि वह कहे शान्तिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
भाव शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शान्तिप्रभु अनमोला॥

ॐ ह्रीं धर्म-आपद-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२४॥

बत्तीस अन्तराय

(विष्णु)

भोजन में मल-मूत्र देह पर, गिरे पक्षियों का।
काक नाम का विघ्न वही जो, हरे शान्ति झौंका॥

शान्तिप्रभु करुणा बरसा के, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं पक्षी-आदिघोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२५॥

पाणि-पात्र से ग्रास कोई भी, पक्षी ले दौड़ें।
काकादिक उस **पिण्डहरण** से, झट भोजन छोड़ें॥
शान्तिप्रभु शुद्धात्म धार से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं शत्रुपतन-पातनादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२६॥

भोजन में जब हुआ वमन तो, भोजन करना क्या।
वमन नाम का विघ्न वही है, उससे डरना क्या?॥
शान्तिप्रभु ज्ञानामृत दे के, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं वमन दिनाई आदि घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२७॥

चर्या में चारांगुल से जब, ज्यादा रुधिर दिखे।
रुधिर नाम का विघ्न समझकर, क्या आहार रुचे॥
शान्तिप्रभु अध्यात्म नीर से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं रक्त विकार-रक्तस्रावादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२८॥

भोज्य काल में अपना पर का, रोना धोना क्यों।
अश्रुपात वह विघ्न समझकर, खाना-पीना क्यों?॥
शान्तिप्रभु निज आत्म क्षमा से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं नेत्रविकार-अश्रुपात-अतिवृष्टि-अनावृष्टि-ओलावृष्टि- असमयवृष्टि-बाढ़-जलादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥२९॥

मृत्यु शोक का समाचार जब, कोई जन सुनता।
मरण नाम का विघ्न समझकर, क्या भोजन रुचता॥
शान्तिप्रभु अपनत्व भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं हत्या-आत्महत्या-भ्रूणहत्यादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३०॥

वाद विवाद कलह के पल में, जो आहार हुआ।
कलह नाम का विघ्न समझकर, देह विकार हुआ॥
शान्तिप्रभु वात्सल्य भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं वादविवाद-कलह-संघर्षादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३१॥

भोज्य काल में पञ्चेन्द्री का, हुआ माँस दर्शन।
माँसदर्श वह विघ्न समझकर, कौन करे भोजन॥
शान्तिप्रभु कारुण्य भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं माँसाहार-निमित्तादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३२॥

यदि आहार समय में कोई, प्राणी वध होता।
उसे **जन्तुवध** विघ्न जानकर, क्या भोजन होता॥
शान्तिप्रभु अपने आश्रय से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं प्राणी-वध-बंधन-चीत्कार-गौहत्यादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्रीशान्ति-नाथाय अर्घ्यं...॥३३॥

भरी अंजली से भोजन का, कुछ भी पिण्ड गिरे।
पिण्डपतन वह विघ्न जानकर, भोजन छोड़ो रे॥
शान्तिप्रभु कल्याण भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं असहनीय-कर्मकष्ट-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३४॥

भोजन में पञ्चेन्द्री प्राणी, पैर-बीच निकलें।
उस **पादांतरजीव** विघ्न में, कभी न भोजन लें॥
शान्तिप्रभु जग मंगल करके, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं हिंस्रपशु-सिंह-सर्पादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३५॥

देव आदि आहार समय में, जो उपसर्ग करें।
उस **देवाद्युपसर्ग** विघ्न में, क्या आहार करें?॥
शान्तिप्रभु साहस धीरज दे, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं बाह्यबाधा-भूतप्रेतपिशाचादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३६॥

अगर भरे या खाली बर्तन, भोज्य-काल गिरते।
उस **भाजनसंपात** विघ्न से, मुनि भोजन तजते॥
शान्तिप्रभु निज ब्रह्मरमण से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं बाह्यपरिग्रह-भाजनादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३७॥

यदि आहारकाल में मल का, हुआ विसर्जन तो।
उस **उच्चार** विघ्न में धर्मी, छोड़ें भोजन को॥
शान्तिप्रभु शुचि रत्नत्रय से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं मल-अवरोध-अतिसार-संग्रहणी-पेचिस-भगंदरबाधादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥३८॥

शुक्र वीर्य या मूत्र पतन यदि, हो आहारों में।
उसे **प्रस्त्रवण** विघ्न समझ के, फँस न विकारों में॥
शान्तिप्रभु निज आत्मशक्ति से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं मूत्रवीर्य-विकारादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं.॥३९॥

अगर उदर से कृमी निकलते, भोजन की अवधि।
उदरकृमिनिर्गमन विघ्न में, खाद्य तजो जल्दी॥
शान्तिप्रभु बन ज्ञाता दृष्टा, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं उदरविकार-कृमि-शूल-पित्त-ज्वर-अपच्यादि-घोरोपद्रव विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४०॥

सूतक पातक वाले घर में, जो आहार हुआ।
वो **अभोज्यगृह** विघ्न उसी से, हा-हाकार हुआ॥
शान्तिप्रभु निज ज्ञान ज्योति से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं सोर-सूतक-पातकादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४१॥

जहाँ नाभि के नीचे सिर को, करके हो जाना।
नाभ्यधोनिर्गमन विघ्न में, कुछ भी ना खाना॥

शान्तिप्रभु परमार्थ भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं कटिप्रदेशनाभि-पदसन्धिविकारादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४२॥

चर्या में यदि महाव्रती जन, कोई गिर जाएँ।
पतन नाम का विघ्न समझकर, कुछ न पिएँ खाएँ॥
शान्तिप्रभु उपकार भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं मूर्च्छा-मिर्गी-तनाव-अवसादादि-घोरोपद्रव -विनाशक श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४३॥

सन्त अगर आहार समय में, गलती से बैठे।
उपवेशन वह विघ्न समझकर, खान-पान छूटे॥
शान्तिप्रभु समरसी भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं पदस्थ-आसनपदासक्ति-आदिघोरोपद्रव-विनाशक श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४४॥

कुत्ता बिल्ली यदि चर्या में, चौके में आते।
सदंश विघ्न से छोड़ अंजली, संत बैठ जाते॥
शान्तिप्रभु वैराग्य भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं श्वान-मार्जार-बर्र-मक्छिकादंशादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४५॥

अशुद्ध नर-नारी यदि छू ले, चर्या काल कभी।
शूद्रस्पर्श का विघ्न समझकर, तज आहार तभी॥

शान्तिप्रभु निज भेदज्ञान से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं दुष्टजन-स्त्री-नपुंसकादिकृत-घोरोपद्रव -विनाशक श्रीशान्ति-नाथाय अर्घ्यं...॥४६॥

अगर अंजली में आ जाए, त्यागी वस्तु तो।
सेवनप्रत्याख्यान विघ्न से, भोजन तज तू तो॥
शान्तिप्रभु निज परिणामों से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं अभक्ष्य-अनुपसेव्य-विकृतरस-विषादिकृत-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४७॥

यदि आहार काल में कर से, भू का हो छूना।
भूमिस्पर्श का विघ्न समझकर, अंतराय करना॥
शान्तिप्रभु निर्मोह भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं भू-पर्वत-गगनादि-सिन्धुकृत-घोरोपद्रव-विनाशक श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥४८॥

भोजन में यदि मुख से कफ-मल, थूक आदि निकले।
निष्ठीवन का विघ्न समझकर, भोजन को तज ले॥
शान्तिप्रभु निर्मल भावों से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं कफ-थूक-मुखविकारादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं..॥४९॥

चर्या में निज या अन्यों पर, हुए प्रहार कभी।
तो **प्रहार** का विघ्न समझकर, छोड़ें भोज्य तभी॥

शान्तिप्रभु तत्त्वोपलब्धि से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं खड्ग-चाकू-अस्त्र-शस्त्रादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५०॥

घुटनों से नीचे यदि अपने, स्पर्श हाथ का हो।
विघ्न **जान्वध** परामर्श से, झट भोजन त्यागो॥
शान्तिप्रभु प्रत्यक्ष भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं स्पर्शरोगादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५१॥

भोजन में यदि नाभि जाँघ के, नीचे हाथ हुए।
विघ्न **जानुपरिव्यतिक्रम** से, भोजन त्याग हुए॥
शान्तिप्रभु निज शुद्ध भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं मर्यादा-उल्लंघनादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं.॥५२॥

अगर अंजली में कोई भी, आकर जीव मरे।
पाणिजन्तुवध विघ्न समझकर, भोजन कौन करे॥
शान्तिप्रभु निज समयसार से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं अरक्षा-सुरक्षा-भयादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५३॥

हाथ पाँव से बिना दान दी, वस्तु ले लेना।
अदत्तदत्तग्रहण विघ्न से, भोजन तज देना॥
शान्तिप्रभु निज चिदानन्द से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं लूटचोरी-अपहरणादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं....॥५४॥

चर्या में यदि शहर नगर में, जब भी आग लगे।
ग्रामदाह का विघ्न समझकर, ज्ञानी भोज्य तजे॥
शान्तिप्रभु चैतन्य भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं भूकम्प-ज्वालामुखी-अग्निदाहादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥५५॥

चर्या में यदि मल मूत्रों से, छपे पैर या तन।
तो **अमेध्य** वह विघ्न समझकर, शीघ्र तजें भोजन॥
शान्तिप्रभु चिद्रूपभाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी!, आप कृपा कर दो॥

ॐ ह्रीं मलमूत्र-उपसर्गादि-घोरोपद्रव-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं.॥५६॥

सोलहकारण भावना

(चौपाई)

निर्मल सम्यग्दर्शन चित धर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
दरशविशुद्धि धरें हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं..॥५७॥

धर्म और धर्मी को झुककर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
विनय सम्पन्न बनें हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं..॥५८॥

दोष रहित व्रत शील धारकर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
कठिन शील धारें हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचार- भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं....॥५९॥

ज्ञान धार में सदा तैरकर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
सदा ज्ञान रत हों हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६०॥

भव-तन भोग विराग धार कर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
नित संवेग धरें हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥
ॐ ह्रीं अभीक्ष्णसंवेग-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६१॥॥

त्याग किया निज शक्ति याद कर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
त्याग करें हम बल से स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥
ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६२॥

इच्छाएँ तज तप से सजकर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
तप धारें हम बल से स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि
ॐ ह्रीं शक्तितस्तप-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६३॥

संतों के उपसर्ग टालकर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
साधुसमाधि पाएँ हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि
ॐ ह्रीं साधुसमाधि-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६४॥

रोगी संतों की सेवा कर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
वैय्यावृत्य करें हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥
ॐ ह्रीं वैय्यावृत्यकरण-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं....॥६५॥

अर्हत् भक्ति विनय से कर कर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
अर्हत्भक्ति करें हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥
ॐ ह्रीं अर्हत्भक्ति-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६६॥

गुरु आचार्य भक्ति को कर कर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
आचार्यभक्ति करें हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥
ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६७॥

उपाध्याय गुरु-भक्ति विनय कर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
बहुश्रुतभक्ति करें हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥
ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥६८॥

धर्म प्रकाशक शास्त्र समझ कर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
प्रवचनभक्ति करें हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं....॥६९॥

यथाकाल छह आवश्यक कर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
आवश्यक धारें हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥
ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणि-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७०॥

प्रभावना जिनशासन की कर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
प्रभावना मय हों हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥
ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७१॥

धर्मी से गौ वत्स प्रीति कर, बने शान्तिप्रभु त्रय-पद धरकर।
प्रवचन-प्रेम करें हम स्वामी, अतः शान्तिप्रभु को प्रणमामि॥
ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्व-भावनाभूषित श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७२॥

आत्मा की सेंतालीस (४७) शक्तियाँ

(जोगीरासा)

जिससे जीव रहेगा था है, कोई मार न पाए।
आत्मशक्ति **जीवत्व** उसे ही, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
जन्म मरण का भय दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥
ॐ ह्रीं अल्पमृत्यु-अयोग्य-मरणभय-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७३॥

जिससे आतम जड़-पुद्गल में, कभी बदल ना पाए।
आत्मशक्ति **चितिशक्ति** उसे ही, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
कष्ट चार गतियों के हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥
ॐ ह्रीं चतुर्गति-भयवेदना-शान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७४॥

अनाकार सामान्य ज्ञेय की, सत्ता जो झलकाए।
आत्मशक्ति **दृशिशक्ति** उसे ही, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
निज-परकृत संक्लेश हरण को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं शासन-प्रशासन-सत्तावेदना-शान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७५॥

जो विशेष साकार ज्ञान गुण, ज्ञेय वस्तु बतलाए।
आत्मशक्ति उस **ज्ञानशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
मिथ्या प्रचार ज्ञान का हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं परनिन्दाज्ञान-दुरुपयोग-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७६॥

रहा अनाकुल लक्षण जिसका, आत्मिक सुख उपजाए।
आत्मशक्ति **सुखशक्ति** उसे ही, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
जीवों के दुख दर्द हरण को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं विश्व-वैरदुःख-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७७॥

अपने स्वरूप की रचना में, ज्ञान दर्श सुख लाए।
आत्मशक्ति उस **वीर्यशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
वज्र समान धैर्य साध्य को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं शक्तिदुष्प्रभाव-शान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७८॥

जो अखण्ड प्रताप स्वतंत्रता, दे महिमा बढ़वाए।
आत्मशक्ति **प्रभुत्वशक्ति** वह, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
दीन हीन वैधव्य हरण को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं दीन-हीन-दारिद्रय-वैधव्य-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥७९॥

एक रूप पर सर्व भाव में, जो व्यापक दिख जाए।
आत्मशक्ति उस **विभुत्वशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
पारिवारिक विघटन हरने को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं पारिवारिक-विघटन-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८०॥

सकल विश्व सामान्य रूप जो, निज परणति दर्शाए।
सर्वदर्शित्व उस आत्मशक्ति को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
पारिवारिक वैर हरण को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं पारिवारिक-वैर-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८१॥

लोकालोक विशेष रूप जो, निज परणति बतलाए।
वो **सर्वज्ञत्वशक्ति** उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
बुद्धिमंदता के दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं बुद्धि-मंदता-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८२॥

रूप अमूर्तिक होकर सब जग, दर्पण सम झलकाए।
वही **स्वच्छत्वशक्ति** उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
आत्ममैल काला-मुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं आत्ममैल-मुखमैल-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८३॥

स्वयं प्रकाशित विशद विमल जो, स्वानुभव करवाए।
वही **प्रकाशशक्ति** उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
दुष्ट परिग्रह-ग्रह दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं परिग्रह-ग्रह-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८४॥

फैले सिकुड़े आत्म-देश पर, चित्-विलास सब पाए।
असंकुचित **विकासशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
शत्रु विरोधी प्रभाव हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं शत्रु-विरोधी-दुष्प्रभावशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८५॥

आतम को कोई न बनाता, आतम कुछ न बनाए।
उस **अकार्य-कारणत्वशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
लक्ष्य विरोधी प्रभाव हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं लक्ष्य-विरोधी-दुष्प्रभावशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८६॥

निज-आतम निज-पर को जाने, जाने हमें पराए।
परिणाम्य-पारिणामकत्वशक्ति को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
सदोष चारित्र प्रभाव हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं सदोष-चारित्र-दुष्प्रभावशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८७॥

जो ना कम हो नहीं अधिक हो, नियतरूप अपनाए।
त्यागोपादान-शून्यत्वशक्ति को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
लेन-देन की बाधा हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं हीनाधिकता-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८८॥

षट्-गुणी वृद्धि-हानि रूप जो, सदा प्रतिष्ठा पाए।
अगुरु-लघुत्वशक्ति उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
मान-प्रतिष्ठा का भय हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं मानप्रतिष्ठा-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥८९॥

क्रम-अक्रम के रूप परिणमन, फिर भी नश ना पाए।
उत्पाद-व्यय-ध्रुवत्वशक्ति को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
पद स्थानान्तरण हरने को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं पदस्थान-स्थानान्तरण-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९०॥

विरुद्ध और अविरुद्ध भाव भी, द्रव्यों में रह जाएँ।
आत्मशक्ति **परिणामशक्ति** वो, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
बन्धु वर्ग टकरार हरण को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं कुटुम्ब-अकुटुम्ब-कलह-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९१॥

कर्मबंध से रहित अमूर्तिक, व्यक्त सहज हो जाए।
वो **अमूर्तत्त्वशक्ति** उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
जेल शृंखला बंधन हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं जेल-शृङ्खला-बन्धन-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९२॥

ज्ञान भाव बिन सब कर्मों का, कर्त्ता जो न कहाए।
वो **अकर्तृत्वशक्ति** उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
तन्त्र-मन्त्र जादू-टोना हर, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं तन्त्र-मन्त्र-छलछिद्र-दृष्टिमुष्टि-परविद्या-वेदनाशान्त्यर्थं श्रीशान्ति-नाथाय अर्घ्यं...॥९३॥

ज्ञान-भाव बिन सब कर्मों का, भोक्ता जो न कहाए।
वो **भोक्तृत्वशक्ति** उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
राग-भोग आदिक विकार हर, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं रागभोग-वासना-शान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९४॥

कर्म रहित आतम प्रदेश सब, हिल-डुल-चल ना पाएँ।
वो **निष्क्रियत्वशक्ति** उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
मन वच तन के विकार हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं मन-वचन-काय-विकारवेदना-शान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९५॥

चरम देह से फैलन सिकुड़न आत्म न्यून शिव पाए।
उस **नियत-प्रदेशत्वशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
हरने दुख निज-वास्तु दोष को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं निज-वास्तु-दोष-वेदना-शान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९६॥

सब पर्यायों में रह चेतन, उन मय हो ना पाए।
स्वधर्म-व्यापकत्वशक्ति वह, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
विभाव धर्म-शक्ति दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं परमत-विभाव-वेदना-शान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९७॥

समान मिश्र असमान त्रिविध जो, स्व-पर धर्म धर पाए।
उस **साधारण** आदि शक्ति को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
नारि नपुंसक नर दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं स्त्री-पुरुष-नपुंसक-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥९८॥

भिन्न लक्षणों के अनन्त गुण, एक-मेक रह जाएँ।
अनन्त-धर्मत्वशक्ति उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
जाति भेद की कटुता हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं जातिभेद-कटुता-वेदनाशान्त्यर्थं श्रीशान्ति-नाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥९९॥

अतद्रूप तद्रूप शत्रुगण, हिल मिल साथ निभाएँ।
विरुद्ध-धर्मत्वशक्ति उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
आपस के मन-मुटाव हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं मनभेद-कलुषता-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१००॥

जो जैसा है उस सा होना, उससे डिग ना पाए।
आत्मशक्ति उस **तत्त्वशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
हरने मत मतान्तरों का दुख, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं मत-मतान्तर-विखराव-युद्ध-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०१॥

निज गुण तज पर सम ना होना, संकर दोष नशाएँ।
आत्मशक्ति वो **अतत्त्वशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
बोल-चाल की पीड़ा हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं कुशील-व्यसन-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०२॥

बहु पर्यायी होकर भी जो, एकत्व न तज पाए।
आत्मशक्ति **एकत्वशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
निज एकल परिवार कष्ट हर, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं निज-एकल-परिवार-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०३॥

एक द्रव्य होकर भी आतम, बहु पर्यायें पाए।
आत्मशक्ति **अनेकत्व** उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
चउ-पुरुषार्थ सिद्धि दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।

शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-पुरुषार्थ-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०४॥

वर्तमान की दशा सहित जो, आतम को ठहराए।
आत्मशक्ति उस **भावशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
कैंसर आदिक के दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं कैन्सर-क्षयरोग-हृदयाघात-आदिक-वेदनाशान्त्यर्थं श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०५॥

वर्तमान की दशा छोड़कर, अन्य दशा ना भाए।
आत्मशक्ति वो **अभावशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
परीक्षा की बेचैनी हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं परीक्षाभय-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०६॥

जो पर्याय आज की कल वह, निश्चित ही नश जाए।
उस ही **भाव-अभावशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
नष्ट वस्तु की चिन्ता हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं नष्टवस्तुचिन्ता-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०७॥

पूर्व न थीं पर अगले पल जो, उदय हुईं पर्यायें।
उस ही **अभाव-भावशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
गाड़ी वाहन दुर्घटना हर, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं रेलयान-वाहनादि-दुर्घटना-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०८॥

जो होने लायक पर्यायें, होने को हो जाएँ।
आत्मशक्ति उस **भाव-भाव** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
जिन गुरु आज्ञा पालन करने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं आज्ञा-उल्लंघन-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१०९॥

होने योग न जो पर्यायें, कभी न होने पाएँ।
अभाव-अभावशक्ति उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
गुरु सान्निध्य सदा ही पाने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं आश्रय-अभाव-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११०॥

हर कारक की क्रिया रहित जो, भवन मात्र रह जाए।
आत्मशक्ति उस **भावशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
गुरु वियोग वेदना हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं गुरु-वियोग-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१११॥

षट्कारक अनुसार क्रिया जो, भावमयी करवाए।
आत्मशक्ति उस **क्रियाशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
गुरु चरणों में समाधि करने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं समाधि-अभाव-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११२॥

पाने योग्य सिद्धरूपी जो, निर्मल भाव दिलाए।
आत्मशक्ति उस **कर्मशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
सद् आज्ञाकारी सुत बनने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं संतान-अभाव-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११३॥

होने रूप सिद्ध भावों को, करना जो सिखलाए।
वो **कर्त्तृत्वशक्ति** उसको भी, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
मुक्तिवधू से विवाह करने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं कुविवाह-बालविवाह-अविवाह-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११४॥

होने वाले भावों में जो, साधकतम बन जाए।
आत्मशक्ति उस **करणशक्ति** को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
कल्पवृक्ष मणि कामधेनु सम, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं वांछितफल-अभाव-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११५॥

भाव स्वयं के हुए स्वयं को, पर क्या दे क्या पाए।
वो **सम्प्रदानशक्ति** उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
दीक्षा-विद्या, गुरु से पाने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं अयोग्यकुल-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११६॥

जिससे व्यय उत्पाद हुए पर, कभी न नशने पाए।
वो **अपादानशक्ति** उसी को, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
पाण्डुकशिला पर न्हवन प्राप्ति को,आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं स्नानवेदना-शान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११७॥

होने योग्य आत्म भावों को, जो आधार दिलाए।
वो **अधिकरणशक्ति** उसको, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
मात-पिता गुरु की सेवा को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं मातृ-पितृ-गुरु-वेदनाशान्त्यर्थं श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥११८॥

अपना स्वभाव बस अपना जो, चिदानन्द दिलवाए।
वो **संबंधशक्ति** उसे ही, शान्तिप्रभु प्रकटाए॥
इष्ट-वियोग अनिष्ट-योग हर, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं इष्ट-वियोग-अनिष्टसंयोगरूप-परसम्बन्ध-वेदनाशान्त्यर्थं श्रीशान्ति-नाथाय अर्घ्यं...॥११९॥

(वसन्ततिलका)

जो कामदेव फिर चक्र धरे जिनेशा।
प्राणी त्रिधा चरण याद करें हमेशा॥
है नाम मात्र जिनका दुख विघ्नहारी।
हे! शान्तिनाथ भगवन्, जय हो तुम्हारी॥

ॐ ह्रीं कामदेव-चक्री-तीर्थंकर-त्रयपदधारी-अतिशयकारी वातपित्तकफादि देहविकार-विनाशक श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...॥१२०॥

पूर्णार्घ्यं

(हरिगीतिका)

पूर्ण एक सौ बीस अर्घ्य ले, शान्तिप्रभु हम पूजें।
विश्वशान्ति अध्यात्म प्राप्ति को, शान्तिप्रभु ना दूजे॥
निज सम निज को बनने हे जिन! आत्मशक्ति दो स्वामी।
शान्तिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥
मेरा तुम्हारा और सबका, हो सदा शुभ मंगलं।
हे! शान्तिनाथ जिनेन्द्र कर दो, मंगलं शुभ मंगलं॥

ॐ ह्रीं शतैकविंशति-गुण सहित सर्वविघ्न-शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः। (अथवा)
ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

विघ्न हरण मंगलकरण, शान्तिनाथ भगवान्।
जिनकी पूजन से मिले, वीतराग विज्ञान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शान्ति प्रभो की, जय-जय अतिशयकारी की।
जय हो! जय हो! दया सिन्धु की, जय-जय मंगलकारी की॥
वीतराग - सर्वज्ञ - हितैषी, महिमा खूब तुम्हारी है।
सबके दिल पर छाए रहते, अजब-गजब बलिहारी है॥१॥
पिछले भव में रहे मेघरथ, राज-पाठ जिनने छोड़ा।
मुनि बन तीर्थंकरप्रकृति का, नामकर्म बन्धन जोड़ा॥
फिर प्रायोपगमन धारण कर, कर संन्यासमरण उत्तम।
काया तज अहमिन्द्र बने फिर, हस्तिनागपुर लिया जनम॥२॥
विश्वसेन नृप ऐरा रानी, तुमको पाकर धन्य हुए।
गर्भ जन्म कल्याणक करके, सारे भक्त प्रसन्न हुए॥
शंख सिंह भेरी घण्टा से, जन्म सूचना पाकर के।
चार निकायों के देवों ने, पर्व मनाया आकर के॥३॥
गर्भ-भवन में शचि-इन्द्राणी, जाकर के माँ बालक को।
सुला दिया माया-निद्रा से, उठा लिया जिन-बालक को॥
सौंप दिया सौधर्म इन्द्र को, इन्द्र चले ऐरावत से।
सुमेरु पर जन्माभिषेक कर, नाम शान्तिनाथ रक्खे॥४॥
चक्र शंख सूरज चंदादिक, चिह्न सुनहरे थे तन में।
होकर कामदेव बारहवें, किन्तु रहे निज चेतन में॥
कुमारकाल बीत जाने पर, विश्वसेन निज राज्य दिए।

चौदह रत्न और नौ निधियाँ, प्रकट हुए जो भोग लिए॥ ५॥
शान्ति चक्रवर्ती ने इक दिन, दर्पण में दो मुख देखे।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तो, क्षणभंगुर वैभव फैंके॥
ज्यों घर तजने का सोचे तो, लौकान्तिक अनुमोदन पा।
राज्य दिया नारायण सुत को, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ॥ ६॥
तब सर्वार्थसिद्धि पालकी, से गृह तजने यतन किए।
सहस्त्र आम्रवन में दीक्षा ले, पंचमुष्ठि केशलौंच किए॥
शान्तिनाथ जब बने दिगम्बर, धरती अम्बर गूँज पड़े।
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तो, भक्ति पुण्य सब लूट चले॥७॥
मन्दिरपुर में सुमित्र राजा, दीक्षा का आहार दिए।
पंचाश्चर्य पुण्य पाया तो, सब ने जय-जयकार किए॥
सोलह वय छद्मस्थ बिता के, बने केवली शान्तीश्वर।
समवसरण फिर हुआ सुशोभित, थे छत्तीस पूज्य गणधर॥ ८॥
मासिक योगनिरोध धारकर, श्री सम्मेदशिखर पर जा।
शुक्लध्यान से कर्म नशाकर, सिद्ध मोक्ष में बने अहा॥
जो श्रीषेण हुए राजा फिर, भोगभूमि में आर्य हुए।
देव हुए फिर विद्याधर जो, देव हुए बलभद्र हुए॥९॥
देव हुए वज्रायुध चक्री, फिर अहमिन्द्र मेघरथ बन।
मुनि सर्वार्थसिद्धि पहुँचे फिर, तीर्थंकर शान्ति भगवन्॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् के, बारह-बारह भव सुन्दर।
शान्तिनाथ सा अन्य कौन जो, धर्म धुरंधर तीर्थंकर॥१०॥
कामदेव ने जन्म धारकर, जीती सब सुन्दरताएँ।
शान्तिनाथ ने चक्री बनकर, जय की सभी सम्पदाएँ॥
तीर्थंकर बन शान्तिनाथ ने, पाया मोक्ष कर्म कर क्षय।

कामदेव चक्री तीर्थंकर, शान्तिप्रभु की बोलो जय॥११॥
कालचक्र वश लुप्त धर्म को, वृषभ आदि प्रभु दिखलाए।
फिर भी प्रसिद्ध अवधि अंत तक, बोलो कौन चला पाए?
किन्तु बाद में शान्तिप्रभु से, मोक्षमार्ग जो प्रकट हुआ।
अपनी निश्चित अवधिकाल तक, बिन बाधा के प्राप्त हुआ॥१२॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् का, ध्यान निरन्तर धारो तो।
होगा भला शान्ति भी होगी, बुध ग्रह में मत बाँधो तो॥
आज आद्य गुरु शान्तिनाथ का, चमत्कार कुछ अलग दिखे।
खण्ड-खण्ड सौभाग्य पिण्ड भी, 'सुव्रत' पुण्य अखण्ड दिखे॥१३॥

(सोरठा)

हिरण चिह्न पहचान, शान्तिनाथ प्रभु नाम है।
त्रयपद मय भगवान्, बारम्बार प्रणाम है॥
पुण्य खरीदा आज, भक्ति मूल्य का दाम दें।
शान्तिनाथ जिनराज, स्वर्ग मोक्ष सुख धाम दें॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्तिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शान्तिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

॥ इति श्री शान्तिनाथविधान सम्पूर्णम्॥

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिंब आलय, हम भजें त्रय लोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजतेएकरके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववंदना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवंदना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः।

पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुण्डलपुर-पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-आदि अतिशय-क्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिन-समूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे - भरतक्षेत्रे - आर्यखण्डे - भारतदेशे मध्यप्रदेशे-...जिलान्तर्गते..मासोत्तममासे..मासे..पक्षे...तिथौ..वासरे..मुनि-आर्यिकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं...।

शांतिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

अपने उर में बह उठे, विश्व शांति की धार।
कर्मों के ग्रह शांति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तिधारा...)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रंथ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शांति आत्म शांति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हो रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिए, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

===

१. श्री शान्तिनाथजी—आरती

(छूम छूम छना ननना...)

छूम छूम छना ननना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
विश्वसेन के राज दुलारे, ऐरा माँ के नयन सितारे।-२
हस्तिनापुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
चौबीसी में सबसे न्यारे, शान्तिनाथ भगवान हमारे।-२
हैं प्राणों से प्यारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
कामदेव चक्री तीर्थंकर, वीतराग सर्वज्ञ हितंकर।-२
विश्वशान्ति के सहारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
धर्मधार को आप बहाते, कर्मों के ग्रह रोग नशाते।-२
शान्तिधारा वाले, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
आत्मशान्ति के हम अभिलाषी, विद्या गुरु के हम विश्वासी।२
'सु-व्रत' के प्रत्याशी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

गुरु ने मुझे
प्रकट कर दिया
दीया दे दिया

२. श्री शान्तिनाथजी—आरती

(लय : विद्यासागर की गुण...)

शान्तीश्वर की, परमेश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय हो,
हम आज उतारें आरतिया॥
विश्वसेन ऐरादेवी के गर्भ विषें प्रभु आये।
हस्तिनागपुर जन्म लिया था, सब जन मंगल गाये,
प्रभुजी, सब जन मंगल गाये।
तीर्थंकर की, क्षेमंकर की, शुभ मंगल दीप प्रजाल हो,
हम आज उतारें आरतिया॥ १॥
तीन-तीन पदवी के धारी, लोकालोक निहारी।
धर्मधार को पुनः बहाकर, सुखी किए संसारी,
प्रभुजी, सुखी किए संसारी।
जगस्वामी की, शिवधामी की, हो बार-बार गुण गायके,
हम आज उतारें आरतिया॥ २॥
दर्शन करके अतिशय सुनके, जीवन सफल बनायें।
भक्तिभाव से आरती करके, पुण्य शान्ति हम पाएँ,
प्रभुजी, पुण्य शान्ति हम पाएँ।
शुभकारी की, अघहारी की, धर 'सुव्रत' शीश झुकाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥ ३॥
शान्तिश्वर की .....॥

===

३. श्री शान्तिनाथजी—आरती

ओम् जय शान्तिनाथ देवा, जय शान्तिनाथ देवा।
करके नमोऽस्तु आरति, भक्त करें सेवा॥
ओम् जय...।
कामदेव चक्रेश्वर, तीर्थंकर ज्ञानी- स्वामी....
तीन तीन पद धारी, कल्याणक स्वामी॥
ओम् जय...।
मोक्षमार्ग के नेता, दुख संकट हर्ता- स्वामी....
आत्म शान्ति के भोक्ता, विश्वशान्ति कर्ता॥
ओम् जय...।
दुख कर्मों का क्षय हो, बोधि लाभ पाएँ- स्वामी...
मरण समाधि करके, जिन गुण धन पाऐं॥
ओम् जय...।
हम तो करते वंदन, जिनवर स्वीकारो- स्वामी...
हर कर विघ्न अशान्ति, 'सुव्रत' को तारो॥
ओम् जय...।

===

संघर्ष में भी
चंदन सम सदा
सुगन्धि बाटूँ

भजन

शान्तिप्रभु मेरे जीवन की नाँव।
हे प्रभु! नैया पार लगा दो[२], दो चरणों की छाँव।
टूटी फूटी मेरी नैया, तुम बिन कौन खिवैया।
भोग व्यसन के तूफानों में, कोई नहीं बचैया॥
अब तो मुझको दे दो सहारा[२], दुखने लागे पाँव।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥ १॥

मिथ्या की आँधी से यह नैया, उल्टी दिशा में जाए।
विषय-कषायों की भँवरों में, डोले व टकराए॥
प्रभु! नाजुक पतवार सँभालो[२], दे दो किनारा गाँव।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥ २॥

बुरे-विचारों की लहरों ने, नैया की कमजोर।
राग-द्वेष वाले ज्वार-भाटों का, चंदा करता शोर॥
आसक्ति के खारे जल में[२], मेरा बचा लो बहाव।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥ ३॥

भूत पिशाचों के मच्छों ने, नैया की बेहाल।
लेकिन नाम तुम्हारा जप के, होती मालामाल॥
अन्तर बाहर भर दो शान्ति[२], दो निज रूप स्वभाव।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥ ४॥

सारी दुनियाँ शान्ति खोजे, राजा रंक फकीर।
जिसको भी तुम मिलते उसकी, सजती है तकदीर॥
'सुव्रत' के मन मन्दिर में आओ[२], ढलने लगी अब साँझ।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥ ५॥

===